वैज्ञानिक चिंतन की आवाज़
तर्कशील पथ
TARKSHEEL
मार्च 2020
₹20
अंदर पढ़ें
महिला सम्मान के लिए संघर्ष (8)
शहीद भगत सिंह के विचार (30)
विज्ञान और मानव समाज (14)
हो सकते बलात्कार खत्म (32)
बोल के लभ आजाद हैं तेरे, बोल जुबां अब तक तेरी है ...फैज अहमद फैज

पूछते हैं बच्चे!

वीरेंदर भाटिया

मैं सुबह-सुबह
बच्चों से अखबार छिपा लेना चाहता हूं
और टीचर कहती हैं
न्यूज लिख कर लाओ
न्यूज लिखते वक्त पूछते हैं बच्चे
क्यों जलाया प्रोफेसर लड़की को
निर्भया कौन थी
यह ब्लात्कार क्या होता है
कौन थी सोनी सोरी
योनि में पत्थर क्यों भरे उसके
जामिया की लड़कियों को
क्यो पीट रही है पुलिस
ये प्राइवेट पार्ट का क्या मतलब है पापा
मैं बच्चों को
कोमल अंगों की कोमलता के साथ
बड़ा करना चाहता हूं
समाचार हैं कि
हमारी चेतनाओं से
कोमलता छीन रहे हैं
मैं अखबार हटा देना चाहता हूं
सोचता हूँ फिर
कि कठोर जीवन मे
कोमलता का कोई मूल्य है क्या?
बच्चे न्यूज लिख रहे होते हैं
और मैं व्यस्त होने का दिखावा करता हूं
कि बच्चे क्रूर सवाल न पूछें।

तर्कशील पथ पत्रिका हेतु शुल्क स्टेट बैंक ऑफ इडिया, शाखा मॉडल टाऊन, अम्बाला शहर (हरियाणा) में रैशनलिस्ट सोसायटी हरियाणा के नाम से खाता सं. 30191855465 IFSC: SBIN 0002420 में जमा करा सकते है। शुल्क Paytm के माध्यम से मोबाईल नम्बर 9416036203 पर या कोड को स्कैन करके भी भेजा जा सकता है। शुल्क भेजने के बाद इसी मोबाइल नम्बर पर अपना पता SMS या WhatsApp करें।

Reg.No.HARHIN/2014/60580

संपादक : बलवन्त सिंह - 94163-24802

संपादक सहयोग :-

गुरमीत अम्बाला - 94160-36203

बलबीर चन्द लौंगोवाल - 98153-17028

हेम राज स्टेनो - 98769-53561

पत्रिका शुल्क :-

द्विवार्षिक : 200/- रू.

विदेश : वार्षिक : 25 यू.एस.डॉलर

पत्रिका वितरण :

गुरमीत अम्बाला

Email: tarksheeleditor@gmail.com

रचनाएं, पत्र व्यवहार व शुल्क भेजने के लिए पताः

बलवन्त सिंह (प्रा.)

म.नं. 1062, आदर्श नगर,

नजदीक पूजा सीनियर सैकण्डरी स्कूल, पिपली।

जिला कुरूक्षेत्र - 136131 (हरियाणा)

Email: tarksheeleditor@gmail.com

तर्कशील सोसायटी की गतिविधियों से जुड़ने के लिए

www.facebook.com/tarksheelindia

पेज को लाईक करें।

पत्रिका के प्रमुख लेखों को निम्न ब्लॉग पर भी पढ़ा जा सकता है-

http://tarksheelblog.wordpress.com

पत्रिका को पढ़ने के लिए लॉग ऑन करें:

www.tarksheel.org

Tarksheel on Whatsapp : 9416036203

Tarksheel Mobile App :

Readwhere.com

Tarksheel on Twitter:

@gurmeeteditor

टाईप सैटिंग और डिज़ाइनिंग:

दोआबा कम्यूनिकेशंस

मोबाईल : 92530 64969

Email: baldevmehrok@gmail.com

संकेतिका

मीटिंग की सूचना

तर्कशील सोसायटी हरियाणा की आगामी द्विमासिक मीटिंग, दिनांक **17 मई, 2020** को दिन रविवार, प्रातः 10.00 से 3.00 बजे तक रतिया (जिला फतेहाबाद) में होगी।

नोटः तिथि, स्थान व समय के बारे में सभी साथी फोन संपर्क करके सुनिश्चित कर लें।

सम्पर्क सूत्रः

प्रेम रतियाः 94166 41490

राम चन्द्र जलंधराः 9255959076

नोट : किसी भी तरह की कानूनी कारवाई सिर्फ जगाधरी यमुनानगर (हरियाणा) की अदालत में ही हो सकेगी।

सम्पादकीय

8 मार्च का दिन अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के रूप में पूरे विश्व में मनाया जाता है। इस दिन जन विरोधी व्यवस्था की ओर से महिलाओं का झूठा गुणगान करने के साथ-साथ महिला मुक्ति की मिथ्या डींगें मारी जाती हैं। जबकि हकीकत यह है कि आज भी औरतों का बड़ा हिस्सा समाज में हाशिये से बाहर धकेला हुआ है, पुरुष से समानता की बात तो कहीं दूर रही। यदि महिलाओं का कुछ हिस्सा आगे बढ़ा है तो वह अपनी जागरुकता और समाज के रोशन हिस्से के सहयोग के साथ बढ़ा। वर्तमान भारतीय व्यवस्था की ओर से लाये जा रहे जन विरोधी कानूनों के खिलाफ कालेजों, विश्वविद्यालयों के विद्यार्थियों का आगे बढ़ कर संघर्ष करना, जिनमें बड़े स्तर पर लड़कियां भी शामिल हैं, अंधेरे में रोशनी बन कर उभरा है। महिला दिवस के अवसर पर सलाम है उन बहादूर बच्चियों को, समूची नौजवानी को। समाज के भविष्य के इस रोशन -क्षितिज के साथ-साथ इन दिनों सत्ता के पालतू साधु, स्वामियों की महिलाओं से संबंधित आई कुछ अखबारी टिप्पणियां भी विशेष ध्यानाकर्षण की मांग करती हैं, जिन को पढ़ कर हमारा सिर शर्म से झुक जाता है। महिलाओं की निजता पर किया हुआ यह प्रहार बकायदा हिन्दुत्व सियासत का एक सोचा समझा हुआ एजेंडा है।

गुजरात के एक धार्मिक नेता 'स्वामी' कृष्ण स्वरूप दास ने टिप्पणी की है कि 'माहवारी के दौरान अपने पतियों के लिए भोजन तैयार करने वाली महिलाएं अपने अगले जन्म में कुतिया के रूप जन्म लेंगी जबकि यह भोजन खाने वाले पुरुष अगले जन्म में बैल बनेंगे।' उसने दावा किया कि यह सब कुछ हमारे धाार्मिक शास्त्रों में लिखा हुआ है। यह तथाकथित स्वामी भुज में एक कालेज चलाता है। यह स्वामी नारायण मंदिर के साथ जुड़ा हुआ है तथा स्वामी नारायण संप्रदाय के 'नर-नारायण देगाड़ी' से संबंधित है। इस के कालेज के प्रिंसीपल तथा महिला स्टाफ ने 11 फरवरी को 60 लड़कियों को कथित तौर पर अपने अंतःवस्त्र उतारने के लिए मजबूर किया था ताकि उनकी माहवारी के बारे में पता लगाया जा सके। एक अन्य मराठी कीर्तनकार इंदूरीकर महाराज कहता है 'सम' और 'विषम' तिथियों को संभोग करने वाले जोड़ों के घर क्रमवार लड़का और लड़की पैदा होते हैं।' उसकी यह टिप्पणी सीधी पीसीपी एंड डी टी एक्ट के अंतर्गत कानून विरोधी है। इस प्रकार के बयान साधारण नहीं हैं, बल्कि योजनाबद्ध हैं। मनुस्मृति महिलाओं, दलितों, आदि के खिलाफ इस प्रकार की गैर-मानवीय टिप्पणियों के साथ भरी पड़ी है। यह सारे व्यवहार को हम वैज्ञानिक सूझ के साथ ही समझ सकते हैं। इस प्रकार की टिप्पणियां हमें समाचार पत्रों में हर नये दिन दिखाई देती हैं। महिला विरोधी इन बयानों की हमें केवल निंदा ही नहीं, बल्कि जिस सियासत के अंतर्गत यह सब कुछ चल रहा है, उस बारे में लोगों को जागरुक करके संघर्षरत करने की आवश्यकता है।

भौतिकी के पड़ाव

–वेदप्रिय

आप साहित्य में कोई रहस्य कथा पढ़ते हैं। पढ़ते–पढ़ते आप इसके रहस्यों के बारे में अनुमान लगाते हैं। कभी–कभी यह कहानी रोचक मोड़ों पर गुज़रती है। कभी–कभी अनुमान सही भी नहीं उतरते। परंतु कथा का अन्त होते–होते रहस्य प्रायः स्पष्ट हो जाता है। कथा यहीं समाप्त हो जाती है। विज्ञान की कथा भी इसी प्रकार एक लम्बी रहस्य कथा है। मनुष्य इसे शुरू से पढ़ रहा है। मनुष्य ने भी इसके रहस्यों को जानने की कोशिश की है। रहस्य लगातार उद्घाटित भी हुए हैं। कई बार अनुमान गलत भी निकले हैं। परंतु इस कथा में कई अनूठी बातें हैं। एक अनूठापन तो यह है कि यह एक अन्तहीन कथा है। अब तक जितने भी रहस्यों का पता चला है, वे अधूरे सत्य ही सिद्ध हुए हैं । परंतु रहस्यों को जानने का एक विश्वास जरूर बना है। इसक रहस्यों की जो भी जानकारियां मिलती गई हैं, वे पिछली जानकारियों से अधिक दुरुस्त पाई गई है। इसी विश्वास का नाम 'विज्ञान' है। इसके रहस्य जाने जा सकते हैं और जाने जा रहे हैं, यह विश्वास हर बार प्रबल हुआ है। इस कथा की विविधताएं, घटनाओं के अन्तर्संबन्ध अत्यधिक जटिल हैं। इस कथा की एक विशेषता यह भी है कि जो कुछ भी पता चलता जाता है, वह अपना होता जाता है और आने वाले रहस्यों को ढूंढने में सूत्रधार की भूमिका निभाता है। इस कथा का सबसे अनूठापन यह है कि किसी कथाकार ने इस कथा की रचना नहीं की है और न ही कोई अंतिम रहस्य बना कर सुरक्षित रखा है। इसके रहस्यों को जानना, ठीक–गलत का निर्णय करना और आगे बढ़ना मनुष्य द्वारा किए जाने वाला विज्ञान का कार्य है।

आरम्भ में जब मनुष्य ने इस कथा को पढ़ना शुरू किया तो इसकी भाषा कठिन लगी। बहुत देर बाद यह समझ में आनी शुरू हुई है। आइए, भौतिकी के संदर्भ में इस कथा के कुछ ठोस अंशों को देखें। हम गति का उदाहरण लेते हैं। हम अपने सहज ज्ञान एवं व्यवहारिकता में देखते हैं कि बल लगाने से किसी पिण्ड की गति प्रभावित हो जाती है। सर्व प्रथम यह धारणा अरस्तु ने दी थी। कई बार अधूरी बात या गलत धारणाएं हमें गलत अनुमानों और परिणामों की ओर ले जाती हैं। अरस्तु का कथन था–'जब धकेलने वाला बल इतना जोर नहीं लगा पाता कि पिण्ड को धकेला जा सके तब गतिशील पिण्ड स्थिर हो जाता है'। कभी–कभी कठिनाई ये भी होती है कि जब कोई अत्यधिक प्रभावी व्यक्ति किसी रहस्य का समाधान सुझाता है तो हम जल्दी ही उस पर अविश्वास नहीं करते। लेकिन जब यह विश्वास टूटता है, तब तक हम दूर निकल चुके होते हैं। विज्ञान की इस कथा में 'गति' के साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ। अरस्तु को ज्ञान का पिता कहा जाता था। उसे यांत्रिकी का रचयिता माना जाता था। न केवल उस समय अपितु बहुत लम्बे समय तक भी उसके एक–एक कहे हुए वाक्य पर शक नहीं किया जा सकता था। लगभग 1500 वर्षो तक अरस्तु पर कोई प्रश्न नहीं उठा। यदि कहीं कोई छुटपुट प्रयास हुआ भी तो अरस्तु जैसे महामानव की विकरालता देख कर चुप हो जाना पड़ा।

विज्ञान के इतिहास की कथा का यह दौर अधिक उपलब्धियों का नहीं रहा। फिर एक नायक उभरा। उसने अरस्तु को ललकारा। उसने कहा कि तत्कालिक निरीक्षण पर आधारित महज सहज बुद्धि द्वारा प्राप्त किए हुए परिणाम हमेशा ठीक ही हों, यह जरूरी नहीं। यह महानायक था–गेलिलियो। लेकिन पहले हम देखें तो सही कि गति की इस बात में हमारे सहज ज्ञान में कहां कमी रह गई। इसके लिए हमें तथ्यों की कुछ गहराई में जाना पड़ेगा। मान लो कोई व्यक्ति समतल सड़क पर एक गाड़ी धकेल रहा है। वह गाड़ी धकेलना बंदकर देता है। गाड़ी कुछ दूर चल कर रुक जाती है। यदि सड़क का तल चिकना कर दें और गाड़ी के पहियों में घर्षण कम कर दें तो गाड़ी पहले की तुलना में कुछ अधिक दूर जा कर रुकेगी। यदि एक क्षण के लिए (काल्पनिक स्थिति) ऐसा मान लिया जाए कि अवरोध डालने वाले सभी घटक हटा लिए गए हैं, तो गाड़ी कभी नहीं रुकेगी। यहीं से एक नई यांत्रिकी का जन्म होता है। हमें एक नया सूत्र मिलता है। यह नया सूत्र अरस्तु के सूत्र से

भिन्न है। अरस्तु कहता है कि किसी पिण्ड में वेग बाहरी बल का परिणाम है। अर्थात वेग ही यह निर्धारित करता है कि बाहरी बल कितना लग रहा है। गेलिलियो का नया सूत्र कहता है कि बाहरी बल न लगने की दशा में भी पिण्ड में गति एक समान बनी रहती है। न्यूटन ने इसे ही जड़त्व का नियम कहा था। इस प्रकार हमने देखा कि अवलोकनों की बारीकी में जाकर निकाले गए निष्कर्ष अपेक्षाकृत अधिक ठीक होते हैं। प्रश्न उठाना हमें सत्य के ज्यादा निकट ले जाता है। दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि बहुत बार आदर्श प्रयोग सम्भव न होने की दशा में 'कल्पनात्मक चिंतन' का भी सहारा लिया जाता है। गेलिलियो से पूर्व लगभग 1500 वर्षों में सामाजिक परिस्थितियों में भी काफी हद तक जड़ता बनी हुई थी। सामाजिक प्रक्रियाएं ठहरी-ठहरी सी थीं। कॉपरनिकस ने पहली बार ब्रह्माण्ड के एक वैकल्पिक मॉडल का विचार दिया था। जिसने समाज में भी एक नई चिंतन पराम्परा को गति दी। एक बात तो है ही कि मानव चिंतन दुनिया व समाज के बारे में हमेशा नवीनतम चित्र प्रस्तुत करता रहा है। दूसरी यह कि ज्ञान-विज्ञान परम्परा में कोई शिखर पुरुष (गॉड फादर) नहीं होता।

अरस्तु ने अपने चिंतन में यह स्वीकार किया है कि उस सम तक के ज्ञात तथ्यों के द्वारा इस विश्व की पूर्ण व्याख्या संभव नहीं है। इसी से अधिभूतवाद (Metaphysics) की अवधारणा पनपी। बहुत बाद में कॉपरनिक्स द्वारा इस भौतिक विश्व की वैकल्पिक (सूर्य केन्द्रिक विश्व) बात सामने आई। गैलिलियो ने अपने अवलोकनों में गहराइयां डालीं और अपनी प्रस्तुति के समर्थन में प्रयोगों की अहमियत को रेखांकित किया। इसी परम्परा में टाइको ब्राहे, केपलर तथा न्यूटन ने इस मॉडल की गतिमयता का समझााया। अरस्तु के बाद यही एक प्रमुख दौर था जब इन्हीं खोजों से प्रेरित होकर समाज की अंतःक्रियाओं में कुछ हलचल हुई। यह सवाल उठने लगा कि जब भौतिक विश्व की वैकल्पिक व्याख्या आ सकती है और स्थापित हो सकती है तो सामाजिक विश्व में केंद्रीय सत्ता (राज की भूमिका) पर सवाल क्यों नहीं। समाज में राजतंत्र और सामन्तशाही की पकड़ बहुत मजबूत थी। यांत्रिकी का जड़त्व यहां भी काम कर रहा था। लम्बे समय से ठहरे हुए समाज को गति देने के लिए बहुत बड़े सामाजिक बल की जरूरत थी। दर्शन में यही 'पुनर्जागरण काल' कहलाता है। एक दस्तक तो हुई

गेलिलियो की बात पर एक प्रश्न उठता है। यदि पिण्ड की गति उस पर डाले जाने वाले बाह्य प्रभाव (बल) को प्रकट नहीं करती तो यह प्रभाव किसके द्वारा प्रकट होता है? गेलिलियो ने इसका उत्तर दिया है और न्यूटन ने जिसे गणितीय समीकरण में ढाला हैं इसके अनुसार यदि बल गति की दिशा में लगता है तो गति को बढ़ा देगा। अर्थात बल का परिणाम 'गति परिवर्तन' है न कि किसी पिण्ड में स्वयं गति। बल और गति का सम्बन्ध ही न्यूटन की भौतिकी का आधार हैं पिण्ड में स्वयं गति कहां से आई? न्यूटन का इस बारे में कहना था कि इस ब्रह्माण्ड को 'पहला धक्का' तो 'किसी तरह' दिया गया है और इसके बाद यह ब्रह्माण्ड स्वयं अपने नियमों के द्वारा संचलित है। हमारा काम है इन नियमों की खोज करना। न्यूटन के इस कथन पर तो बहुत ही प्रश्न चिह्न खड़े हैं। कई बार किसी समस्या को उठाना अर्थात प्रश्न करना समाधान की अपेक्षा अधिक महत्त्वपूर्ण होता। परंतु अभी तो साधारण गति की समस्या ही शेष है। दूसरी बड़ी समस्या है वक्रपथीय गतियों को लेकर। इतना ही नहीं पृथ्वी द्वारा वस्तुओं को अपनी ओर खींचने (बल) के प्रश्न भी शेष है। विज्ञान में एक परिपाटी और रही है, वह है, धारणाओं का सामान्यीकरण करना। यह विधि भी एकदम सरल नहीं है और न ही यह एक मार्गीय तरीका है। सामान्यीकरण करने मे चाहे किसी भी मार्ग से आगे बढ़ा जाए, कुछ न्यूनतम् शर्तें तो पूरी होनी चाहिएं। ये शर्तें हैं, मौलिक संकल्पनाओं पर पूरी तरह खरा उतरना। उदाहरण के लिए यदि वक्रपथीय गति के संबंध में बल का परिचय दिया जाता है तो यह स्वतः ही सरल रेखीय गतियों के संबंध में वैध माना जाएगा।

पानी ऊपर खींचने के अति साधारण पम्प अरस्तु के समय भी थे। अरस्तु ने इसकी व्याख्या शून्य (Vacuum) की उपस्थिति की सहायता से की। अरस्तु के अनुसार शून्य को दर्शया नहीं जा सकता अर्थात कोई ऐसा स्थान सम्भव नहीं जहां शून्य ठहर सके। यह प्रश्न गैलिलियों के पास कैसे आया? रोम के ड्यूक ने अपने महल में एक कुआं खुदवाया। पानी का तल अधिक गहरा था। साधारण पम्प द्वारा प्रयास हुए। पानी ऊपर नहीं आया। ड्यूक

ने समस्या गैलिलियो के सामने रखी। गेलिलियो ने कई प्रयास किए। उसने देखा कि पानी लगभग 32 फुट ऊपर तक तो चढ़ जाता है, इससे ऊपर नहीं। वह यह गुत्थी नहीं सुलझा पाया। गेलिलियो ने इस काम के लिए अपने सचिव (शिष्य भी) टारिसीली की सहायता ली। टारिसीली ने अलग-अलग द्रवों पर यही प्रयोग किया। उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब उसने देखा कि पारे को तो केवल 30'' लगभग ही उठाया जा सकता है। उसने एक लम्बी नली में पारा भर कर सिरे पर अंगूठा रख कर पारे से भरे बर्तन में उलटा रखा। पारा कुछ नीचे गिरा और लगभग 30'' तक आकर ठहर गया। ऊपर खाली बचे स्थान पर भी उसने प्रयोग किए। उसे शून्य (Vacuum) मिल गया। इसके बाद तो उसने अनेक प्रयोग किए। पास्कल ने बाकी काम को पूरा किया। अरस्तु की यांत्रिकी को यह बहुत बड़ा धक्का था।

न्यूटोनियन भौतिकी की सर्वाधिक महत्वपूर्ण शिष्टता यह थी कि सूत्रों द्वारा प्राप्त किए गए निष्कर्ष न केवल गुणात्मक परिचय देते थे, अपितु परिमाणात्मक परिचायक भी होते हैं। ये परिमाणात्मक निष्कर्ष गणित की देन हैं। इसलिए यदि हम भौतिकी की गहराइयों में जताना चाहते हैं तो हमें गणित की भाषा को समझना पड़ेगा। जब बल और गति के संबंध में गुणात्मक भिन्नता के प्रश्न आए तो परिमाणात्मक लथ्य भी प्रकट हुए। न्यूटन के गुरुत्वाकर्षण के नियम इसी द्वन्द्व की उपज थे। न्यूटन की भौतिकी न्यूटन के लगभग 200 वर्षो बाद तक अनवरत चलती रही। भौतिक जगत में स्थानीय परिवेश के बहुत सारे प्रश्नों के उत्तर इससे मिलते रहे। यदि न्यूटन के सारे काम आंकलन करें तो हमें एक उदाहरण बहुत स्टीक लगता है। ब्रह्माण्ड की इस रहस्य कथा को समझने के प्रयत्न में न्यूटन की स्थिति एक ऐसे मनुष्य की है जो एक बंद ऑटोमेटिक घड़ी को देखकर इसकी आंतरिक यंत्र रचना का समझने की कोशिश कर रहा है। वह इस घड़ी की आकृति देख रहा है, इसकी चलती सूइयां देख रहा है, इसकी टिक-टिक सुन रहा है और आंतरिक संरचना अनुमानित चित्र बनाने की कोशिश कर रहा है। वह इसको खोलकर अंदर से देखने का न तो जोखिम उठा रहा है और न ही उसके पास इसको खोलने के सही औजार हैं। लेकिन जब तक इस मशीन (घड़ी) को खोल कर इसकी आंतरिक संरचना और चलन प्रक्रिया को नहीं समझा जाता, उसके द्वारा बनाए गए चित्र जरूरी नहीं कि ठीक ही हो। न्यूटन की भौतिकी के साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ है।

विज्ञान का लक्ष्य क्या है? प्रकृति के निरूपण करने वाले सिद्धांतों की व्याख्या करना। विज्ञान के ये सिद्धांत सामान्यकरण की प्रक्रिया से गुजर कर दर्शन में प्रवेश करते हैं। आगे चल कर ये समाज में एक स्वीकृत दृष्टिकोण बना देते हैं। न्यूटन के समय में विश्व को समझने का जो प्रयास हुआ। उन्हीं से यांत्रिकी में यह बात निकल कर आई कि इस भौतिक विश्व की संरचना (Building Material) के पीछे केवल पदार्थ ही नहीं अपितु उसके बीच संबंध भी जिम्मेवार हैं। न्यूटन से पूर्व ब्रह्माण्ड की रचना के Building Material निश्चित थे और वे पंचभूत थे; न्यूटन के एक दार्शनिक मित्र लॉक (Locke) और दूसरे दर्शनिक मित्र ह्यूम (Hume) द्वारा न्यूटन की भौतिकी का आधार दर्शन में प्रवेश कर पाया और दर्शन के द्वारा समाज में आया। समाज में ये सिद्धांत सामाजिक सुधार आन्दोलनों द्वारा पनपे हैं। फ्रांसिसी सांस्कृतिक क्रांति के चैम्पियन वाल्टेयर की पूरी समझ का आधार न्यूटन की भौतिकी है। समाज में यह बुर्जुआ उदारवाद के रूप में व्याख्यायित हुई है।

प्रकाश की प्रकृति को समझने के लिए न्यूटन को बहुत मेहनत करनी पड़ी। न्यूटन की भौतिकी में प्रकाश की खोजों की महत्वपूर्ण भूमिका है। न्यूटन ने प्रकाश के परावर्तन, अपवर्तन और प्रिज़्म में से संचरण जैसे अनेक प्रयोग किए। उसने कणिका सिद्धांत की अवधारणा दी। इसी आधार पर उसने प्रकाश के व्यवहार को समझने की कोशिश की। लगभग 100 वर्षो तक इसे कोई चुनौती नहीं मिली। लेकिन टॉमस यंग और फ्रेसनल के प्रयोगों से उपजी समस्या (interference and Polarization) ने नई अवधारणा के लिए मांग प्रस्तुत की। फलस्वरूप ह्यूजीन (का) तरंग सिद्धांत सामने आया। क्योंकि तरंग संचरण के लिए भौतिक माध्यम चाहिए (प्रकाश संचरण के लिए जरूरत नहीं) इसलिए काल्पनिक माध्यम 'ईथर' को मानने की मजबूरी हो गई। लगभग 100 वर्षो तक भौतिकी में यही चलता रहा। वह तो मैक्सवेल के बाद ही सम्भव हुआ। जब

ईथर पर सवाल उठने लगे और एक नई भौतिकी ने अपनी राह पकड़ी। काल्पनिक माध्यम ईथर की अवधारणा समाप्त हुई।

साहित्य की रहस्य कथाओं (मान लें अपराध कथा) में कोई अपराध तो हुआ होता ही है। एक कुशल जासूस अंगुलियों के निशान, गोलियों के खोल, अपराध सथल पर छूटे अन्य सुरागों की सहायता से खोज की तरफ बढ़ता है। परंतु विज्ञान की रहस्य कथा में कोई अपराध नहीं हुआ है। वैज्ञानिकों को स्वयं यह अपराध (दुस्साहसिक प्रयोग) करना पड़ता है और स्वयं ही इसका समाधान ढूंढना पड़ता है। विज्ञान कथा में अपराध करने का यह संकट तब पैदा होता है, जब पुराने सिद्धांत से महत्वपूर्ण सुराग मिलने बंद हो जाते हैं। इसी श्रृंखला में कई प्रयोग हुए। दो प्रकार से विद्युत आवेशों (घनात्मक एवं ऋणात्मक) का होना हमें बहुत सरल बात लग सकती है परंतु यह बात किसी बड़े संकट की ओर ले जाएगी, इसका आभास उस समय नहीं था। यद्यपि कूलम्ब ने अपने प्रयोगों से इसके नियम दे दिए। हां यह बात उल्लेखनीय है कि सर्वप्रथम हम नई समस्याओं के हल पुराने नियमों में ही ढूंढने की कोशिश करते हैं। इन्होंने न्यूटन की भौतिकी का ही सहारा लिया। इन आवेशों के मध्य पैदा होने वाले बल की व्याख्या कूलम्ब ने न्यूटन के नियम के आधार पर की। परंतु कुछ नए प्रश्न उठ खड़े हुए। प्रथम तो यह कि गुरुत्वाकषर्ण तो पिण्डों के बीच सदैव बना रहता है परंतु विद्युत बल का अस्तित्व केवल तभी सम्भव था, जब पिण्ड आवेशित थे। दूसरा यह कि गुरुवाकर्षण तो केवल आकर्षण बल था परंतु यहां तो विकर्षण बल भी था। अब लगने लगा था कि न्यूटन की भौतिकी भी साधारण भौतिक घटनाओं के लिए भी काफी नहीं है। इसी प्रकार की बात चुम्बकीय घटनाओं को लेकर रही। विज्ञान के इतिहास में कुछ ऐसे उदाहरण भी हैं जिनमें आकस्मिक घटना का बहुत बड़ा हाथ है। 18वीं शताब्दी के अंत में वोल्टा का प्रयोग हो गया। नए प्रकार के बलों के क्षेत्र तथा नए संबंध सामने आने लगे। न्यूटन की नजरों से देखे जाने वाली घड़ी अब वह घड़ी नहीं रह गई थी। विज्ञान में लगभग प्रत्येक महान उत्थान तब होता है जब पुराने सिद्धांत पर कोई संकट आ जाता है। और उससे उत्पन्न कठिनाइयों को दूर करने के लिए किसी नए रास्ते की तलाश की जाती है। विज्ञान में इस प्रकार का एक संकट उस समय खड़ा हुआ जब 'आरेस्टेड' ने अपने अध्ययन के दौरान एक प्रयोग किया। उसने 1820 में अपने प्रयोग के दौरान जिंदा बिजली की तार के नीचे एक चुम्बकीय सूई को धकेल दिया। उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। चुम्बकीय सूई ने अपनी दिशा बदल दी। आसपास कोई और चुम्बक न था। आरेस्टेड ने समझने में देर नहीं लगाई कि धारा विद्युत अपने चारों ओर चुम्बकीय प्रभाव पैदा करती है। पर क्या इसका उलटा भी सम्भव हो सकता है? अगले ही वर्ष फैराडे ने इस विपरीत प्रयोग को किया। उसने स्थायी चुम्बक के आसपास एक सुचालक तार की कुण्डली को घुमाया। घूमते हुए तार में धारा विद्युत का संचार पाया गया। ये प्रयोग क्या हुए, खोजों का एक अनवरत सिलसिला शुरू हो गया। विश्व की इस रहस्य कथा में घटनाक्रम तेजी से बदलने लगे। न्यूटन की भौतिकी के यांत्रिक सिद्धांत सीमित होने लगे। नए प्रकार के बल और नए क्षेत्रों की खोजें शुरू हो गईं। इस प्रकार हम देखते हैं कि भौतिकी की उत्पत्ति संहति, बल और जड़त्वीय सिद्धांतों के प्रश्नों से शुरू हुई और इसी के अनुसार हमारे सोचने-समझने में भी एक यांत्रिकीय विचाराधारा आई। आधुनिक भौतिकी के जन्म से पहले इस जगत का निर्माण ऐसे भौतिक कणों से बना माना जाता था जिनके बीच बल केवल दूरी और संहति पर निभर थे। जहां तक हो सका हमने इस विश्वास को बनाए रखने की कोशिश की और सभी प्रकार के उठने वाले प्रश्नों का उत्तर इसी में ढूंढने की कोशिश की। विद्युत-चुम्बकीय बल की इजाद ने हमें बाध्य किया कि हम अपने सिद्धांत और विचार बदलें। इास बात को स्वीकार करने के लिए एक बड़ी हिम्मत और वैज्ञानिक कल्पना की जरूरत थी। अन्ततः यह स्वीकार करना पड़ा कि महत्वपूर्ण बात स्थूल पदार्थ नहीं है, अपितु अधिक महत्वपूर्ण है उनके मध्य पैदा होने वाले क्षेत्र का व्यवहार। इससे यह निष्कर्ष निकला कि भौतिकी के नियम एक विशेष फ्रेम वर्क में ही जायज होते हैं। अर्थात वास्तविकता चंचल होती है। यह पूरी तरह पकड़ में नहीं आती। हमारे ज्ञान की सीमा से बाहर भी अभी बहुत कुछ ऐसा है जो अभी छूटा हुआ है। इसे हम इस प्रकार कह सकते हैं कि 'तथ्य एक ऐतिहासिकता (Historicity) में सच होते हैं।' ★★★

महिला सम्मान के लिए संघर्ष : सबरीमाला

–डॉ. प्रमोद दुर्गा, राहुल थोरात
(अनुवादः उत्तम जोगदंड)

(10 से 50 उम्र की महिलाओं को माहवारी आती है, इस कारण वे अपवित्र हैं। इस के अलावा अय्यप्पा ब्रह्मचारी हैं। अतः सबरीमाला मंदिर में महिलाओं को प्रवेश दिया नहीं जा सकता, यह कहकर महिलाओं के मंदिर प्रवेश पाबंदी का समर्थन करने वाले पुरोहितों को सर्वोच्च न्यायालय ने फटकार लगाई और वर्ष 2018 में महिलाओं के लिए मंदिर के द्वार खुल गए। स्त्री-पुरुष विषमता के खिलाफ संघर्ष धर्म क्षेत्र से न्यायालय तक पहुंचा और उस ने राजकीय क्षेत्र पर भी कब्जा जमा लिया।

न्यायालय के इस निर्णय के बाद धर्मांध लोगों ने पूरे देश में हिंसात्मक बवाल मचाया। इस से यह ज्ञात होता है की मंदिर में महिलाओं का प्रवेश यह प्रश्न हमारे समाज में कितना विस्फोटक है। इस संदर्भ में डॉ. प्रमोद दुर्गा और राहुल थोरात ने प्रत्यक्ष मंदिर स्थल पर पहुँच कर सबरीमाला तीर्थ क्षेत्र की सर्वांगीण तहकीकात करने वाला लेख लिखा है। वह पाठकों को नई जानकारी तो देगा, इतना नहीं नहीं, हमारे सामने जो चुनौतियाँ हैं उस का एहसास भी करा देगा।)

तेरह सौ किलोमीटर की रेल यात्रा कर के हम केरल के कोट्टायम इस जिला स्थल पर 25 अक्तूबर के प्रातःकाल पहुंचे। हमारे स्वागत के लिए 'केरल युक्तिवादी संघम' के पूर्ण कालिक कार्यकर्ता एम. नटराजन उपस्थित थे। 'केरल युक्तिवादी संघम' यह संगठन केरल में वही काम करता है जो महाराष्ट्र अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति महाराष्ट्र में करता है। होटल पहुँच कर हम जब तक फ्रेश हो रहे थे तब 'केरल युक्तिवादी संघम' के अध्यक्ष डी. सुकुमारन भी तिरुवनंतपुरम से आ गए। हम ने उन्हें हमारे केरल भेंट का उद्देश्य कथन किया। सबरीमाला मंदिर देखने की इच्छा व्यक्त की। मंदिर भेंट के दौरान हमारे साथ रहने के लिए उन्हें अनुरोध किया। उन्होंने हमारे अनुरोध को मान भी लिया।

सबरीमाला मंदिर जाने से पहले कोट्टायम के महात्मा गांधी विश्वविद्यालय के सचिव और मलार्या इस आदिवासी समाज के अध्येता प्रो. सजीव से भेंट की। उन्हों ने सबरीमाला मंदिर पर अनुसंधान कर के 'सबरीमाला अय्यप्पन मलार्या दैवम' इस नाम से पुस्तक प्रसिद्ध की है। अय्यप्पा मंदिर के प्राचीन इतिहास के बारे में उनके साथ चर्चा हुई।

अय्यप्पा स्वामी का मंदिर साल भर खुला नहीं होता। दीवाली में दो दिनों के लिए यह मंदिर खुलने वाला था, इस लिए हमने शनिवार दिनांक 26 अक्तूबर को तड़के कोट्टायम से प्रस्थान किया और सबरीमाला पहाड़ की तरफ हमारा सफर शुरू हुआ। हमारे साथ युक्तिवादी संघम के कार्यकर्ता सुकुमारन भी थे।

सबरीमाला पहाड़ः

अय्यप्पा स्वामी का मंदिर जिस सबरीमाला पहाड़ पर है, वह पहाड़ और आसपास का सम्पूर्ण जंगल आज 'पेरियार टाइगर रिजर्व फोरेस्ट' का हिस्सा है। इस सफर का सत्तर प्रतिशत सफर जंगल मार्ग से होता है। जाने के लिए पक्की सड़कें हैं; लेकिन आसपास घना जंगल है। जंगल से पंबा नदी तक का सफर करना पड़ता है। सफर के दौरान हाथी और बाघ जैसे प्राणियों से सावधान रहने के लिए लगाए गए फलक दिखाई देते है।

सबरीमाला यह सह्याद्रि पर्वत माला में से एक पहाड़ है। 'माला' इस मलयाली शब्द का अर्थ 'पहाड़' होता है।

'सबरी' :

यह आदिवासी समाज की एक संत महिला थी। उस के नाम से इस पहाड़ का नाम सबरीमाला हो चुका है। अय्यप्पा स्वामी के मंदिर के मार्ग पर ही सबरी का मंदिर है। अन्य सत्रह पहाड़ और यह अठारहवाँ इस प्रकार यह कुल अठारह पहाड़ों का प्रदेश है। प्रत्येक पहाड़ का एक नाम है। सबरीमाला,

कल्किमाला, निल्लकलमाला, करीमाला, नागमाला, कुद्दंबरमाला, गौंडमाला आदि नाम आसपास के पहाड़ों के आदिवासी संस्कृति वाले नाम हैं।

दुष्कर यात्रा :

सबरीमाला पहाड़ चढ़ कर अय्यप्पा स्वामी का दर्शन लेना, यह सारे सफर में से एक रोमांचक सफर है। सबरीमाला पहाड़ की ऊंचाई समुद्री सतह से लगभग डेढ़ हजार फिट ऊंचाई पर है। पंबा नदी से पहाड़ पर मंदिर के पास पहुंचने तक का यह साढ़े चार किलोमीटर लंबा सफर है। 4000 सीढ़ियाँ चढ़ कर मंदिर तक जाया जा सकता है। यह पहाड़ चढ़ना यह बहुत ही कठिन काम है। यह पहाड़ किसी इमारत की सीढ़ी से डेढ़ गुना सीधा है और इस की सीढ़ियाँ चढ़ना अत्यंत कठिन काम होता है। करोड़ों लोग यह पहाड़ हर वर्ष चढ़ते हैं। नौजवान आदमी भी इस पहाड़ी पर चढ़ते हुए बीस से पच्चीस बार विश्राम लेता है। याने पहाड़ी पर चढ़ते समय हर 50 से 60 कदमों के बाद आदमी बैठ ही जाता है। इस से यह पता चलता है की इस पहाड़ पर चढ़ना कितना दुष्कर है ।

पहाड़ चढ़ते समय कई भक्तों की मृत्यु :

पहाड़ पर चढ़ते हुए हाँफने ने कारण कई भक्तों को तकलीफ होती है, इस कारण सरकार ने पहाड़ पर तीन जगह कार्डियालोजी केंद्र शुरू किए हैं। यहाँ के वैद्यकीय कर्मचारियों के साथ हम ने चर्चा की। उन्हों ने कहा की, ''यह दुष्कर पहाड़ चढ़ते समय सालाना लगभग 300 से 500 लोगों को हृदय से संबन्धित तकलीफें होती हैं और लगभग 20 से 25 लोगों की हृदय के बीमारी के कारण मृत्यु होती है।'' इस कारण 'थकान महसूस होने पर पहाड़ न चढ़ें', इस प्रकार की सूचना देवस्थान बोर्ड ने जगह जगह प्रदर्शित की हैं।

इस पहाड़ पर चढ़ते हुए सभी भक्त अय्यप्पा स्वामी के नारे लगाते हैं। सम्पूर्ण मार्ग पर 'स्वामी अय्यप्पारू अय्यप्पा स्वामी','स्वामी शरणम','अय्यप्पा शरणम','नाग शरणम ','राजा शरणम' इन नारों की गूंज सुनाई देती है। सफर शुरू होते समय ये नारे अधिक जोर और उत्साह से दिये जाते हैं; लेकिन इन नारों का जोर पहाड़ चढ़ते समय, जैसे-जैसे आगे बढ़ते हैं, वैसा कम हो जाता है।

जो लोग सबरीमाला पहाड़ चढ़ नहीं सकते, उन के लिए डोली सेवा उपलब्ध है। एक आदमी को तीन से चार किलोमीटर तक ले जाने के लिए डोली सेवक तीन हजार रुपयों से ले कर पाँच हजार रुपयों तक का शुल्क लेते हैं। ये डोली सेवक कहार 'डोली के वाहक' समाज के निचले तबके के या मलार्या, इस आदिवासी समाज के होते हैं। आदिवासी अध्येता प्रो. सजीव की राय के अनुसार अय्यप्पा स्वामी का मंदिर किसी समय आदिवासी समाज का मंदिर था, लेकिन वैदिकों ने उस पर कब्जा कर लिया और जो आदिवासी इस मंदिर के प्रबन्धक थे, वे आज डोली सेवक के रूप में काम कर रहे हैं।

सबरीमाला पहाड़ चढ़ते समय बीच-बीच में चाय और नाश्ते के स्टाल लगे हुए हैं, तो कुछ नौजवानों ने लोगों की मदद करने के लिए स्टॉल खोले हैं। भक्तों को पानी और शरबत देना, इस प्रकार के अभियान ये नौजवान चलाते हैं। इन्हें देवस्थान बोर्ड से मदद मिलती हैं, यह हमें एक नौजवान ने कहा।

रास्ते में सबरीमाला का एक मंदिर आता है। यह सबरीमाला याने प्रो. सजीव के कथन के अनुसार एक आदिवासी नायिका थी। इन के नाम से इस पहाड़ का नाम 'सबरीमाला' हुआ। इस सबरी का संबंध बाद में आर्य संस्कृति के साथ जोड़ दिया है तथा राम के कथा की सबरी यही है इस प्रकार का उल्लेख विकिपीडिया पर है।

बाण खींचने की परंपरा :

राह में कई जगह लकड़ी से बनाए हुए बाण खरीदे जा सकते हैं। ये लकड़ी के बने बाण लेना और निकट के ही नारियल तोड़ने की खिड़की में जड़ना, यह प्रथा हैं। अय्यप्पा स्वामी के युद्ध कला के बारे में स्मरण के रूप में यह किया जाता हैं। कई जगह इस प्रकार के बाण जड़े हुए हमें दिखाई दिये। सम्पूर्ण यात्रा में अन्य मंदिरों की भाँति बंदरों का अस्तित्व दिखाई दिया और विशेष बात ये है की यहाँ सूअरों का अस्तित्व भी बड़े पैमाने पर है। मंदिर के बिलकुल परिसर में मंदिर के आसपास सूअर और बंदर घूमते हुए दिखाई देते हैं। जनवरी 2018 की यात्रा में एक सूअर ने भक्तों पर हमला किया था।

पवित्र पंबा नदी में कपड़ों का विसर्जन :

सबरीमाला पहाड़ चढ़ने के सफर का आरंभ पंबा नदी से होता है। सबरीमाला पहाड़ी के तल से यह नदी बहती है। पंबा नदी के किनारे कई छोटे-बड़े होटल हैं और एक बड़ा मंडप है। इस मंडप तक 10

वर्ष से 50 वर्ष तक के उम्र की महिलाओं को प्रवेश की अनुमति है।

पंबा नदी के किनारे होने वाले विधि व धार्मिक कार्य में कई बातें की जाती हैं। लोग शुरू में यहाँ आकर पंबा नदी में नहाते हैं। नहाने के पहले पूजा का आरंभ होता है। विधि करने वाले पुरोहित यहाँ उपलब्ध होते हैं। वे आप को पुकारते रहते हैं। विधि करने के बाद पंबा नदी में नहाया जाता है। नहाने के बाद शरीर पर पहनी हुई काले या नीले रंग की लुंगी पानी में डाली जाती है। शरीर पर पहने हुए कपड़े नदी में डाले जाते हैं। इस से नदी में काफी प्रदूषण होता है। हम पहुंचे तब वह यात्रा का प्रमुख दिन नहीं था। अय्यप्पा स्वामी के वार्षिक उत्सव के नवंबर, दिसंबर और जनवरी में महत्वपूर्ण दिन होते हैं। मकर संक्रांति को यात्रा का अंतिम दिन होता है, बाद में यह मंदिर बंद किया जाता है। हमारे सामने ही सैकड़ों लुंगियाँ पानी पर तैर रही थी और पास में ही एक बांध बनाया गया था, वहाँ वह सब लुंगियाँ एकत्रित हो गई थी।

कपड़ों का नीलाम :

सबरीमाला पहाड़ी की ओर जाते जाते रास्ते में सैकड़ों डिजिटल फलक सरकार ने लगाए हैं, जिस पर यह संदेश लिखा गया है की, पंबा नदी में कुछ भी न डालें, नदी को प्रदूषित न किया जाए। सरकार ने ही नदी का पानी प्रदूषित न करने का आवाहान किया है; लेकिन जब हम ने सुकुमारन के पास पूछताछ की, कि पानी में डाले हुए इन कपड़ों का क्या किया जाता हैं? तब हमें पता चला कि सरकार हर वर्ष इन कपड़ों को नीलाम करती है। नदी में डाले गए कपड़े नीलामी में बेचे जाते हैं। लगभग पचास लाख रुपयों का नीलाम हर वर्ष देवस्थान बोर्ड कि ओर से किया जाता है। एक ओर सरकार प्रदूषण ना करने का आवाहन करती है तो दूसरी ओर इन कपड़ों से सरकारी देवस्थान बोर्ड इन कपड़ों में से पैसे कमाता हैं।

काला ड्रेस कोड :

सबरीमाला पहाड़ी पर स्थित अय्यप्पा स्वामी के दर्शन के लिए जाने वाले स्त्री और पुरुष काले कपड़े परिधान करते हैं। पुरुषों को काली लुंगी पहननी पड़ती है। केरल के भक्त नीले कपड़े भी पहन लेते हैं। फिलहाल भगवा का चलन होने के कारण कुछ दिनों से भगवा रंग के कपड़ों को भी मान्यता मिली है। काले और भगवा रंग के कपड़े ही क्यूँ पहनते हैं? इस बारे में हम ने कई भक्तों से पूछा, लेकिन कोई भी इस का धार्मिक कारण बता नहीं सका। परंपरा है इस कारण हम पहनते हैं-यह उत्तर कई भक्तों ने दिया। हम तीनों ने नीले रंग की लुंगी और शर्ट पहन कर पहाड़ पर चढ़ना शुरू किया।

सर पर इरुमुडी की पोटली :

पंबा नदी में स्नान करने के बाद सर पर सामग्री की एक पोटली ले कर पहाड़ चढ़ा जाता है। इस पोटली को 'इरुमुडी' कहते हैं। इस में मुरमुरे, हल्दी, अगरबत्ती, कपूर, नारियल, घी, चावल, गुलाब पानी और अन्य पदार्थ होते हैं। सबरीमाला पहाड़ी पर जाने वाले भक्तों के सर पर जो इरुमुडी की दो छोटी पोटली होती हैं, उस में यही पदार्थ होते हैं। वहाँ की यह मान्यता है की सर पर अगर ये ना हो तो पहाड़ चढ़ना नहीं है। हर भक्त इरुमुडी को सर पर लेता ही है। इस के सिवा मंदिर के पास जा नहीं सकते, इस लिए हम ने भी हमारे सर पर यह इरुमुडी ले ली थी।

इस की भी एक कहानी है। पंदालम राजा जब अय्यप्पा के दर्शन के लिए पहाड़ पर आ गया, तब उस ने इसी प्रकार की वस्तुएँ अपने साथ लायी थी। लोग कुछ बर्तन भी ले कर आए थे। उस समय का सफर निश्चय ही दो-चार घंटों का तो नहीं होगा। अय्यप्पा स्वामी के मंदिर तक पहुँचने के लिए कई दिन लगते होगे। बीच में खाने के लिए कुछ हो, इस लिए यह प्रथा शुरू हुई। पहले लोग हाथ में अग्नि की मशाल ले कर यह पहाड़ चढ़ते थे, तब अपने अन्न के लिए इन चीजों की जरूरत तो अवश्य रही होगी; लेकिन आज ये सभी पदार्थ मंदिर के पास ले जा कर उन की पूजा की जाती है।

घी अर्पण करने की प्रथा :

अय्यप्पा स्वामी को घी से नहलाया जाता है। इस हेतु हर भक्त 100 से 1000 मिलीलीटर घी पहाड़ पर ले आता है। हर वर्ष काफी बड़ी मात्रा में यह घी इकट्ठा होता है। यह घी नारियल में भर कर लाया जाता है। नारियल के एक आँख में छिद्र कर के उस में यह घी भरा जाता है। भक्त एक या दस नारियल ले आता है। मंदिर के समीप आने पर यह नारियल तोड़ कर घी एक बर्तन में लिया जाता है। दर्शन के लिए जाते समय यह घी वाला बर्तन द्वार के पास खड़े पुरोहित को सौंपा जाता है। मंदिर के

बाहर एक गड्ढे में ये नारियल डाले जाते हैं। इस गड्ढे में निर्माण हुई बड़ी आग दिखाई देती हैं। लाखों लीटर घी इन नारियलों से जमा होता है, सुकुमारन ने कहा। एक आदमी 100 मिलीलीटर से 1 लीटर तक का घी अर्पण करता है। नारियल की कटोरियाँ भर कर यह घी डाला जाता है। लाखों, करोड़ों रूपये मूल्य का यह घी वहाँ अर्पण होता है।

'मलार्या' आदिवासी समाज के अध्येता डॉ. सजीव ने कहा, ''आदिवासी जब मंदिर के परिचालक थे तब घी से स्नान कराने की या घी अर्पण करने की प्रथा नहीं थी, बल्कि आदिवासी लोग शहद अर्पण करते थे या शहद से स्नान कराते थे। उन के अनुसार इस मंदिर का ब्राह्मणीकरण हो जाने के बाद ऐसी प्रथाएँ शुरू हुई हैं।"

अय्यप्पा के प्रेमिका का मंदिरः

अय्यप्पा स्वामी ब्रह्मचारी भगवान माने जाते हैं; लेकिन उन के साथ अपना विवाह हो यह कामना करने वाली एक महिला थी। उस का नाम मल्लिकापुरुथम्मा देवी है। वह महिषासुर की बहन थी। उसे अय्यप्पा ने पाप से मुक्ति दिला कर अपने मंदिर के पास रहने के लिए कहा था। यह लोककथा केरल में प्रचलित है, सुकुमारन ने कहा। मल्लिकापुरुथम्मा इस देवी का मंदिर भी अय्यप्पा स्वामी मंदिर के परिसर में है। यह देवी अय्यप्पा के साथ शादी करना चाहती थी; लेकिन अय्यप्पा स्वामी ने उसे कहा कि, 'सबरी में जिस वर्ष नया भक्त नहीं आएगा उस वर्ष मैं तुम्हारे साथ शादी करूंगा,' लेकिन ऐसा हुआ नहीं और उन की शादी भी नहीं हो पायी। सबरीमाला पहाड़ पर जाते समय भक्त जो वस्तुएँ ले जाते है उनमें एक गुलाब जल की बोतल भी ले जाते हैं। यह जल इस मंदिर के परिसर में छिड़क दिया जाता है। 10 से 50 की उम्र वाली महिलाओं को 'मल्लिकापुरुथम्मा' कहा जाता है, जिन्हें मंदिर में प्रवेश नहीं दिया जाता।

अय्यप्पा का मुस्लिम शिष्य वावर स्वामीः

वावर या बाबर स्वामी का एक मंदिर अय्यप्पा स्वामी मंदिर के परिसर में है। इस के अलावा सबरीमाला पहाड़ की तरफ जाते समय सबरीमाला से 20 किलोमीटर पर एरुमला नाम का एक गाँव है। इस गाँव में वावर स्वामी के नाम से एक मस्जिद है। सबरीमाला जाने वाला प्रत्येक भक्त इस मस्जिद परिसर में जाता है। वहाँ वावर स्वामी का दर्शन लेता है, वहाँ नारियल फोड़ा जाता है और फिर भक्त आगे बढ़ते हैं।

वावर स्वामी के अय्यप्पा के साथ दो प्रकार के रिश्ते बताए जाते है। वावर मुस्लिम गुरु थे। वे अरेबिया से मुस्लिम धर्म के प्रसार हेतु केरल में आ गए; लेकिन उन पर अय्यप्पा स्वामी का प्रभाव पड़ा और वे उन के शिष्य बन कर यहीं रह गए। दूसरी कथा यह कही जाती है की वावर आक्रमणकर्ता के रूप में आए थे, लेकिन अय्यप्पा के साथ हुए युद्ध में उन की हार हुई और अय्यप्पा के कार्य से प्रभावित हुए और यही रह गए।

अय्यप्पा की भिन्न भिन्न जन्म कथाएँः

अय्यप्पा स्वामी कौन हैं, इस बारे में हम ने भिन्न-भिन्न कहानियाँ सुनी। एक प्रचलित कथा सुनाई जाती है किः पंदलम के राजा राजशेखर एक बार जंगल में भ्रमण करने गए थे। तब उन्हें एक रोता हुआ बच्चा दिखाई दिया। उसे उन्होंने अपने घर लाया और अपने राजमहल में अपनी संतान जैसा पाला पोसा। राजा राजशेखर की अपनी कोई संतान नहीं थी। इस कारण उन्हों ने इस बच्चे को अपने पुत्र का दर्जा दिया। बाद में राजशेखर की अपनी संतान पैदा हुई। फिर पंदलम की रानी ने उस के साथ सौतेला व्यवहार शुरू किया। एक बार रानी बीमार हुई। तब राजवैद्य ने उसे दवाई के रूप में बाघिन का दूध लेने के लिए कहा। फिर रानी ने स्वामी को बाघिन का दूध लाने के लिए जंगल भेज दिया। इस के पीछे उद्देश्य यह था की अय्यप्पा को जंगल में कुछ हो जाये और अपना पुत्र राजा बन जाये। लेकिन अय्यप्पा स्वामी जंगल से बाघिन का दूध तो ले ही आए, बाघ भी ले आए। इस लिए अय्यप्पा स्वामी चित्रों में बाघ पर सवार होते हैं।

अय्यप्पा स्वामी की दूसरी जन्म कथा कही जाती है, वह ये है कि उन का जन्म विष्णु और शिव से हुआ। मा. सुप्रीम कोर्ट में 'त्रावणकोर देवास्वम बोर्ड' की ओर से यही कथा बताई गयी है। उस के अनुसार इस देव का जन्म दो पुरुषों से हुआ है इस कारण इस में महिलाओं का किसी भी प्रकार का संबंध नहीं है, यह माना गया है। समुद्र मंथन के समय भगवान विष्णु ने लिए मोहिनी रूप पर भगवान शिव मोहित हुए और इन दोनों के संबंध से अय्यप्पा का जन्म हुआ। 'विकिपीडिया' या अन्य कोई भी साइट देखने पर इसी कथा का संदर्भ मिलता है। शिव और

विष्णु से निर्माण हुआ पुत्र होने के कारण अय्यप्पा को 'हरिहर पुत्र' के नाम से भी पहचाना जाता है। इस के अलावा अय्यप्पन, शास्ता, मणिकंठा इस नाम से वे दक्षिण भारत में पहचाने जाते हैं।

आदिवासियों के नायक अय्यप्पा :

'मलार्या' आदिवासी समाज पर अनुसंधान करने वाले डॉ. सजीव ऊपरी दोनों तर्कों को नहीं मानते। वे कहते हैं की,'अय्यप्पा' आदिवासी समाज के एक सक्षम पुरुष थे। उन का जन्म विष्णु और शिव से नहीं हुआ। दो पुरुषों से एक नए जीव का निर्माण कैसे होगा ? उन्हें यह बात मान्य नहीं है। उन के अनुसार अय्यप्पा स्वामी के पिता का नाम 'कंदन' और माँ का नाम 'करुथनमला' है। अय्यप्पा का दूसरा नाम 'मणिकंदन' है। 'मणि' याने छोटा और 'कंदन' है उन के पिता। 'मणिकंदन' याने 'छोटे कंदन' यह अर्थ होता है। पहाड़ चढ़ते समय अय्यप्पा स्वामी के नाम की जयजयकार की जाती है और अलग-अलग नारे लगाए जाते हैं। उन में 'मणिकंदन शरणम' यह नारा आज भी दिया जाता है, यह प्रो. सजीव की राय है। उन का यह भी कहना है कि 'अय्यप्पा' शब्द का अर्थ भी 'पितृत्व तुल्य' यह होता है। अय्यप्पा ने अपने कार्यकाल में जनहित के इतने कार्य किए कि उन्हें अय्यप्पा याने पिता या बाप इस अर्थ से लोग संबोधित करने लगे। आप के महाराष्ट्र में जो महत्व छत्रपति शिवाजी महाराज का है उतना ही महत्व केरल के 'मलार्या' इस आदिवासी समाज में अय्यप्पा का है। बाद के समय में अय्यप्पा स्वामी इस आदिवासी देव या राजा का ब्राह्मणीकरण या वैदिकीकरण हुआ है। पिछले एक हजार वर्षो में आर्य ब्राह्मण वैदिक संस्कृति के समर्थकों ने इस आदिवासी संस्कृति के देवत्व का हिंदुकरण किया, यह प्रो. सजीव की राय है।

मंदिर आदिवासियों को सौंपने की माँगः

पंदालम के राजा ने ही इस मंदिर के मुख्य तंत्री या मंदिर के ब्राह्मण के रूप में 'थजमोन मडोमम' इस परिवार को नामित किया। आज भी इस परिवार के पास ही इस मंदिर के पौरोहित्य का अधिकार हैं। प्रो. सजीव का कहना है कि, अय्यप्पा स्वामी का मंदिर और 'उन' आठ पहाड़ों के विभाग की संस्कृति एक प्राचीन भारतीय 'मलार्या' आदिवासी संस्कृति है। अय्यप्पा स्वामी के मंदिर की अठारह सीढ़ियाँ है। ये अठारह सीढ़ियाँ याने अठारह पहाड़ों के आदिवासियों के या अठारह पहाड़ों के प्रतीक हैं। अय्यप्पा मंदिर की रचना, वहाँ की पुजा पद्धति और सभी विधि आदिवासी समाज के रीति-रिवाजों से मिलते जुलते हैं। 'मलार्या' इस आदिवासी समाज में आज भी अनगिनत लोगों के नाम अय्यप्पा होते है। प्रत्येक घर के वंश में कम से कम एक आदमी अय्यप्पा नाम वाला होता ही है; लेकिन मंदिर के मुख्य तांत्रिक ब्राह्मण परिवार में एक भी मनुष्य का नाम अय्यप्पा नहीं है या उन के किसी भी पूर्वज का नाम अय्यप्पा नहीं है, यह प्रो. सजीव की राय है। इस का किसी भी धर्म से कोई संबंध नहीं है। ये 'मलार्या' संस्कृति का ही हिस्सा है। इस मंदिर का स्वामित्व जैसे पहले था, आदिवासी समाज को ही मिलें, यह माँग वे शीघ्र ही उन के समाज की ओर से करने वाले हैं और इस माँग का मुकदमा केरल उच्च न्यायालय में वे 'मलार्या' आदिवासी समाज की ओर से दाखिल करने वाले हैं। उन्हें विश्वास है कि उन के समाज के पास इतने सबूत हैं कि वे मुकदमा आसानी से जीत सकते हैं। हमारे साथ चर्चा करते समय भी उन्हों ने काफी कागजात और जंगल के अन्य जगहों के कुछ अवशेष और मूर्तियों के फोटो हमें दिखाए। सबरीमाला जंगल में सफर करते समय कई जगह आज भी आदिवासी समाज के लोग निवास करते हुए दिखाई देते हैं।

अय्यप्पा और बौद्ध संस्कृति :

नटराजन केरल के 'युक्तिवादी' संघ के कार्यकर्ता और दलित अध्येता हैं। उन के अनुसार, आज भी इस जंगल में बौद्ध गुफाएँ हैं और सबरीमाला पहाड़ के ऊपर स्थित अय्यप्पा स्वामी का मंदिर भी एक बौद्ध स्तूप ही था; लेकिन बाद के समय में उस का हिंदूकरण हुआ है। उन के अनुसार, मंदिर की बहुत सारी रचना बौद्ध गुफा जैसी है। कई अनुसंधानकर्ता और अध्येताओं की यह ही राय है कि यह मंदिर बौद्ध मंदिर का हिस्सा है। अय्यप्पा के लिए उपयोग में लाया जाने वाला 'शास्ता' यह नाम बौद्ध संस्कृति में पाया जाता है। बौद्ध स्तूप को 'शास्तालय' कहा जाता है। इस बारे में कई लेख और कई अध्येताओं के ब्लॉग इंटरनेट पर उपलब्ध हैं।

मकर ज्योति का चमत्कार मंदिर का महात्म्य बढ़ाने के लिए :

अय्यप्पा स्वामी का मंदिर वैसे तो साल भर

बंद रहता है। यह मंदिर मलयाली कलेंडर के प्रत्येक माह के पहले दिन, तथा, नवंबर से जनवरी के मकर संक्रांति तक खुला रहता है। सामान्यतः यह त्यौहार हर वर्ष जनवरी के 14वीं तारीख को आता है। यह यात्रा का अंतिम दिन होता है। इस अवधि में भक्त 41 दिनों का उपवास का कठोर व्रत रखते हैं। इस दिन भक्तों का खास आकर्षण होता है मकर ज्योति का दर्शन। यह मान्यता है कि मकर संक्रांति के दिन शाम सात बजे के आसपास भगवान कि आरती हो जाने बाद सबरीमाला पहाड़ माला के बीच 'पोन्नांबलमेडु' के पास स्थित पहाड़ पर एक ज्योति जलती है। इस ज्योति की अलग-अलग कहानियाँ है। यह ज्योति परशुराम ने पहले जलायी यह एक मान्यता है। तो आदिवासी समाज के अध्येता प्रो. सजीव की राय है कि यह ज्योत आदिवासी लोग जलाते थे। कुछ सौ-एक साल तक आदिवासी यह ज्योत जलाते थे। अय्यप्पा ने समाधि लेने के बाद उन्होंने अपने अभिभावकों से कहा कि मैं साल में एक बार आप से मिलने आऊँगा। इस लिए आदिवासी लोग संक्रांति के दिन अय्यप्पा स्वामी की पूजा करने के लिए 'पोन्नांबलमेडू' पहाड़ पर ज्योत जलाते है। आदिवासी कथा के अनुसार अय्यप्पा के जन्म का स्थान यह पोन्नांबलमेडू पहाड़ ही है। उन का बचपन इसी पहाड़ पर गुज़रा। यह ज्योति अपने आप जलती है, यह अंधविश्वास आज कल चल रहा है। यह ज्योत देखने के लिए लाखों लोग यहाँ इकट्ठे होते हैं। 'तहलका' नामक पत्रिका द्वारा दिये हुए आंकड़ों के अनुसार इन तीन-चार दिनों में लगभग 3 करोड़ लोग सबरीमाला भेंट देने हेतु आते हैं।

भगदड़ में सैकड़ों लोगों की मृत्यु :

मकर ज्योति के उत्सव के दौरान अलग अलग दुर्घटनाओं में कई भक्तों की मृत्यु हुई है। वर्ष 2011 के यात्रा के दौरान बड़ा हादसा हो कर लगभग 200 लोगों की मृत्यु हुई। उस से पहले वर्ष 1999 में पहाड़ पर हुई भगदड़ में 52 और 1952 में 66 भक्त अलग अलग दुर्घटनाओं में जान गंवा बैठे है यह दर्ज किया गया है।

मकर ज्योति अपने आप जलती है और यह एक अद्‌भुत चमत्कार है, यह यहाँ का अंधविश्वास असल में लोगों को आकर्षित करता है। इस चमत्कार के कारण यह मंदिर पूरे देश में प्रसिद्ध हुआ है। केरल के लोगों में इस का कोई खास आकर्षण नहीं है; लेकिन आंध्र प्रदेश, तमिलनाडू और कर्नाटक के लाखों लोग यह मकर ज्योति देखने के लिए हर वर्ष इकट्ठे होते हैं।

ज्योति कैसे जलती है?

पिछले तीस वर्षो में इस ज्योति का महत्व काफी बढ़ा हुआ है। केरल का युक्तिवादी संगठन महाराष्ट्र अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति जैसा ही अंधविश्वास उन्मूलन का कार्य करने वाला संगठन है। इस संघटन के सुकुमारन और अन्य कार्यकर्ताओं ने वर्ष 1982 में ही इस ज्योति का वैज्ञानिक सत्य प्रकट कर दिया था।

वर्ष 1981 में सुकुमारन और साथियों ने यह ज्योत जलती कैसे है इस बात कि गहराई से जांच की। सुकुमारन और उन के साथी जंगल के उस परिसर में 13 और 14 जनवरी को पहुंचे जहां ज्योत जलती है। इतने में उन्हें वहाँ वन विभाग की एक जीप दिखाई दी। वह जीप जहां ज्योत जलती है उस तरफ जा रही थी। उस के बाद उन्हें पुलिस विभाग और केरल विद्युत बोर्ड के लोग भी मिले। उनके साथ देवस्थान बोर्ड के कुछ लोग थे। सुकुमारन उन के साथ मिल गए। ये सभी जहां ज्योत जलती है वहाँ पहुंचे।

'इलेस्ट्रेटेड वीकली' इस पत्रिका ने वर्ष 1987 में यह ज्योत मानव निर्मित किस प्रकार है, इस की कहानी छापी थी। इसके अनुसार जहां ज्योत जलती है उस जगह एक सीमेंट का चबूतरा है। यह चबूतरा देवस्थान बोर्ड ने ही बनाया है यह 'द हिन्दू' इस समाचार पत्र में प्रसिद्ध किया गया है। इस चबूतरे पर यह ज्योत जलती है। एक एल्यूमिनियम के बर्तन में पहले कीचड़ भरा जाता है। फिर उस पर लगभग दस किलोग्राम कपूर डाला जाता है। मकर संक्रांति के दिन शाम साढ़े छह बजे इस कपूर को आग लगा दी जाती है। फिर एक आदमी यह बर्तन सर पर उठा लेता है और नीचे रख देता है। यह तीन बार किया जाता है। बाद में यह आग नीचे रख कर उस पर भिगोये हुए टाट के बोरे डाले जाते है। तीन बार यह ज्योत दिखाई देती है। करोड़ों लोग इस समय मंदिर परिसर में हाथ जोड़ कर खड़े हुए होते है। देव के ज्योति का दर्शन हुआ इस कारण उन का मन गदगद हो उठता है। इस ज्योति की अय्यप्पा मंदिर से हवाई दूरी लगभग दस किलोमीटर होती है। ....(क्रमशः........)

विज्ञान एवं मानव समाज

-राजपाल सिंह
मो. 9876710809

पुरातन यूनान में एक समय विज्ञान एवं तर्क का बोलबाला चल रहा था। प्रत्येक विषय के बार में खोज-पड़ताल होती तथा तर्क पर आधारित बहसें हुआ करती थी। ईसा के जन्म से भी पूर्व, वैज्ञानिक सिद्धांत बीज रूप में पेश किये जा रहे थे। जैसे कि डेमोक्रीट्स ने पदार्थ के परमाणुओं द्वारा निर्मित होने की बात की थी। उस समय हुए गणितज्ञ पाईथागोरस के सूत्र एवं यूक्लिड का रेखागणित अब तक पढ़ाया जा रहा है। चिकित्सा विज्ञान का पितामह हिपोक्रेट भी उसी दौर में हुआ था जिस के द्वारा चिकित्सीय नैतिकता के लिए बनाए गए नियमों के अनुपालन के लिए वर्तमान दौर में भी नये डाक्टरों की शपथ (Hippocratic Oath) ग्रहण करवाई जाती है। अरस्तु को तो विज्ञान का पितामह होने का सम्मान दिया जाता है। इसी समय के दौरान ही, ईसापूर्व द्वितीय सदी में, यूनान की छोटी-छोटी रियासतें- जिन को सिटी स्टेट्स (City States) कहा जाता था, रोम साम्राज्य के अधीन हो गयीं। रोमन साम्राज्य के प्रारम्भिक दौर में तो ज्ञान-विज्ञान को प्रमुखता देने एवं तर्क पर आधारित परिणाम निकालने की यूनानी परम्पराएं चलती रहीं। परंतु चौथी ईस्वी शताब्दी आने तक पासा पलट गया तथा तर्क के स्थान पर अंधविश्वास एवं धार्मिक कट्टरता का बोलबाला हो गया। पूर्व में प्राप्त ज्ञान-विज्ञान को दबा दिया गया तथा नई शिक्षा केवल पुस्तकों की व्याख्या करने तक सीमित हो गई। यह दौर चौथी से 14वीं शताब्दी तक चला, जिसे इतिहासकार यूरोप का अंधकार युग (Dark Ages) कहते हैं। इससे मानव के ज्ञान का विकास सैंकड़ों वर्ष पिछड़ गया।

अब प्रश्न उठता है कि जब प्राचीन यूनान एवं रोमन साम्राज्य में तर्क एवं विज्ञान इस प्रकार से स्थापित हो चुके थे तो फिर धर्मिक सोच वहां पर कैसे हावी हो गई? इस प्रश्न का उत्तर जानना आवश्यक है तभी हम विज्ञान एवं आर्थिक-सामाजिक व्यवस्था के बीच के संबंधों को समझ सकेंगे।

वास्तव में उस समय रोमन साम्राज्य दास प्रथा के दौर में से गुजर रहा था। ज्ञान-विज्ञान का सारा लाभ दास-स्वामियों की एक छोटी सी श्रेणी ले रही थी। गुलामों की इस ज्ञान तक कोई पहुंच नहीं थी तथा वे अत्यन्त कष्टपूर्ण जीवन व्यतीत करते थे। इन दासों को निठल्ले स्वामियों के द्वारा केवल तक-वितर्क किये जाना आकर्षित नहीं करता था। इसके बजाए उनको एक नये उठे ईसाई धर्म के द्वारा प्रचारित किए जा रहे दया, प्रेम एवं क्षमा करने वाले विचार अच्छे लगते थे। रोमन साम्राज्य के शासक वर्ग ने लोगों पर ईसाई धर्म का बढ़ता हुआ प्रभाव देख कर ईसाई धर्म को पहले तो प्रचार की छूट दी तथा बाद में इसको राजधर्म बना लिया। रोमन सम्राट कोन्सटैनटाईन (Constantine) ने 313 ई. में एक आदेश के द्वारा संरक्षण दिया तथा बाद में एक अन्य सम्राट ने 380 ई. में इसे राजधर्म बना दिया। इसके पश्चात् पादरियों की शक्ति में बढ़ौतरी होती गई तथा प्रत्येक मामले में उन के आदेशों का पालन करना आवश्यक हो गया। तर्क द्वारा सोचने तथा समालोचना द्वारा मामलों का हल ढूंढने के बजाए धार्मिक ग्रंथों में लिखी गई बातों को ही मामले में अंतिम सत्य माना जाने लगा। लगभग एक हजार वर्षो के लिए समस्त यूरोप अंधकार में डूब गया। यह अलग बात है कि मानव विकास को सदा के लिए रोका नहीं जा सकता। 15वीं शताब्दी से मानवता फिर से धर्म की जकड़न से स्वतंत्र होने के लिए अंगड़ाईयां लेने लगी तथा इसी यूरोप में से ही फिर आधुनिक विज्ञान की उन्नति शुरू हुई। 15वीं शताब्दी से लेकर 17वीं शताब्दी तक पुनर्जागरण (Renaissance) का दौर चला, जिसमें ज्ञान-विज्ञान एवं तर्क-वितर्क परम्परा को पुनर्जीवित किया गया। इस पुनर्जागरण के दौरान की गई वैज्ञानिक प्रगति के साथ 18वीं शताब्दी में यूरोप ज्ञान के दौर में पहुंचता है। इसे तर्क का युग (Age of Reason) भी कहा जाता है; क्योंकि मनुष्य अब रूढ़िवादी धारणाओं एवं धार्मिक मान्यताओं पर प्रश्न उठाने लग गया था, जिनके वह तर्क पर आधारित उत्तर चाहता था। इस

मार्ग पर चलने से यूरोपीय देशों की जो तरक्की हुई उससे हम सब भली-भांति परिचित ही हैं।

पाठक सवाल उठा सकते हैं कि यूरोप का यह इतिहास बताने का मकसद क्या है? हमारा इस बात से क्या संबंध है?

हमने इतिहास से ही सबक लेने होते हैं। पहली पीढ़ियों से जो गलतियों हो चुकी होती हैं, उनसे बचाव करना होता हैं जो कुछ यूरोप में चौथी शताब्दी में हुआ, वह हमारे देश में आज हो रहा हैं जिस प्रकार से उस दौर में दास-व्यवस्था के कारण जन साधारण में बेचैनी थी, उसी प्रकार हमारे यहां कार्पोरेट जगत के शोषण ने आम लोगों का जीना दूभर किया हुआ है। जिस प्रकार से दासों की बेचैनी का लाभ उठा कर ईसाई धर्म शक्ति प्राप्त कर गया, उसी भांति हमारे देश के लोगों की बेचैनी का लाभ उठा कर धर्म के आधार पर राजनीति करने वाले लोग देश की सत्ता पर काबिज हो गये हैं। जो लोग पहले धर्म को राजनीति के लिए गुप्त रूप से प्रयोग करते थे, वे भी खुले रूप से धर्म पर आधारित राजनीति करने लग गये हैं। धर्म पर आधारित सोच को वैज्ञानिक सोच से हमेशा खतरा लगा रहता है, इसलिए वैज्ञानिक विचारों को कुचलने के लिए वे हर संभव कोशिश करते हैं। आज जिस प्रकार से वैज्ञानिक विचारों को दबा कर धार्मिक कट्टरता एवं रूढ़िवादी चिंतन को प्रचारित किया जा रहा है, इसके उदाहरण देने की ज़रूरत नहीं है। 'तर्कशील पथ' के पाठक इस से भली-भांति परिचित हैं।

ऊपर वर्णन किये गए घटनाक्रम से ज्ञात होता है कि विज्ञान का विकास केवल वैज्ञानिक आविष्कारों पर ही निर्भर नहीं होता, इसके लिए उसके अनुकूल सामाजिक एवं राजनैतिक व्यवस्था का निर्माण भी आवश्यक होता हैं यदि ऐसा नहीं होता तो वैज्ञानिक आविष्कारों को मानव विरोधी कार्यो के लिए प्रयोग में लाया जायेगा तथा इसी बहाने से वैज्ञानिक चिंतन पर हमले किए जाएंगे जिस प्रकार से अब किये जा रहे हैं।

आज विज्ञान पर हमला कई ढंगों से किया जा रहा है। एक तरफ आधुनिक वैज्ञानिक आविष्कारों के महत्व को कम करके पेश किया जा रहा हैं यह कहा जा रहा है कि विज्ञान ने मानवता के लाभ की अपेक्षा हानि अधिक की है। दूसरी ओर यह भी कहा जा रहा है कि ये आविष्कार तो हमारे पूर्वजों ने पहले ही कर दिये थे। तीसरा, उपग्रह छोड़ने जैसे वैज्ञानिक कार्य करने के समय धार्मिक कर्मकाण्ड कर के वैज्ञानिक विधि पर धार्मिक रंगत प्रदान की जा रही है। चौथा यह कि वे सिर-पैर की धारणाओं को वैज्ञानिक कह कर एक बनावटी विज्ञान खड़ा किया जा रहा है। वैज्ञानिक आविष्कारों के द्वारा बनाए गए प्रचार साधनों का अत्यधिक प्रयोग करते हुए वे आम लोगों के मन में ऐसी अवैज्ञानिक धारणाएं बैठाने में सफल भी हो रहे हैं।

इसका सर्वाधिक निराशाजनक पहलू यह है कि बहुत से प्रगतिशील व्यक्ति भी इस मिथ्या प्रचार का शिकार हो रहे हैं। प्रगतिवादी लहर के साथ जुड़ा रहा एक डॉक्टर सोशल मीडिया पर गाय के गोबर में चूना मिला कर बनाए गये वैदिक सीमेंट की पोस्टें शेयर कर रहा है। एक अन्य भूतपूर्व क्रांतिकारी गौमूत्र में गाय का गोबर मिला कर बनाए गये कथित जीवन-अमृत के साथ कृषि की उपज बढ़ाने के दावे कर रहा है। एक प्रगतिशील संपादक योग एवं नेचरोपैथी की आलोचना से नाराज हो गया है। बहुत से अन्य सुशिक्षित लोग भी इस नकली विज्ञान के प्रचार का शिकर हो रहे हैं।

यहां पर अगला प्रश्न यह खड़ा होता है कि इस वैज्ञानिक दौर में भी ऐसा अवैज्ञानिक प्रचार क्यों कायम रह रहा है? इसका सबसे बुनियादी कारण यह है कि आज विज्ञान का प्रयोग मानव जीवन को बेहतर बनाने के बजाए संसाधनों पर काबिज लोगों के द्वारा इसको मुनाफा कमाने हेतु किया जा रहा है। विज्ञान के इस मुनाफे वाले दुरुपयोग के कारण ही पर्यावरण की तबाही, प्रकृतिक संसाधनों का खात्मा, अमीरी-गरीबी की खाई का और अधिक बढ़ जाना, मनुष्य द्वारा तकनीक का स्वामी होने के बजाय उसका गुलाम हो जाना, मानव जीवन का संयमित एवं रचनात्मक होने के बजाए यांत्रिक ढंग को हो जाना, युद्धों का विध्वंसात्मक सामर्थ्य का बढ़ जाना इत्यादि बुराइयां उत्वन्न हो जाती हैं। विज्ञान विरोधी सोच वाले लोगों द्वारा इन बुराइयों को मुनाफा आधारित व्यवस्था का परिणाम मानने के बजाए इनको विज्ञान की देन कह कर विज्ञान का विरोध करने के लिए इस्तेमाल किया जा रहा है। वे स्वयं विज्ञान की समस्त सुख-सुविधाओं का उपभोग

करते हैं परंतु चिंतन के स्तर पर वैज्ञानिक उन्नति की निंदा करते हैं। वास्तव में वैज्ञानिक आविष्कारों के साथ जो वैज्ञानिक सोच जुड़ी होती है वे उस सोच के फैलने से भयभीत रहते हैं। वैज्ञानिक विकास के साथ रूढ़िवादी परंपराएं टूटती हैं। रहस्मयी दिखने वाली परिघटनाओं की सच्चाई सामने आती है। जिस के कारण उनके दबदबे को खतरा खड़ा होता है।

वर्तमान दौर में मानवता जिस पड़ाव पर पहुंच चुकी है तथा विज्ञान जिस प्रकार से रोजाना जीवन का अंग बन चुका है, उसके कारण से विज्ञान विरोधी सोच का यह दौर लम्बे समय तक तो नहीं चल सकेगा परंतु इस दौर में विज्ञान की ज्योति को जगाए रखना आवश्यक है। विज्ञान की ज्योति की प्रज्वलित किये रखने के लिए हमें यह समझना आवश्यक है कि जीवन के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में विज्ञान की मानव जीवन को क्या देन है? विज्ञान एवं टेक्नालॉजी में क्या संबन्ध है? टेकनालॉजी के दुरुपयोग से जो नई समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं, उनके लिए उत्तरदायी कौन है?

किसी चीज के प्रयोग एवं दुरुपयोग के बारे में अग्नि के उदाहरण से समझा जा सकता है। विज्ञान का प्रथम आविष्कार अग्नि को माना जाता हैं जब आदि मानव ने आग जलाना सीख लिया तो उस के हाथ में एक बड़ी शक्ति आ गई। आग से डर कर जंगली जानवर उससे दूर रहने लगे, उसका सर्दी से बचाव होने लगा तथा अन्य और भी कई लाभ हुए कि उसका जीवन पूर्णरूप से बदल गया। परंतु वह इस अग्नि के साथ जंगल भी जला बैठता था। बाद में वह इस आग से दुश्मनों के घरों को भी जलाने लग गया। परंतु इस का अर्थ यह नहीं बनता था कि मानव अग्नि को जलाना ही छोड़ दे।

इस बाबत भी स्पष्ट होना चाहिए कि दुरुपयोग केवल टेक्नालॉजी का ही नहीं होता, मानवीय परिघटनाओं का भी होता है; राजनीति के दुरुपयोग से लाखों लोगों का जीवन घटिया बना कर रखा जाता है। सांस्कृतिक रीति-रिवाजों के दुरुपयोग से लोगों की इच्छाओं एवं भावनाओं की हत्या की जाती है तथा बहुत बार शारीरिक हत्या भी कर दी जाती है। और भी अनेकों उदाहरण दिये जा सकते हैं। परंतु इन मामलों में इन परिघटनाओं के अनुचित प्रयोग के खिलाफ बोला जाता है जबकि विज्ञान एवं टेक्नालॉजी के दुरुपयोग समाप्त करने के बजाए विज्ञान एवं टेक्नालॉजी की ही निंदा की जाती है।

इस सारे मसले को स्कूल स्तर की शिक्षा के दौरान लिखे जाने वाले निबंध 'विज्ञान के लाभ हानियां' वाले स्तर पर खड़े हो कर नहीं समझा जा सकता। अतः विज्ञान ने मानव जीवन को पहले से बेहतर बनाने में किस प्रकार का योगदान डाला? जो नई समस्याएं उत्पन हुई, उनके पीछे क्या-क्या कारण विद्यामान हैं? वैज्ञानिक उन्नति के समाज एवं संस्कृति पर क्या प्रभाव पड़े, और वैज्ञानिक तरक्की के साथ मानव किस प्रकार की प्राप्तियां कर सकेगा तथा उसको किस प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा, इन बातों को समझने के लिए 'तर्कशील पथ' के पाठकों के लिए एक लेख लड़ी शुरू की जा रही है, जिस में मानव जीव एवं समाज के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में विज्ञान का योगदान, नई संभावनाएं तथा चुनौतियों के बारे में चर्चा की जायेगी।

-हिंदी अनुवादः बलवंत सिंह लेक्चरार

ईश्वर का कोई अस्तित्व नहीं'

ABP News report

स्विटजरलैंन्ड जेनेवा वैज्ञानिक शोध संस्था ने यह खुलासा किया है कि दुनिया किसी ईर्श्वर ने नहीं बनाई है, बल्कि 'कवाकॅ लेबोनेन' नाम के कणों से निर्मित हुई है, जिसकी वजह से 'ब्रह्मांड' यानि कि दुनिया निर्मित हुई है, दुनिया बनाने वाला इस कण की शोध को वैज्ञानिक दुनिया की सबसे बडी शोध बताते हैं ।

यह खोज 1980 से शुरू की थी जिसमें विर्श्व भर के वैज्ञानिकों की टीम कार्यरत थी, जिसमें भारत से 'बलदेव राज डावर' नामक वैज्ञानिक भी शामिल थे और महावैज्ञानिक 'हीग बोशन' भी शामिल थे, उन्होंने यह परीक्षण दो बार किया और नतीजा एक जैसा ही आया और सिद्ध किया कि 'कवाकॅ लेबेनोन' नाम के कणों ने एक प्रचंड शक्ति से पृथ्वी, जल, हवा, सूरज, चांद, पेंड पौधे स्वयं निर्मित किए है, इसके पीछे कोई ईश्वर का करिश्मा या चमत्कार नहीं है ।

आत्ममुग्धता (Narcissism): विचित्र मानसिक बीमारी जो सामाजिक समस्याओं को जन्म देती है!

-डॉ. पुरुषोत्तम लाल मीणा, जयपुर

हमारे आसपास में कुछ लोग जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष कल्पनालोक में सपने देखते हुए गुज़ार देते हैं। ऐसे लोग सोचते हैं कि वे जैसी कल्पनाएं करते हैं 'जिन्हें वे अकसर योजनाओं का नाम देते हैं', साथ ही दावा करते हैं उनकी वे सभी योजनाएं 100% सफल होंगी। वे 99% की तो बात ही नहीं करते। उन्हें 'विश्वास', जिसे अति आत्मविश्वास कहना ठीक होगा, होता है कि उनका जीवन यानी भविष्य सारी दुनिया या कम से कम उनके आसपास के लोगों से तो निश्चय ही श्रेष्ठ होगा। यदि कोई एक भी इनके इन काल्पनिक विचारों को समर्थन देने वाला मिल जाये तो, वे सातवें आसमान पर उड़ने लगते हैं। इन लोगों को अपने स्वार्थी दोस्तों के अलावा कोई भी अच्छा नहीं लगता है। मगर वे अपने दोस्तों को स्वार्थी मानने को तैयार नहीं होते।

आत्ममुग्धता Narcissism से ग्रस्त होने की एक मात्र तो नहीं, लेकिन इसकी एक बड़ी वजह यह हो सकती है कि बचपन में जिन बच्चों की उपेक्षा या अनदेखी की जाती है या इसके ठीक विपरीत, जिनका जरूरत से ज्यादा ख्याल रखा जाता है। ऐसे बच्चों के आत्ममुग्धता से ग्रस्त होने की आशंका बढ़ जाती है। मनोवैज्ञानिक कहते हैं कि आत्ममुग्ध लोग दंभ भरा रवैया रखते हैं, खुद को दूसरों से बेहतर समझते हैं, जरूरत से ज्यादा आत्मविश्वास से भरे होते हैं, दूसरों का दुःख-दर्द कम समझते 'कम महसूस करते' हैं और उनमें कम शर्म तथा कम पछतावा होता है। मनोवैज्ञानिक आत्ममुग्धता को इंसानों का स्याह पहलू (Dark Aspect) मानते हैं। ये कुछ-कुछ वैसा ही है, जैसी 'साइकोपैथी (Psychopathy), एक तरह का पर्सनैलिटी डिसऑर्डर और 'सैडिज्म Sadism परपीड़ा-आसक्ति', दूसरों के दुख में खुशी होने की आदत। यद्यपि मैं इस सैडिज्म वाले तथ्य से अधिक सहमत नहीं हूं।

बीबीसी द्वारा समय-समय पर प्रकाशित शोधों के तथ्यों से यह भी प्रमाणित हुआ है कि आत्ममुग्ध लोग अक्सर दूसरों के रचनात्मक विचारों और सहयोगी व्यवहार को भी अपने विरुद्ध मानते हैं। ऐसे लोग कई बार असुरक्षा की भावना (Feeling of Insecurity) से भी घिरे होते हैं। लेकिन यदि किसी योग्य काउंसलर की सलाह से वे आत्ममुग्धता के नकारात्मक पहलु से मुक्त हो जायें तो किसी भी क्षेत्र या निजी जिन्दगी में, वे दूसरों की तुलना में अधिक तथा तेजी से कामयाब हो सकते हैं। शोधकर्ताओं का कहना है कि आत्ममुग्ध लोगों में एक किस्म की 'मानसिक मजबूती (Mental Strength) भी होती है। जिसकी वजह से वे निराशा से जल्दी उबर पाने में सक्षम होते हैं। ऐसे लोगों के बारे में कुछ अनुभवजन्य तथ्य, जो यद्यपि सभी आत्ममुग्ध लोगों में समान रूप से नहीं पाये जाते, लेकिन कमोबेश सभी में पाये जा सकते हैं:-

1. अपवादों को छोड़ दिया जाये तो ऐसे लोगों का जीवन, विषाद, पश्चाताप, चिंता, तनाव, मायूसी, अभाव और अनेकों बीमारियों से भरा हुआ होता है, क्योंकि उन्हें खुद को कल्पनाओं में निहारने या खुद की कल्पना के अनुसार स्वप्न देखने और उन्हें पूरा करने से अधिक कुछ भी अच्छा नहीं लगता है।

2. इस कारण समय पर जागने, नहाने, अच्छा दिखने या अच्छे कपड़े पहनने तक की उन्हें कोई परवाह नहीं रहती। उनकी दिनचर्या सुनिश्चित नहीं होती। आखिरकार, वे सूख कर कंकाल हो जाते हैं। अनेक बार ऐसे लोग सबसे अलग यूनिक और एक्सक्लूसिव (Unique and Exclusive) दिखने की चाह से भी ग्रस्त रहते हैं। इस चाहत में हर एक्सक्लूसिव चीज उन्हें अपनी तरफ खींचती है और वे अपनी जेब पर ध्यान दिए बिना ही अनाप-शनाप खर्च करके अपने शौक पूरे करते देखे जा सकते हैं, क्योंकि उन्हें लोगों के आकर्षण का केंद्र बनना या विशिष्ट दिखना होता है। इस प्रक्रिया में वे खुद तो तनाव ग्रस्त रहते ही हैं, साथ ही उनके स्वजन या आसपास रहने वाले भी उनसे परेशान रहने लगते हैं।

3. आत्ममुग्ध लोग खुद को बचाने या खुद के

काल्पनिक लक्ष्य को हासिल करने के लिए किसी भी हद तक जा सकते हैं। ऐसे लोग विशेषकर तब जब उन्हें अपनी और अपनों की भावनाओं में से किसी एक का चुनाव करना हो तो वे निश्चित रूप से किसी और की भावनाओं की तनिक भी कद्र नहीं करते या बहुत कम परवाह करते हैं। हालांकि कहते यही रहते हैं कि उन्हें दूसरों की बहुत ज्यादा परवाह है। ऐसे लोग अपने लिए दूसरों का फायदा उठाने से पहले एक बार भी नहीं सोचते हैं। इस कारण उन पर स्वार्थी होने का ठप्पा भी लग जाता है। उनके व्यक्तित्व का यही हिस्सा उनके लिये प्यार और दोस्ती में रुकावट भी बन सकता है। जिससे वे आहत होते रहते हैं, लेकिन आत्मालोचन करने के बजाय दूसरों को दोषी ठहराते रहते हैं।

4. ऐसे लोगों की मनोस्थिति कुछ भी शारीरिक श्रम करने की नहीं रह पाती। यहां तक कि उनके जीवन में एक ऐसा समय भी आता है, जबकि उन्हें यौन सम्बन्धों में ऊर्जा खर्च करना भी, श्रमसाध्य कार्य लगता है। इस कारण यदि इनका समय पर विवाह नहीं हो तो विवाह करने से भी कतराने लगते हैं। विवाह हो जाने में पर इनमें से कुछ आश्चर्यजनक रूप से बदल जाते हैं!

5. एकाकीपन के कारण, लगातार एक के बाद एक असफलताओं और आर्थिक अभावों के कारण इतने निराश तथा कमजोर हो जाते हैं कि इनमें से अधिकांश में आत्मघाती प्रवृति जन्म लेने लगती है। ऐसे लोग खुद भी मानते हैं कि अगर वो अपनों के प्रति संवेदनशील बन जायें और अपने आप को किसी आशंका या भय से संचालित होने दें, तो वे आत्मघाती प्रवृत्तियों की तरफ तेजी से बढ सकते हैं। वे विचित्र उधेड़बुन के शिकार रहते हैं। इनमें से कुछ आत्मघात कर लेते हैं। अन्यथा ऐसे लोगों के जीवन के अंतिम वर्ष पछतावा, दुःख, अपमान, उपहास, अनेकों बीमारियों और मानसिक तथा शारीरिक पीड़ा से भरे हुए होते हैं।

स्वास्थ्य संबंधी ऐसे ही अनन्य विषयों की जानकारी और उनके समाधान जानने हेतु आपका मेरी हेल्थ वेबसाइट पर स्वागत हैः

https://bit-ly/37B8QvP]

6. सबसे दुखद पहलु तो यह है कि उनका कोई शुभचिंतक, उनको कुछ समझाना चाहे तो वे लोग अपने आप को भीड़ से अलग विशिष्ठ, सर्वश्रेष्ठ और अपवाद कहने और सिद्ध करने लग जातं हैं और अपने काल्पनिक दिवास्वप्नों के विरुद्ध एक शब्द भी सुनना पसंद नहीं करते!

7. किसी शराबी की भांति इन्हें काल्पनिक दिवास्वप्नों में विचरण करते रहने की लत पड़ जाती है। जिससे उन्हें आत्मरति यानी आत्मनिर्भरता (Self reliance) की सुखानुभूति होती है।

8. सामान्यतः अन्य सभी मामलों में ऐसे लोग, आम नागरिकों जैसे ही सौम्य और सरल होते हैं, लेकिन ऐसे लोग इतने लापरवाह या मूर्ख भी होते हैं कि काल्पनिक दिवास्वप्नों की सुखानुभूति में इस कदर खोये रहते हैं कि उन्हें खुद के अमूल्य जीवन के बहुमूल्य वर्षो की निरर्थक बर्बादी तक का अहसास नहीं हो पाता है।

9. ऐसे लोग अपने आप के जीवन को बार-बार दांव पर लगाते रहते हैं। इस तरह के व्यक्ति को अपने से अधिक कुशल, चतुर, बुद्धिमान, श्रेष्ठ और ज्ञानी कोई अन्य नजर नहीं आता। हर व्यक्ति, वस्तु और विचार की बुराई करना और उसे नकारना इनकी प्रवृत्ति हो जाती है।

10. परिवार के कुछ लोग उन्हें स्वार्थी भी बोलते हैं, जो पूरी तरह से गलत नहीं होते, क्योंकि ऐसे लोग अपने कभी न पूर्ण हो सकने वाले दिवास्वप्नों के कल्पनालोक में विचरण करते समय, अपने परिवारजनों की आकांक्षाओं और उम्मीद की लेशमात्र, यानी तनिक भी परवाह नहीं करते।

11. सच तो यह है कि उन्हें कभी न पूर्ण हो सकने वाली अपनी कल्पनाओं के स्वप्नलोक से बाहर निकलकर सोचने और समझने की फुर्सत ही नहीं मिलती या जरूरत ही महसूस नहीं होती। यही वजह है कि स्वजनों या सम्बन्धियों के बहुत अच्छे विचारों का उन पर तनिक भी असर नहीं होता, बल्कि अनेक बार ऐसे लोग समझाइश देने वालों को अपना दुश्मन समझ बैठते हैं और उनसे दूरी बना लेते हैं।

2. ऐसा इसलिये होता है, क्योंकि जो लोग अपनी बेसिरपैर की कल्पनाओं पर आधारित दिवास्वप्नों की सुखानुभूति में अपने खुद के जीवन के अमूल्य वर्षो और अपनी जवानी तक को, भेंट चढा सकते हैं या चढा चुके होते हैं, उन्हें इस बात की

फुर्सत ही कहां होती है कि वे इस ओर ध्यान दे सकें कि उनके ऐसे मूर्खतापूर्ण या जिद्दी व्यवहार के कारण उनके स्वजनों को किस प्रकार की असहनीय वेदनाओं तथा तनावों से गुजरना पड़ रहा होता है?

3. सच तो यह है कि ऐसे लोगों को आत्ममुग्धता (Narcissism) की मानसिक बीमारी होती है। जिसे वे अपनी विलक्षण प्रतिभा समझ बैठते हैं। जिसके कारण उन्हें दूसरे लोग बेवकूफ या नासमझ या कमतर लगने लगते हैं। इसे मनोविज्ञान की भाषा में NPD याने नार्सीसिस्ट/नार्सिसिज्म पर्सनैलिटी डिसऑर्डर (Narcissist/Narcissism Personality Disorder) कहा जाता है।

14. तथ्यात्मक दृष्टि से आत्ममुग्धता व्यक्ति विशेष का मनोविकार है, लेकिन इसके दुष्परिणाम सम्पूर्ण परिवार और अंततः समाज को भुगतने होते हैं। अतः आत्ममुग्धता मनोविकार के साथ-साथ सामाजिक बीमारी भी है। आत्ममुग्धता यानी NPD से ग्रसित लोग अपनी क्षमताओं को बढ़ा-चढ़ा कर बताने, इर्ष्या, द्वेष और बनावट का सहारा लेकर अपने आप को श्रेष्ठ साबित करने की कोशिश में अनेक बार हास्यास्पद हो जाते हैं। एक सर्वे के अनुसार तमाम तरह के अपराधों के पीछे विभिन्न प्रकार के मनोवैज्ञानिक कारण पाए जाते हैं, जिनमें से NPD भी एक बड़ा कारण है। अपनी आत्ममुग्धता को दूसरों की नजर में सम्मान न मिलते देख इस तरह के व्यक्ति अवसाद ग्रस्त हो जाते हैं और धीरे-धीरे इनमें आपराधिक तथा आत्मघातिक प्रवृत्तियां जन्म लेने लगती है।

15. दिवास्वप्नों के कल्पनालोक में विचरण करने वाले, आत्ममुग्धता से ग्रसित इन लोगों को किसी ऐसे काउंसलर की जरूरत/तलाश भी होती है, जिसे पर वे 100% विश्वास कर सकें। क्योंकि वे हमेशा शंका करते रहते हैं कि उनका काउंसलर अंदर ही अंदर उनके परिवारजनों से मिला हुआ तो नहीं है। जरा सा भी संदेह होने पर उन्हें लगने लगता है कि काउंसलर भी परिवाजनों के इशारे पर समझाइश के नाम पर, उन्हें अपने लक्ष्य से भटका रहा है।

अंतिम निष्कर्षः बेशक ऐसे लोग परिवारों के लिये कभी न ठीक हो सकने वाले फोड़े की तरह लगातार दर्द देते रहते हैं और खुद भी अनेकों प्रकार का दर्द सहते रहते हैं, लेकिन फिर भी जैसे पीड़ित व्यक्ति कभी ठीक न होने वाले फोड़े का पूरा-पूरा ध्यान रखता है। ठीक उसी प्रकार से ऐसे लोगों से लड़ने-झगड़ने के बजाय, जैसे फोड़े की विशेष देखभाल की जाती है, उसी भांति, ऐसे लोगों के स्वस्थ होने तक यानी कल्पनालोक से बाहर निकलने तक, उनकी भावनाओं की सजगता एवं सतर्कता पूर्वक अतिरिक्त तथा विशेष परवाह करने की जरूरत होती है। यद्यपि ऐसे आत्मुग्धता से पीड़ित लोग इसके बदले में परिजनों को धन्यवाद तक नहीं बोलते हैं। बल्कि इसके विपरीत अतिरिक्त देखभाल से यह खतरा भी बना रहता है कि इस अतिरिक्त देखभाल को ऐसे लोग अपना अधिकार समझ बैठते हैं। इस विषय को अंतिम रूप देने से पहले यह लिखना भी जरूरी समझता हूं कि एक सुशिक्षित नार्सिसिस्ट अपने कार्यस्थल पर दूसरे लोगों में जोश भर देने में सक्षम हो सकता है। उनके आत्मलीन रहने की भावना और दूसरों को अपना महत्व मनवाने की आवश्यकता प्रेरणादायी बल की तरह काम करती है, जो उन्हें किसी और के मुकाबले कड़ी मेहनत और बेहतर काम करने के लिए प्रोत्साहित करती है। उनका आकर्षण, बात करने का कौशल और जोखिम लेने की उनकी प्रवृत्ति, उन्हें संपूर्ण लीडर बनाती है! शोधों के मुताबिक, कुछ नियोक्ता 'काम देने वाले' लोग लीडर की भूमिका के लिए किसी नार्सिसिस्ट शख्स की ही तलाश करते हैं।

०००

मनुष्य के बारे में.....

जंगल का कानून है, लट्ठ भैंस का न्याय
अब भी कितना पाशविक, यह मानव-समुदाय।
एक तिहाई लोक को, नहीं पेट भर अन्न
व्यर्थ गर्व करता मनुज, मैं विवेक सम्पन्न।
कहने को संस्कृत हुई, मानव की सन्तान
वही दमन, शोषण मगर, कहां बनी इन्सान?
जोर जुल्म, छीना-झपट, हत्या हाहाकार
दानवीय कितना अरे, यह मानव संसार।
आधी जनसंख्या अभी, भूखी दलित, गुलाम
धिक् मानव की प्रगति है, धिक् इसका विज्ञान।

-अज्ञात

(पाश के शहीदी दिवसपर विशेष)

पाश को स्मरण करते हुए

-डॉ हरीश मल्होत्रा ब्रमिंघम
मो. 44763013424

23 मार्च,1988 को बाद दोपहर जब पाश के कत्ल के बारे में मुझे पता चला तो भारी कदमों एवं पथराई आंखों के साथ मैं घर की ओर चल पड़ा। कि उनके रिश्तेदारों के पास जाकर मैं ढांढस बंधा सकूं। रिश्तेदारों के घर गया तो वह घर खाली था। मैंने घर की घंटी बजाई, दरवाजा खटखटाया परंतु सब कुछ पाश की भांति अब चुप था। मैंने बांवरों की भांति सड़क पर तीन-चार चक्कर काटे। मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि उसके रिश्तेदार इस समय कहां पर चले गए हैं। मुझे इस सड़क पर न तो कोई मेरा परिचित तथा न ही कोई भारतीय दिखा जिसके पास से में उनका अता-पता पूछ सकूं। मैं मन ही मन में तड़प रहा था। मेरा रोना मेरे गले में ही फंसा पड़ा था। आंखें रोष एवं आंसुओं से तर थीं। सवेरे का मैं भूखा था। घर आ कर कोई चीज खाने को मन नहीं माना। मैं कंबल लेकर बिना किसी से कोई बात साझा किये, तबीयत ठीक न होने की बात कह कर बेड पर लेट गया।

मुझ से जार-जार रोया नहीं जा रहा था तथा न ही मुझे नींद आ रही थी। मेरे दिमाग में पाश की यादें घूम रहीं थीं, कि जब तीन वर्ष पूर्व 1985 में मैं भारत में गया था तो अपने गांव में मास्टर सुरिन्द्र से पूछा था कि पाश के साथ मेरी मुलाकात करवा दो तो उसने कहा था, 'किसी दिन उसके गांव में चल पड़ेंगे।' मेरे मन में एक इज़्जत, एक सम्मान एवं श्रद्धा की हद तक प्रेम भरा पड़ा था कि क्रांतिकारी कवि पाश मेरे पड़ोसी गांव का है, मेरे इलाके का है, मेरा हम उम्र है, मेरी सोच वाला है, पाश मेरा अपना हैं। सुरिंद्र मुझे दोबारा मिल न सका तथा गांव में मैं अधिक दिन तक रह न सका। पाश के साथ मेरा मिलन न हो सका। मैं इस प्यास को साथ लिए ब्रिटेन वापिस आ गया। मैं अधिक दिनों तक गांव में रहने से डरता भी था। यह डर उस समय और भी बढ़ गया जब मेरे एक पत्रकार मित्र ने मुझे मिलिटेंटों से बच कर रहने के लिए आगाह किया था।

कालेज के दिनों में वर्ष 1971-72 में गांव के छिंदे (मास्टर सुरिंद्र) बारे पता था कि वह नक्सलियों के साथ मिला हुआ है। कवि पाश भी उसके साथ ही है। बस इससे अधिक पाश के बारे में मुझे पता नहीं था। नकोदर निवासी मेरे एक मित्र ने भी बताया था कि उनके शहर में किसी फोटोग्राफर को पुलिस ने पकड़ लिया था कि वह नक्सली है तथा वह घर की दीवार से छलांग लगा रहा था जब पुलिस ने छापा मारा था। यह फोटोग्राफर-जब अमरजीत चंदन विलायत में मिला तो और कोई नहीं-यह अमरजीत चंदन ही था। सिंघा गांव का मेरा पंजाबी अध्यापक हिम्मत सिंह भी इन्हीं के ग्रुप का था। मुझे याद है जब मेरा एक ग्रामवासी मुझे बताता था कि हिम्मत को पुलिस ने पकड़ कर उसकी बहुत पिटाई की थी। उसने पुलिस वालों पर लाठी तान दी थी कि अब हम इन्कलाब लेकर ही आंएगे। उस समय मैं इन सभी की ओर बहुत चाव एवं भय के साथ देखता था कि मैं भी तुम्हारे साथ हूं। परंतु मेरे घर वालों तथा मेरी पढ़ाई ने मुझे घर से हिलने नहीं दिया। मुझे याद है जब एक बार मुझे एक पत्रिका 'लोक-युद्ध' मेरे ग्रामवासी मित्र कंडक्टर ने दिया था कि उसे यह बस में से मिली है। उस दोस्त ने यह भी बताया था कि 'यह नक्सलबाड़ियों की है, पुलिस वालों ने इसे देख लिया तो वे तुम्हारी पिटाई कर देंगे।' मैंने चोरी-चोरी पढ़कर उसे वापिस दे दिया था। मुझ में उस समय राजनीतिक तौर पर कच्चापन था। मैं अपने उस मित्र के साथ कथित नक्सली बना फिर रहा था। जवानी के जोश में मैंने अपनी दाढ़ी-मूंछ भी बढ़ा ली थी और अपनी कमीज के बटन खोल कर पूरी अकड़ के साथ करता था। मैं नया-नया रूसी साहित्य पढ़ रहा था। कालेज मेरे एक दोस्त की बढ़ी हुई दाढ़ी एवं मूंछें देखकर उसका नाम नक्सली रख दिया था। जब भी हम मजाक के साथ उसे नक्सलबाड़ी कह देते तो वह क्रोधित हो जाता। परंतु जब पाश ब्रिटेन में आया तो मुझे अजमेर कावेंट्री ने फोन पर बताया कि पाश

ब्रिटेन में अपने रिश्तेदारों के पास आया हुआ है। मैं झटपट फोन डायल कर के एक जोश के साथ उसके बोल सुनने के लिए उतावला हो उठा। एक-दो मिनट के पश्चात् ही पाश के साथ बातचीत होने लग गई। मुझे समझ में ही नहीं आ रहा था कि उसके साथ बातचीत कहां से आरम्भ करूं। सरसरी तौर पर हालचाल पूछ कर उससे सायं काल के समय मिलने का वचन ले लिया। उसी शाम को अजमेर कावेंट्री भी मेरे घर पर आ गया। हम दोनों ने पाश के रिश्तदारों का दरवाजा खटखटाया और बताया कि हरीश एवं अजमेर दोनों पाश को मिलने के लिए आये हैं। सीढ़ियों से नीचे की ओर भागते हुए आए पाश पूरे जोश के साथ हमसे आलिंगनबद्ध हो कर मिला। नहीं-नहीं करते हुए चाय पीने के पश्चात् हम पाश को बाहर ले आए और आकर मेरे घर में डेरे लगा लिए। बीयर खोल कर जब मैंने पाश के हाथों में पकड़ाई तो उसने थोड़ा शर्माते हुए पूछा 'क्या मैं सिग्रेट पी सकता हूं?' 'कामरेड, चाहे हुक्का पी लो' मैंने उत्तर दिया। थोड़ी देर के बाद जैसे पाश का दम घुटने लग पड़ा हो और हम मेरे घर के पीछे मीलों-मील बिछे हुए खुले खोतों की ओर चल पड़े। खेतों को देख कर पाश का मन जैसे खिल गया हो, 'वाह! यह तो बहुत सुन्दर है।'

अजमेर और मैं अब पाश को ब्रिटेन की राजनीति और लोगों के संघर्ष के बारे में बता रहे थे। हमारे तर्कपूर्ण विश्लेषण को वह ध्यानपूर्वक सुन रहा था। नस्लवाद जैसे भयंकर हथियार को श्वेत लोग किस प्रकार से प्रयोग में लाते हैं, सुन कर पाश हैरान हो रहा था। हम निजी अनुभवों से लेकर पुस्तकों से उदाहरण भी साथ-साथ दे रहे थे। तकरीबन चार घंटे की मुलाकत ने आनन्द विभोर कर दिया था कि एक जैसी सोच वाले मानसिक स्तर वाले व्यक्ति कैसे एक दूसरे की ओर आकर्षित हो जाने पर सार्थक बातचीत में व्यस्त हो जाते हैं।समय बीत जाने का हमें पता ही न चला।

इस मुलाकात के बाद पाश से कई बार मुलाकात हुई। सायंकाल को उस का फोन आ जाया करता था अथवा मैं स्वयं ही कर लिया करता था। घर के अन्दर बैठ कर वह प्रसन्न नहीं था और हर बार वह बाहर खेतों में जाने के लिए व्याकुल हो उठता। मैंन गांव वाले ब्राह्मणों के छिन्द्र (मास्टर सुरेंद्र), हिम्मत सिंह मास्टर से लेकर करनैल निज्झर तक पाश के साथ बातें कीं। नक्सलबाड़ी लहर के बारे में बातें करते हुए मैंने पाश से कहा था-'नक्सलबाड़ी लहर का दौर हमारा इतिहास है। बात अनुचित अथवा उचित पैंतरे की नहीं परंतु उस को तरतीब के साथ लिखने के आवश्यकता है। हम यह कार्य क्यों नहीं करते ताकि जिस-जिस ने इस संग्राम में भाग लिया उसका पता चले।' पाश चुप हो गया तथा सोचने लग गया। मैं फिर से शुरू हो गया-'इस इतिहास को उपन्यास अथवा वैसे ही गद्य रूप में लिखा जा सकता है। यदि आप अथवा और कोई नहीं लिखना चाहता तो अमरजीत से यह लिखने के लिए कह दो।' अब उसकी आंखों में चमक आ गई-'हां अमरजीत को लिखना चाहिए। उसके साथ बात करेंगे।'

अमेरिका में बैठे कामरेडों के बारे में पाश ने खुल कर बातचीत की, 'उन्होंने तो एक प्व्यक्ति पूर्णकालिक तौर पर नौकरी की भांति रखा हुआ है। जो खालिस्तानियों की गतिविधियों का पूरा ख्याल रखता है।'

'हैं! तो फिर वह खाना कहां से खाता है?' मैंने सवाल किया। 'उसे बाकी कामरेड वेतन की भांति अपनी जेब से राशि एकत्र कर के देते हैं। '

मुझे यह सुनकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई। पाश मुझे बताता रहा-'अमेरिका में खलिस्तानी हम से भय खाते हैं। वहां का टी.वी., रेडियो एवं अखबारें हमारी बात को उभार कर लिखते हैं। खलिस्तानियों के पास कोई तर्क नहीं, उसी कारण वे हामरे साथ बहस नहीं कर सकते। हमने गुरुद्वारों के सम्मुख जाकर कई बार उनसे झड़पें कर के उनका भगाया है। खालिस्तानियों में तर्क का कोई स्थान ही नहीं है। ये तो कांग्रेसियों से भी बुरे हैं। कांग्रेसियों ने कम से कम व्यक्तिगत स्वतंत्रता का अधिकार तो नहीं छीनता कि तुम कौन से कपड़े पहन सकते हो। केश दाढ़ी-मूंछों को रखो चाहे साफ करो। खलिस्तानिये अपने नैतिक मूल्य हम पर ठोसने की बात करते हैं। नाइयों, दर्जियों एवं खटीकों की दुकानें बन्द करवाना कहां की इन्सानियत है? पाश अब अत्यधिक धैर्य के साथ बातें कर रहा था। कांग्रेस का हाल यह है कि उनको पता होने के बावजूद कि कामरेड इन सिरफिरे खालिस्तानियों के विरुद्ध हैं, फिर भी जब किसी

साधारण व्यक्ति की हत्या हो जाती है तो पुलिस कामरेडों को पकड़ कर ले जाती है। यह बात मेरे साथ भी कई बार हो चुकी है। कामरेडों को दोहरी लड़ाई लड़नी पड़ रही है, खलिस्तानियों के साथ तथा कांग्रेस के साथ भी।

ब्रिटेन के मुकाबले में भारत में भ्रष्टाचार एवं रिश्वतखोरी के बारे में बात करने लगा, 'क्या-कभी हमारे देश में से भी यह गंदगी दूर हो सकेगी? वहां पर अफरातफरी पड़ी हुई है। जाति-पाति एवं धर्म ने दिमागों को बींध कर रखा हुआ है। यह सब देखकर मन उदास हो जाता है। तुम्हें पता है कि जब रूस में क्रांति हुई तब वहां पर भी यही कुछ था। बात तो सरकारी ढांचे को बदलने की है।' 'हां, मैं यह मानता हूं परंतु क्या कभी भारत में क्रांति आयेगी भी कि नहीं,' मैंनें सवाल किया।

'हां, आयेगी। परंतु वक्त के बारे में कुछ कहा नहीं जा सकता। अपना काम कोशिश करना है तथा वह हम कर रहे हैं।'

सायंकाल को जब पाश घर वापिस आया तो मेरे दो सामाजिक कार्यकर्ता मित्र घर में आये बैठे थे। हम सभी मिल कर पब में चले गये। एक दोस्त अपने इश्क के किस्से सुना रहा था-'मेरी दोस्ती एक थानेदार की लड़की के साथ है।'

'हैं!', आश्चर्य चकित होकर पाश ने कहा। उसे ऐसे लगा जैसे थानेदार की लड़की के साथ मित्रता एक प्रकार से थानेदार से दुश्मनी का बदला लेने वाली बात हो। पाश ने अत्यन्त दिलचस्पी के साथ उसकी सारी वार्ता सुनी। दूसरा दोस्त अपने अफीम खाने के तजुर्बे बता रहा था, 'नशा तो बस अफीम का है। अफीम खा कर व्यक्ति प्रेम में अभिभूत हो जाता है। किसी के साथ लड़ने-झगड़ने को मन ही नहीं करता। इसका अलग ही आनन्द है, उसकी अपनी ही मस्ती है।'

पाश इस बात को सही मानने लगा। 'मुझे भी इसका तजुर्बा है। जब पुलिस वालों ने मुझे पकड़ कर थाने में अत्यधिक पिटाई की तो एक सिपाही को मुझ पर दया आ गई। रात को उसने मुझे थोड़ी सी अफीम खाने के लिए दे दी, जिससे कि चोटों का दर्द कम हो जाएगा। मैंने वह अफीम खा ली, उसके बाद चोटों के दर्द का पता ही न चला।'

मेरा एक लेख 'मेरे महबूब' एक शाम को जब मैंने पाश को पढ़ कर सुनाया तो उसने कहा, 'तुमने अवश्य ही इश्क किया है।' मैंने कहा, 'मोहन, संपादक, 'पंजाबी दर्पण' को यह फिट नहीं लगी। उसका कथन है कि -'भाषा के पैमाने पर तुम बात नहीं बना सके, तुमने सीधी ही चोटें मारी हैं। इसमें चोरी-चोरी वाली चाहत अथवा मोहब्बत वाली खूबसूरती भी नहीं है। तुम्हारी यह सीधी अपरोच अभी पाठकों को फिट नहीं बैठेगी।' 'जब यह पुस्तक के रूप में प्रकाशित हुई तो फिर देखना लोग क्या कहेंगे।' पाश ने मेरा उत्साह बढ़ाया। मेरी प्रथम पुस्तक 'जाली दुनिया' अभी प्रकाशित नहीं हुई थी। उसकी पाण्डुलिपी मैंने पाश को दे दी। वह उसे पढ़ कर अगले दिन मेरे पास आ गया। 'बहुत बढ़िया लिखी है तुमने। मैं इसे पांच-छह बार पढ़ चुका हूं। बहुत दिलचस्प है।' मुझे लगा कि पाश झूठ बोल रहा है और खाली मुझे हवा दे रहा है। कुछ दिन लंदन में जाने के पश्चात् जब वह दोबारा मुझे मिला तो उसने फिर से कहा, 'तुम्हारी पुस्तक की पाण्डुलिपी मैंने कइयों को पढ़ने के लिए दी और कइयों को पढ़ कर सुनाया। मुझे तो यह सारी मौखिक रूप से याद हो गई लगती है।'

'क्या इसमें कोई कमी नहीं दिखी?'

'कमी हो तो दिखे', पाश का उत्तर था। मुझे अभी विश्वास नहीं हो रहा था। अब पुस्तक के प्रकाशित हो जाने पर कई रिव्यू (समीक्षा) प्रकाशित हुए तो मुझे पाश की बात ठीक लगी कि वह मेरी झूठी प्रशंसा नहीं कर रहा था।

पाश को मैंने अपने कई लेख पढ़ कर सुनाए। वह बहुत ध्यानपूर्वक उन्हें सुनता रहा। 'गोरी धरती मेरे लोग' कालम उसके मन को भा गया। जब मैंने पाश को बताया कि 'खालिस्तान या जट्टस्तान' लेख भारत में प्रकाशित हो चुका है तो उसने कान खड़े कर लिए और बोला कि मैं वह लेख उसे पढ़ कर सुनाऊ। काफी ढूंढने के पश्चात् भी वह लेख नहीं मिला। मैं पता नहीं कहां पर संभाल कर रख बैठा था। मोटे रूप में जब मैंने उसे बताया तो वह बहुत खुश हुआ। मैंने उसको बताया कि कामरेडों ने यहां पर यह लेख 'ललकार' में प्रकाशित करने से इनकार कर दिया था। यह सुनकर वह बहुत हैरान रह गया। अब वह लेख मिल गया है पर सुनने वाला पाश अब नहीं रहा।

जिस दिन मैं, पाश एवं के.सी.मोहन मिल कर शेक्सपियर का जन्म स्थान स्ट्रैफोर्ड-अपॉन-एवन देखने के लिए गए तो वह बन्द था। एक होटल में चाय पीते समय पाश ने कहा-'मुझे शेक्सपियर अच्छा नहीं लगता।' मैंने मन में सोचा कि यदि यही बात थी तो फिर भला यहां आने क्या जरूरत थी। परंतु दूसरे पल ही यह ख्याल आया कि चलो इसी बहाने हमने मिल कर घूम-फिर तो लिया। मुझे उस दिन आश्चर्य हुआ था जिस दिन मैंने पाश से पूछा थाकि विलायत का कुछ देखा भी है या नहीं? तो उसने उत्तर दिया था, 'मुझे तो केवल यहां की ये सड़कें या सोहो रोड के बारे में ही पता है।' मेरे मन को ठेस लगी थी कि क्या मैं उसको शहर में ले जा कर लायब्रेरी, अजायबघर, बड़े-बड़े स्टोर एवं बोटेनिकल गार्डन्ज नहीं दिखा सकता? जब मैंने यह बात उसके साथ साझा की तो उसने कहा -'तो तुम मुझे यहां की दुकानें दिखाना चाहते हो?'

गीतों के बारे में बात करते हुए एक दिन पाश ने कहा-'क्या तुम्हारे पास फिल्मी गीत भी हैं? तुम न लेना, मेरे पास सभी प्रकार का माल पड़ा है। अमेरिका में मैंने देखा कि कई कामरेड बस इन्कलाबी संगीत ही सुने हैं। मुझे लगता है कि वह उनका केवल एक उबाल ही है। हर प्रकार का संगीत हमारे जीवन के साथ संबंधित हैं हां, लचर संगीत का हमारे साथ कोई वास्ता नहीं है।

मेरी पुस्तकों को देखते हुए उसने 'जॉय ऑफ सेक्स' पुस्तक पढ़ने के लिए मांगी और दो दिन के पाश्चात् वापिस आया तो कहने लगा, 'मैं बहुत समय से खोज कर रहा रहा था कि झूला झूलने का भला सेक्स के साथ क्या संबंध है। अब इस पुस्तक ने बात स्पष्ठ कर दी है।'

पाश के रिश्तेदार मुझे बताते हैं कि वह हर समय अध्ययन में मग्न रहता था जैसे कि उसने कोई परीक्षा देनी हो। धीदो ने बताया कि भारत में जाने से पूर्व पाश समुद्र में जी भर कर नहाया था। समुद्र से वह अत्यधिक प्रेम करता था। पाश की बहन पम्मी ने बताया, 'मैं उस दिन बहुत खुश हुई जब पाश अपनी पत्नी के साथ महिलाओं के अधिकारों के बारे में बहस कर रहा था तथा भाभी उस बहस में पूर्ण रूप से भाग ले रही थी।'

पाश के साथ बिताए पल, उसके साथ की गई बातें तथा उन स्थानों की ओर देख कर, जहां पर हमने मिल कर वह यादगार समय व्यतीत किया था, उसकी अनुपस्थिति को प्रतिदिन तीखा करते हैं तथा उसकी सोच मुझे प्रति दिन कचोटती है। आतंकवादियों ने पाश के चाचा जी का भी कत्ल कर दिया था। पाश की सोच वाले हम सभी उसके सपरिवार के सदस्य हैं। उसका परिवार छोटा नहीं है। ज़ुल्म का अंत होकर रहेगा। पाश के विचार सदैव जीवित रहेंगे।

-(हिन्दी अनुवादः बलवन्त सिंह लेक्चरार)

परंपरा कैसे जन्म लेती है...

एक कैम्प में नए कमांडर की पोस्टिंग हुई। इंस्पेक्शन के दौरान उन्होंने देखा कि, कैम्प एरिया के मैदान में दो सिपाही एक बैंच की पहरेदारी कर रहे हैं। तो कमांडर ने सिपाहियों से पूछा कि, वे इस बैंच की पहरेदारी क्यों कर रहे हैं? सिपाही बोले 'हमें पता नहीं सर लेकिन आपसे पहले वाले कमांडर साहब ने इस बैंच की पहरेदारी करने को कहा था। शायद ये इस कैम्प की परंपरा है क्योंकि शिफ्ट के हिसाब से चौबीसों घंटे इस बैंच की पहरेदारी की जाती है।'

पिछले कमांडर को वर्तमान कमांडर ने फोन किया और उस विशेष बैंच की पहरेदारी की वजह पूछी। पिछले कमांडर ने बताया, 'मुझे नहीं पता लेकिन मुझसे पिछले कमांडर उस बैंच की पहरेदारी करवाते थे, अतः मैंने भी परंपरा को कायम रखा। '

नए कमांडर बहुत हैरान हुए। उन्होंने पिछले के और पिछले-पिछले 3 कमांडरों से बात की, सबने उपरोक्त कमांडर जैसा ही जवाब दिया। यूँ ही बैक जाते नए कमांडर की बात फाइनली एक रिटायर्ड जनरल से हुई जिनकी उम्र 100 साल थी।

नए कमांडर उनसे फोन पर बोले, 'आपको डिस्टर्ब करने के लिए क्षमा चाहता हूँ सर। मैं उस कैम्प का नया कमांडर हूँ जिसके आप, 60 साल पहले कमांडर हुआ करते थे। मैंने यहाँ दो सिपाहियों को एक बैंच की पहरेदारी करते देखा है। क्या आप मुझे इस बैंच के बारे में कुछ जानकारी दे सकते हैं ताकि मैं समझ सकूँ कि, इसकी पहरेदारी क्यों आवश्यक है।

सामने वाला फोन पर आश्चर्यजनक स्वर में बोला, 'क्या? उस बैंच का ऑइल पेंट अभी तक नहीं सूखा?'

-व्हाट्सएप से

बुवाबाजी (बाबागीरी)

डॉ॰ नरेन्द्र दाभोलकर

यत्र-तत्र-सर्वत्र, सभी सामाजिक स्तरों पर, स्त्री-पुरुष, युवा-सभी सामाजिक स्तरों पर फैला हुआ बुवाबाजी का स्वरूप बहुत ही चिंताजनक है।

बीमारी वही होती है, लेकिन मरीज की स्थिति जैसे ही बदलती है, वैसे ही इलाज करने वाले भी बदल जाते हैं। गांव में रहने वाली अनपढ़ औरतें अपने बीमार बच्चों को लेकर गांव के वैद्य के पास जाती हैं। तहसील वाले छोटे शहर में रहने वाला मध्यवर्गीय मनुष्य उसी बीमारी के इलाज के लिए अपने बच्चे को छोटी-बड़ी उपाधिधारी डॉक्टर के पास जाता है। शहर के उच्च-मध्यवर्गीय मनुष्य के लड़के को वही बीमारी होने पर वह उसका इलाज बालरोग विशेषज्ञ से करवाता है। महानगर में रहने वाले उच्चवर्गीय रईस के लड़के को वही बीमारी होने पर उसके इलाज के लिए अनेक विषयों के विशेषज्ञों और डॉक्टरों की फौज तथा अस्पताल सेवा के लिए तैयार रहता है। बिल्कुल ऐसा ही वर्गीकरण बुवाबाजी के बारे में भी होता है। गांव के अनपढ़ श्रमिकों की समस्याओं का इलाज करने के लिए कोई भगत या देवर्षि को ढूंढा जाता है। एक शिक्षित मनुष्य भी अपनी समस्याओं के उत्तर किसी ज्योतिष द्वार पिंजड़े के तोते द्वारा भविष्य बांचने वाले बाबा के पास जाता है। साथ में ताईत-टोटके भी होते हैं। पढ़ा-लिखा, नौकरी करने वाला, उद्योग-धंधों में व्यस्त मध्यवर्ग नारायाण-नागबली की पूजा में वैभवलक्ष्मी के व्रत में, तो कोई मल्लिनाथ महाराज, नरेंद्र महाराज अथवा अनिरूद्ध बापू में अपनी समस्याओं का हल ढूंढता है। उनकी सेवा में जीवन की सार्थकता मानता है। बड़े-बड़े नेता, नौकरशाह, धनवान उद्योगपति, कलाकार एवं खिलाड़ियों को कोई निर्मला माता, चंद्रास्वामी, भगवान रजनीश अथवा सत्य साई बाबा की याद आती है। जीवन में अब तक जो मिला है और आगे जो कुछ मिलने वाला है, वह सब बाबा की कृपा और उनके आशीर्वाद के कारण मिला है, ऐसा श्रेय वे बुवाबाजी को देते हैं। बुवाबाजी का यह विश्वव्यापी जाल दिमाग को झकझोर देता है।

बुवाबाजी के विरूद्ध संघर्ष में एक सलाह हमेशा दी जाती है कि अनेक स्थानों पर आडंबर, लूटमार, धोखधड़ी हो रही है, उसके विरुद्ध समिति कुछ क्यों नहीं करती? समिति ऐसे ढकोसले का विरोध जरूर करती है लेकिन उसके विरुद्ध संघर्ष करना उसके कार्य का हिस्सा कभी नहीं रहा है। इस संदर्भ में और गहराई से सोचा जाए तो ढकोसले का वास्तविक रूप सामने आएगा। मुद्दा यह है कि किसी भी प्रकार से इलाज करने वाले अथवा चमत्कार दिखाने वाले बाबा-बुवा कम ही होते हैं। कुछ भी न करते हुए जिनके इर्द-गिर्द लोगों की भीड़ रहती है, ऐसे बुवा-स्वामियों की तादाद समाज में अधिक है। उन सभी को बाबा अपने तारणहार ही लगते हैं। चमत्कार और उपचार न करने वाले बाबा अथवा गुरू, यह सब कुछ परमार्थ, ईश्वर भक्ति, ब्रह्मज्ञान के नाम पर ही करते हैं। उनकी ताकत धोखाधड़ी है, उनसे जुड़कर बनती है। ऐसे बुवाबाजी का वर्णन अथवा उसकी व्याख्या 'परमार्थ की चापलूसी' कहकर की जा सकती है। वास्तव में दुखों के कारण और उसके इलाज में विवेकी विचारधारा से असंगत दैववादी भ्रामक कल्पनाएं अनेक अनैतिक रूढ़ियों और गलत परंपराओं का समर्थन करती हैं, प्रश्नों के हल ढूंढने का अवैज्ञानिक मार्ग दिखाती हैं, सभी स्तरों पर लोगों के साथ छलावा और उनका शोषण करती हैं। वह बुवा और उसकी ऐसी कार्यपद्धति ढकोसला कहलाती है। न्याय-व्यवस्था, पाबंदी एवं आंदोलनों के जरिए अन्य क्षेत्र में होनेवाले दोषों को नष्ट किया जा सकता हैं लेकिन सरेआम धोखाधड़ी के मामलों को छोड़कर परमार्थ एवं ब्रह्मज्ञान ऐसे क्षेत्र हैं, जहां पर कानून पहुंच ही नहीं सकता। अधिकांश समाज इस विषय को गहराई से न जानता है, न पहचानता है बल्कि उसकी वैसी कोशिश भी नहीं होती। लोग प्रवाह के साथ बहना चाहते हैं। उसी में खुश रहते हैं, इसीलिए उनके विरोध में

जनांदोलन करें भी तो कैसे?

बुवाबाजी के प्रकारों को देखकर बहुत ताज्जुब होता हैं किसी भी धंधे में शाखा-उपशाखाओं का प्रपंच तो होता ही है। हमेशा बरकत में रहने वाला बुवा का धंधा भी इसका अपवाद नहीं। बाबा, बुवा, गुरू, आदि को अनेक वर्गो में रखा जा सकता है। उनके कार्य के अनुसार उनका वर्ग निश्चित होता हैः

1. मांत्रिक, देवर्षि, भगतः

जिनके काले कारनामों की अखबारों में हमेशा ही चर्चा होती है, वे लोग इस वर्ग में आते हैं। जनसंचार माध्यम, पुलिस अथवा समिति के हाथ जिन लोगों तक नहीं पहुंच पाते, ऐसे लोग भी अनेक हैं। जादू-टोना एवं पाखंड करना तथा घिनौनी सलाह देने का काम ये लोग करते हैं। ये लोगों के साथ धोखा तो करते ही हैं, लेकिन बहुत बार इनकी करतूतें भयवह अपराध भी होती हें।

2. **जानलेवा इलाज**

कुछ बाबा-बुवा इलाज करते हैं। उनकी इलाज-पद्धति देखने में सरल-सीधी लगती है। जरूरतमंद गरीबों को वह भरोसेमंद लगती है। वास्तव में यह जान की दुश्मन बन जाती है। सांगली जिले में रहने वाले रमजान गुंडू शेख बाबा रेबीजग्रस्त पागल कुत्ते से खतरा टालने के लिए दवा की चार पुड़ियां देता था। रेबीजग्रस्त कुत्ता काटने के बाद उसका जहर शरीर को बाधित न करे इसीलिए दिए जाने वाले इंजेक्शन से बहुत सवेदनाएं होती हैं। बहुत बार उसका रिएक्शन भी होती है जिससे गंभीर हालात पैदा हो जाते हैं। बांह पर लिये जाने वाले और कम पीड़ा देने वाले इंजेक्शन भी अब आ गए हैं। लेकिन सामान्य मनुष्य के जेब के लिए वे भारी हैं। ऐसी स्थिति में शेख बाबा खाने के लिए चार पुड़ियां दवा बांधकर देता था जिससे लोगों को तसल्ली होती थी। वास्तव में यह तसल्ली बीमार लोगों को शमशान में पहुंचाती थी। कुत्ते के काटने के बाद होने वाली 'रेबीज' बीमारी के लिए आज तक कोई इलाज नहीं है। एंटी रेबीज वैक्सी इंजेक्शन रेबीज पर रोक लगाने के लिए बनाया गया हैं बीमारी हो जाने के बाद उसका भी इलाज नाकाम होता है। शेख बाबा की दवा लेने के बाद कुत्ता काटने से पीड़ित व्यक्ति, उसके रिश्तेदार खतरा टलने की भावना से बेफिक्र हो जाते हैं, इंजेक्शन लेने की उन्हें जरूररत नहीं लगती। लेकिन ऐसे इलाजों की कीमत उन्हें चुकानी पड़ती है। ऐसे ही अनपढ़ असलम बाबा के हाथ से शल्यक्रिया करवाना अथवा फर्शवाले बाबा का फर्श पर सिर रखकर जानलेवा इलाज करना ढकोसला ही है।

3. चमत्कार करने वाले बाबाः

सत्य साईं बाबा इसका अच्छा उदाहरण हैं। वे अपना खाली हाथ हवा में घुमाकर उसमें से सोने-चांदी की अंगूठी और लॉकेट निकालते हैं। महाराष्ट्र में अनुराधाबाई देशमुख द्वारा सोमनाथ की पूजा करते समय उन पर देवता सवार होता है। उनके हाथ से अपने आप ही विभूति बाहर आती है। कभी-कभी रुद्राक्ष भी आते हैं। बाबा का दावा होता है कि सभी चमत्कार ईश्वर की कृपा से मिले दैवी शक्ति के आविष्कार हैं। विज्ञान का कहना है कि ऐसे चमत्कार संभव नहीं हैं। इसलिए यह श्रद्धालू लोगों की भावनाओं का नाजायज़ लाभ उठाकर किया हुआ साधुत्व का ढोंग होता है।

4. **अध्यात्म और विज्ञान का समन्वय करने वाले गुरुः**

निर्मला माता देवी इसका अच्छा उदाहरण हैं। परंपरागत योगशास्त्र का विचार है कि प्रत्येक व्यक्ति की गुदास्थित में कुंडलिनी शक्ति सांप की तरह कुंडली मारकर सुप्तावस्था में पड़ी रहती है। दीर्घ तपश्चर्या के बाद कुंडलिनी शक्ति जाग्रत् कर व्यक्ति ब्रह्मज्ञान प्राप्त कर सकता है। आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त कर सकता है। निर्मला माता देवी का दावा है कि इस कुंण्डलिनी की अल्पावधि में जाग्रत् करनेवाला 'सहजयोग' नाम का विज्ञान उन्होंने ढूंढ लिया है। उसके द्वारा कुंडलिनी जाग्रत् होती है। और व्यक्ति की पीठ के चक्र के ऊपर सरकता है। तालु के ब्रह्मारंध्र के वह बाहर आ जाती है। इसके कारण व्यक्ति को अनगिनत लाभ मिलते हैं। इस प्रकार आध्यात्मिक कल्पना और स्वसम्मोहन के द्वार सूचनाओं का समन्वय कर ऐसे गुरुगीरी रचाए जाते हैं।

5. विज्ञान की भाषा में धोखाधड़ी करने वाले बुवाबाबाः

आधुनिक युग में ढकोसले की भाषा भी आधुनिक ही होनी चाहिए। कुछ दिन पहले महाराष्ट्र

में तकरीबन एक लाख रुपए कीमत की गद्दियां बेची जा रही थीं। चुंबक के टुकड़ों और वैद्यकीय गुणविशेषों वाले पंछियों के पर डालकर वह बनाई गई हैं। इसीलिए वैज्ञानिक दृष्टि से वह फायदेमंद है। उसके उपयोग से अनेक गंभीर बीमारियों का इलाज होता है, ऐसा उस गद्दी बनाने वाले निर्माता का दावा था। इसे वैज्ञानिक भाषा में की जाने वाली धोखाधड़ी कहा जाता है।

6. परामानसशास्त्र के उपयोग से चलने वाले पाखंडः

एक दौर में अद्‌भुत परामानसशास्त्रीय शक्ति का प्रतीक माना जाने वाला नामचीन विदेशी युरी गेलर का उत्तम उदाहरण है। निगाहों की शक्ति से चम्मच को मरोड़ देना, चाबियां तोड़ देना, घड़ी को रुकवाना जैसे अनेक चमत्कार वह करता था। इसीलिए उसकी परामानसशास्त्रीय शक्ति की चर्चा होती थी। वास्तव में उसकी चालाकी का जेम्स रेंडीनामक जादूगार ने भंडाफोड़ किया। ढकोसले पर से पर्दा सा उठ गया।

बारामती के मीठा बाबा उर्फ भानुदास गायकवाड़ और महाराष्ट्र की परामानसशास्त्र की अनपुसंधान संस्था का दावा था कि बाबा के शरीर में अचानक मीठापन आ गया है। वे जिस चीज को हाथ लगाते हैं, वह मीठी बन जाती है और परामानसशास्त्रीय चमत्कार है। सच यह था कि बाबा अपने हाथ में शक्कर की जगह पांच सौ गुना मीठा होने वाला सैकरीन नामक पदार्थ लगाता था।

7. **तत्त्वज्ञान अथवा आध्यात्मिक भाषा, आकर्षक व्यक्तित्व एवं सम्मोहन का उपयोग करने वाले साधुत्व का ढोंगः**

आचार्य रजनीश, जो आगे चलकर भगवान रजनीश बन गए तथा स्वयं को उन्होंने 'ओशो' कहा, इस बात की अच्छी मिसाल हैं। तत्त्वज्ञान का उत्तम अध्ययन, प्रभावी अंग्रेजी, हिंदी वक्तृत्व कला, आकर्षक व्यक्तित्व और सम्मोहन का उपयोग कर उन्होंने अध्यात्म में अपनी पटरी जमाई थी। अमेरिका ने उन्हें 125 वर्ष की सजा सुनाई। उसे टालने के लिए उन्होंने अमेरिका छोड़ दिया। संसार के अनेक देशों ने उन्हें पनाह नहीं दी। इससे स्पष्ट होता है कि कथित अध्यात्म और तत्त्वज्ञान की रिक्तता किस प्रकार साधुत्व के ढोंग को सामाजिक बनाती है।

8. पगल बाबाः

एकआध व्यक्ति मनोरुग्ण अथवा मंदबुद्धि होते हैं। उन्हें अपना होश नहीं रहता। शरीर की सफाई के नियम, वस्त्र पहनने की सभ्यता, खाने, बोलने के संकेत आदि बातों पर उनका नियंत्रण नहीं होता। परंपरागत भारतीय सामाज उन्हें अवलिया कहता है। कुछ लोग उन्हें पूजते हें, मानते हैं । ऐसे व्यक्ति अपने आप असामान्य बाबा बन जाते हैं। उनके ज़रिए शोषण और अपना उल्लू सीधा करने के काम में एक गुट सक्रिय रहता है। ऐसे बाबा को पागल कहने पर वह गुट शोरगुल कर राई का पहाड़ बना देता है।

9. लंपट बाबाः

'बुवा तिथं बाया' (जहां बाबा, वहां स्त्रियां) ऐसी एक कहावत मराठी में है। वास्तव में अनेक संदर्भों में इसकी प्रतीति होती है। महिलाएं हवस का शिकार क्यों बनती हैं, यह मुद्दा निरंतर चर्चा और विवाद का रहा है। महिलाओं की श्रद्धा का, भावुकता का गलत फायदा उठानेवाले लंपट बाबा महाराज का आडंबर बार-बार सामने आता है। अनेक स्त्रियों से शारीरिक संबंध बनानेवाला, पुणे के नजदीक रहने वाला वाघमारे बाबा ऐसा ही उदाहरण है। उसकी करतूतें समाज की आंखों पर बंधी पट्टी को खोल देने वाली हैं।

10. **स्वयं को अवतार मानने वाले बाबाः**

हिंदू धर्म का मानना है कि ईश्वर अवतार लेता है। ढकोसले को लोगों की मान्यता दिलवाने के लिए बाबा इस कल्पना का लाभ उठाते हैं। स्वयं को किसी देवता का अवतार घोषित करते हैं। अपने आपको विष्णु का अवतार घोषित करने वाले कल्कि भगवान ऐसे ही पाखंडी बाबा थे।.........***क्रमशः***

धरती पे मुहब्बत लिख दे
अम्बर पे मुहब्बत लिख दे
और इतना लिख कि,
हिन्दू-मुस्लमान-ब्राह्मण-दलित लिखने की जगह ही ना बचे।

(एक देशभक्त फकीर की जीवनगाथा)

गदर पार्टी के पहले प्रधान : सोहन सिंह भकना

-बूटा सिंह सिरसा

देश के आजादी आंदोलन में गदर पार्टी की भूमिका को इतिहास में वह स्थान नहीं दिया गया जो मिलना चाहिए था। पंजाब व पंजाबी भाषायी क्षेत्र के बाहर बहुत कम लोग गदर पार्टी के बलिदानों से परिचित हैं। 4 जनवरी 2020 गदर पार्टी के। पहले प्रधान सोहन सिंह भकना का 150 वां जन्म दिन है। उनका जन्म अमृतसर के पास एक गांव भकना में 4 जनवरी 1870 को हुआ। उनके पिता का नाम कर्म सिंह एवं माता का नाम राम कौर था। जब उनकी आयु मात्र एक वर्ष की थी तो उनके पिता का देहांत हो गया। उन्होंने गांव के गुरुद्वारा के ग्रन्थी से गुरुमुखी पढ़ना सीखा एवं मदरसे से उर्दू सीखी। सोहन सिंह भकना पर उनकी जवानी के समय में नामधारी संत बाबा केसर सिंह जी का बहुत ज्यादा प्रभाव पड़ा। उनके प्रभाव से उन्होंने जवानी के समय की बहुत सारी बुराइयों को छोड़ दिया। अपने परिवार की आर्थिक स्थिति खराब होने के कारण उन्होंने अमेरिका जाने का फैसला किया। उस समय पासपोर्ट वगैरह की जरूरत नहीं होती थी। वे समुद्री जहाज के माध्यम से हांगकांग होते हुए अमेरिका गए। यह उनकी सीखने की इच्छा ही थी कि उन्होंने समुद्री जहाज के एक महीने के सफर के दौरान पंजाबी-अंग्रेजी डिक्शनरी से अंग्रेजी के काफी शब्द सीख लिए। 4 अप्रैल 1909 को अमेरिका के शहर सियाटल में पहुंचे। पूंजीपतियों की लूट के बारे में वे 'जीवन संग्राम' पुस्तक में लिखते हैं कि ''एक और बात याद रखने वाली है कि ''मुनाफाखोर का देश, कौम या भगवान किसी के साथ भी प्यार नहीं होता। उसका देश, कौम व भगवान सब कुछ रुपया ही होता है। जिस ढंग से भी रुपया कमाया जा सकता हो वह अपनी लालसा पूरी करने को कोई पाप नहीं समझता। इसलिए मंदी के दौर में बेरोजगार मजदूरों को कम मजदूरी पर काम पर रखकर नाजायज फायदा उठाता है ।''

सियाटल से थोड़ी दूर ओरेगन प्रांत के पोर्टलैंड में कोलंबिया नदी के किनारे एक लकड़ी के कारखाने में उन्हें काम मिल गया। यह काम बहुत ही कठिन था एवं मात्र 2 डालर मजदूरी मिलती थी। उस समय अमरीका की मिलों में बहुत सारे भारतीय मजदूरी कर रहे थे। उस दौर में उनके साथ नस्लीय भेदभाव होता था। अमेरिकन मजदूरों की बजाय उनको मजदूरी कम मिलती थी। अमेरिकी मजदूर अक्सर ही विदेशी मजदूरों पर हमले करते थे। इन हमलों के दौरान विदेशी मजदूरों को पीटा जाता, उनसे पैसे छीन लिए जाते हैं, उनको दूर जंगल में छोड़ दिया जाता। जब मजदूर इन हमलों की शिकायत लेकर अधिकारियों के पास जाते तो वहां भी उनकी कोई सुनवाई नहीं होती थी क्योंकि भारत गुलाम होने के कारण सरकार की तरफ अपने देश के प्रवासियों के पक्ष में कोई कार्यवाही नहीं की जाती थी। इन हमलों और नस्लीय भेदभाव ने मजदूरों को एक-दूसरे से वार्तालाप करने का मौका दिया व एक-दूसरे के नजदीक लाने का काम किया। उनमें दूसरे देश के मजदूरों के प्रति हमदर्दी की भावना पैदा हुई। कारखाने का मालिक जब किसी मजदूर के साथ अन्याय करता तो सभी मजदूर उनका साथ देते। इसी जागृति से संगठित होने का रास्ता निकला। काफी प्रयासों के मार्च 1913 के दूसरे सप्ताह पोर्टलैंड के आसपास के सभी कारखानों के मजदूरों की मीटिंग बुलाई गई। इसमें परमानंद लाहौर व लाला हरदयाल विशेष रूप से पहुंचे। 'हिंदी एसोसिएशन आफ पेसिफिक कोस्ट' का गठन किया गया। इसके प्रधान सोहन सिंह भकना, उपप्रधान भाई केसर सिंह ठठगढ़, महासचिव लाला हरदयाल, संयुक्त सचिव ठाकुरदास व कोषाध्यक्ष पंडित काशीराम चुने गये। एसोसिएशन द्वारा जो सर्वसम्मति से जो फैसले लिए गए। उनसे पार्टी की धर्मनिरपेक्ष नीति, त्याग, प्रतिबद्धता व समर्पण का पता चलता है। उनमें मुख्य फैसले निम्नलिखित थेः

1. पार्टी का उद्देश्य सशस्त्र संघर्ष से देश को आजाद करवाना एवं आजादी के बाद आजादी और बराबरी के आधार पर लोकराज स्थापित करना ।

2. पार्टी का एक साप्ताहिक अखबार निकलेगा, जिसका नाम 1857 की याद में 'गदर' अखबार होगा ।
3. संगठन का चुनाव प्रत्येक वर्ष होगा।
4. प्रत्येक मेंबर कम से कम एक डालर प्रति महीना चंदा देगा।
5. पार्टी में धार्मिक वाद-विवाद के लिए कोई स्थान नहीं होगा।धर्म प्रत्येक व्यक्ति का निजी मामला होगा ।
6. पार्टी का मुख्यालय सान फ्रांसिस्को (कैलिफोर्निया) में होगा।
7. पार्टी के हर सिपाही का यह कर्तव्य होगा कि वह चाहे दुनिया के किसी कोने में हो, वह गुलामी के विरुद्ध आजादी के लिए संघर्ष करे।
8. पार्टी के कार्यालय, प्रेस, अखबार या गाँव में काम करने वाले किसी सदस्य को वेतन नहीं मिलेगा। बराबरी के आधार पर रोटी कपड़ा पार्टी के सांझे लंगर व स्टोर से मिलेगा।

एक नवंबर 2013 से गदर अखबार प्रकाशित होना शुरू हुआ। इसके पहले संपादक लाला हरदयाल थे। वे उर्दू में लिखते थे। करतार सिंह सराभा उसे पंजाबी में अनुवाद करते और हैंड मशीन से उसे छापते थे। पहले अखबार उर्दू व पंजाबी में छपता था। उसके बाद अखबार के हिंदी, गुजराती व नेपाली भाषाऔं में विशेष अंक भी छापे गये एवं हैंड मशीन की जगह बिजली से चलने वाली मशीन लगाई गई। पार्टी का कार्य बढ़ जाने के बाद सोहन सिंह भकना अपना निजी काम छोड़कर पूर्णकालिक कार्यकर्ता के रूप में पार्टी के लिए काम करने लगे। कनाडा, अर्जेंटीना, वर्मा, फिलीपींस व सिंगापुर तक गदर अखबार पहुंचने लगा एवं एसोसिएशन की यूनिट बन गई। उस समय तक विभिन्न देशों के अनेक कारखानों में 72 यूनिट बन चुकी थी। लाला हरदयाल के अमेरिका से चले जाने के बाद कामरेड संतोख सिंह महासचिव बने। सशस्त्र संघर्ष के लिए पार्टी की तरफ से सैनिक प्रशिक्षण का भी प्रबंध किया गया। पार्टी के दो सदस्यों करतार सिंह सराभा और मास्टर उधम सिंह कसेल को इस कार्य के लिए भेजा गया। करतार सिंह सराभा हवाई जहाज उड़ाने की ट्रेनिंग लेने लगे ।

23 मई 1914 को कामागाटामारू जहाज भारतीयों को लेकर कनाडा पहुंचा, लेकिन कनाडा सरकार ने जहाज को बंदरगाह पर आने से मना कर दिया और कई महीनों तक जहाज समुद्र में ही खड़ा रहा। जहाज के यात्रियों के लिए कनाडा में रहने वाले भारतीयों ने एसोसिएशन के बैनर तले संघर्ष किया व सहायता राशि एकत्र की गई। उसके बाद कनाडा सरकार ने 23 जुलाई 1914 को जहाज को वापस जाने के लिए यात्रियों का राशन व हर्जाना देना मान लिया। एसोसिएशन की तरफ से सोहन सिंह भकना को जिम्मेदारी दी गई कि वे एक दूसरे जहाज से इस जहाज के साथ जाएं व जहाज के यात्रियों को पार्टी लाइन के बारे में तथा भारत में जाकर प्रचार करने तथा सशस्त्र संघर्ष के बारे में बताए। सोहन सिंह भकना 200 पिस्तौल एवं 2000 गोलियां लेकर योकोहामा होते हुए हांगकांग के रास्ते से पिनांग (मलेशिया) पहुंचे। तब तक अंग्रेज सरकार को सीआईडी के माध्यम से पता चल चुका था एवं कामागाटामारू जहाज के साथ कोलकाता में 'बजबज घाट' की घटना घट चुकी थी। बंगाल की खाड़ी में ही पंजाब पुलिस सोहन सिंह भकना वाले जहाज में पहुंच गई एवं उनको कोलकाता से गिरफ्तार कर लिया गया। उन्हें लुधियाना के रास्ते मुल्तान जेल में भेज दिया गया। यहीं से उनका जेल जीवन शुरू हुआ ।

इस दौरान ही मूला सिंह, अमर सिंह व नवाब खां ने गदारी की तथा वे सरकारी गवाह बन गये। इस कारण बहुत सारे गदरी गिरफ्तार कर लिए गए। इन सभी पर पहला लाहौर साजिश केस अप्रैल 1915 में शुरू हुआ। अंग्रेज सरकार ने जेल के अंदर ही ट्रिब्यूनल का ड्रामा करते हुए 24 देशभक्तों को फांसी की सजा सुनाई। 16 नवम्बर फांसी की तिथि तय हो गयी लेकिन एक दिन पहले 17 गदरी क्रांतिकारियों की फांसी की सजा को उम्रकैद में बदल दिया गया। करतार सिंह सराभा एवं छह अन्य को फांसी दी गई। करतार सिंह सराभा की उम्र उस समय 19 वर्ष की थी। उम्र कैद वाले क्रांतिकारियों को अंडेमान की सेल्यूलर जेल में भेज दिया गया। वहां पर उन पर बहुत सारे अमानवीय अत्याचार किए एवं ऐसी कठिन मुशक्कत करवाई गई जैसा पशुओं से भी नहीं करवाया जाता। वे अक्सर ही विरोध करते व उनको बेंतों की सजा दी जाती। लेकिन इन क्रांतिकारियों ने इतने अत्याचारों के बावजूद अपने हौसले बुलंद रखे एवं संघर्ष की नई मिसाल कायम की। उन्होंने जेल में भूख हड़तालें की और इन सालों के दौरान कुछ गदरी बाबे अपनी जान कुर्बान कर गए। **सोहन सिंह भकना**

अपनी जीवनी 'जीवन संग्राम' में लिखते हैं कि ''हमारे होते हुए विनायक सावरकर अंडमान में हमारे साथ थे। पुणे की यरवदा जेल में रिहाई के लिए लाए गए। इनकी सेहत बहुत कमजोर हो चुकी थी एवं कुछ शर्तों पर रिहा किए गए।'' 1921 में सोहन सिंह भकना को कुछ साथियों के साथ कोयंबटूर जेल में भेज दिया गय। इसके अतिरिक्त कुछ कैदी यरवदा जेल से पंजाब भेजे गए। 1928 की सर्दियों में सोहन सिंह भकना और केसर सिंह को लाहौर सेंट्रल जेल में भेज दिया गया

उस समय भगत सिंह व उसके साथियों को सुनवाई के लिए बोर्स्टल जेल से सेंट्रल जेल में लाया जाता था। इस दौरान बाबा सोहन सिंह भकना की कई बार भगत सिंह से मुलाकात हुई। जब भगत सिंह और उसके साथियों ने जेल में भूख हड़ताल शुरू की तो बाबा सोहन सिंह भकना ने भी उनके समर्थन में चौथी बार जेल में भूख हड़ताल की। वह अपनी पुस्तक में लिखते हैं कि ''भगत सिंह 6 फुट लम्बा बहुत खूबसूरत नौजवान था। वह निडर जरनैल दार्शनिक और ऊँची राजनैतिक सूझ रखने वाला था। देशभक्ति के साथ-साथ दुनिया भर की पीड़ित जनता का दर्द उसके दिल में कूट-कूट कर भरा हुआ था'। जब अंग्रेज सरकार ने सोहन सिंह भकना को उनकी उम्र कैद पूरी होने के बावजूद भी रिहा नहीं किया तो उन्होंने फिर भूख हड़ताल का नोटिस दे दिया एवं 2 महीने तक भूख हड़ताल की। ज्यादा सेहत खराब होने पर मेयो अस्पताल में दाखिल किया गया। अंग्रेज सरकार ने शर्तों के साथ रिहा करने को कहा तो उन्होंने साफ मना कर दिया। जुलाई 1930 में 16 साल की कैद के बाद रिहा किया गया ।

सोहन सिंह भकना रिहा होकर जब गांव में वापस आए तो उनकी माताजी की मौत हो चुकी थी । उनकी धर्म पत्नी अपने मायके में दिन काट रही थी। गांव के पुराने लोगों को छोड़कर नौजवान उनको पहचानते नहीं थे। यहां तक कि वे अपने घर का रास्ता भूल गए। मकान मात्र मिट्टी का ढेर बन चुका था। लेकिन उसके बाद भी चुप करके नहीं बैठे । 1939 में जब अंडेमान की सेल्यूलर जेल में देश भक्तों द्वारा भूख हड़ताल की गई तो सोहन सिंह भकना ने जलियाँ वाला बाग में उनके समर्थन में भूख हड़ताल की। वे 1940 में अखिल भारतीय किसान सभा के अध्यक्ष बने। 1940 में उनको फिर नजर बंद करके देवली कैंप भेज दिया गया और 1943 में रिहाई हुई। जब उनके गांव में हाई स्कूल के लिए जमीन की मांग उठी तो सोहन सिंह भकना ने अपनी साढ़े आठ एकड़ जमीन हाई स्कूल के लिए दे दी। अपना जद्दी मकान को बेचकर एंव गाँव से चंदा इकट्ठा करके लड़कियों के लिए पाठशाला खोल दी। वे स्वयं अपने खेत में झोपड़ी बनाकर रहने लगे। सड़क के साथ लगती साढ़े आठ एकड़ से ज्यादा जमीन में किरती किसान आश्रम बना दिया गया एवं देशभक्तों के बच्चों को वहां लाकर रखा जाने लगा । देश की आजादी के समय 1947 में जब पंजाब में धर्म के आधार पर लोगों की मारकाट हो रही थी तो सोहन सिंह भकना और अन्य क्रांतिकारियों ने अनेक गांव में मुसलमानों की जान बचाई एवं उनको सुरक्षित भेजा। दुख की बात यह है कि देश आजाद होने के बाद भी उनको 1948 में अन्य कम्युनिस्टों के साथ भकना गांव से गिरफ्तार कर लिया गया और योल कैम्प भेज दिया गया। उन्होंने वहां भी भूख हड़ताल कर दी और यह भूख हड़ताल 28 दिन तक चली। जब जवाहरलाल नेहरू के पास देश भक्त परिवार सहायक कमेटी के प्रधान संत विसाखा सिंह के माध्यम से बात पहुंची तो तीन-चार दिन बाद उनको रिहा किया गया। यह उनके जीवन की सातवीं भूख हड़ताल थी। इस भूख हड़ताल के बाद उनकी कमर झुक गई। इसके बाद उन्होंने जालंधर में देश भगत यादगार हाल बनाने का फैसला लिया एवं देश भगत यादगार कमेटी बनाई गई। 1964 में गदर पार्टी की गोल्डन जुबली मनाई गई। बाबा जी अपनी पुस्तक 'जीवन संग्राम' में लिखते हैं कि ''बुढ़ापे में आराम और बेफिक्री की गारंटी समाजवादी व्यवस्था के बगैर कोई नहीं दे सकता।'' एक जगह वह लिखते हैं, ''कि यह मेरा पक्का निश्चय है कि जब तक अर्थव्यवस्था की बुनियाद समाजवाद नहीं असली आजादी एक सपना ही रहेगी।'' 20 दिसंबर 1968 को महान देशभक्त गदरी बाबा सोहन सिंह भकना की 98 वर्ष की आयु मृत्यु हो गई। वे इस दुनिया से शारीरिक रूप से तो चले गए लेकिन उनके संघर्षो की गाथा आने वाली पीढ़ियों को प्रेरणा देती रहेगी। हम उनके 150वें जन्मदिन पर उनको सैल्यूट करते हैं ।

(संदर्भः पुस्तक 'जीवन संग्राम' आत्मकथा बाबा सोहन सिंह भकना)

(शहीद भगत सिंह के शहीदी दिवस पर विशेष)

ईश्वर और धर्म के बारे में भगत सिंह के विचार

''अपने आप को नास्तिक बताते हुए 'भगत सिंह ने शुरू के क्रांतिकारियों के तरीके और दृष्टिकोण के प्रति पूरा सम्मान प्रदर्शित किया है और उनकी धार्मिकता के स्रोतों की पड़ताल की है। वे संकेत करते हैं कि अपने स्वयं के राजनीतिक कार्यों की वैज्ञानिक समझ के अभाव में उन क्रांतिकारयों को अपनी आध्यात्मिकता की रक्षा करने, वैयक्तिक प्रलोभनों के विरुद्ध संघर्ष करने, अवसाद से उबरने, भौतिक सुखों और अपने परिवारों तथा जीवन तक को त्यागने की सामर्थ्य जुटाने के लिए विवेकहीन विश्वासों एवं रहस्यवादिता की आवश्यकता थी। एक व्यक्ति जब निरंतर अपने जीवन को जोखिम में डालने और दूसरे सारे बलिदान करने के लिए तत्पर होता है तो उसे प्रेरणा के गहरे स्रोत की आवश्कता होती है। शुरू के क्रांतिकारी आतंकवादियों की यह अनिवार्य आवश्यकता रहस्यवाद और धर्म से पूरी होती थी। लेकिन उन लोगों को ऐसे स्रोतों से प्रेरणा लेने की जरूरत नहीं रह गयी थी जो अपने कामों की प्रकृति को समझते थे, जो क्रांतिकारी विचारधारा की दिशा में आगे बढ़ चुके थे, जो कृत्रिम आध्यात्मिकता की बैसाखी लगाये बिना अन्याय के विरुद्ध संर्घर्ष कर सकते थे, जो स्वर्ग और मोक्ष के प्रलोभन और आश्वासन के बिना ही विश्वास के साथ और निर्भीक भाव से फांसी के तख्ते पर चढ़ सकते थे, जो दलितों की मुक्ति और स्वतंत्रता के पक्ष में इस लिए लड़े क्योंकि लड़ने के अलावा और कोई रास्ता ही न था। ।'

...भगत सिंह स्वीकार करते थे कि 'ईश्वर में कमजोर आदमी को जबर्दस्त आश्वासन और सहारा मिलता है और विश्वास उसकी कठिनाइयों को आसान ही नहीं, बल्कि सुखकर भी बना देता है।' लेकिन वे सहारे के लिए किसी भी बनावटी ढंग के विचार को दृढ़तापूर्वक अस्वीकार करते थे। वे कहते थे, 'अपनी नियति का सामना करने के लिए मुझे किसी नशे की जरूरत नहीं है। उन्होंने ऐलान किया था कि जो आदमी अपने पैरों पर खड़े होने की कोशिश करता है और यथार्थवादी हो जाता है, उसे धार्मिक विश्वास को एक तरफ रखकर, जिन-जिन मुसीबतों और दुखों में परिस्थितियों ने उसे डाल दिया है, उनका एक मर्द की तरह बहादुरी के साथ सामना करना होगा।

ईश्वर, धार्मिक विश्वास और धर्म को यह तिलांजलि, भगतसिंह के लिए न तो आकस्मिक थी और न ही उनके अभिमान या अहम् का परिणाम थी। उन्होंने बहुत पहले, 1926 में ही ईश्वर की सत्ता को अस्वीकार कर दिया था। उन्हीं के शब्दों में, '1926 के अन्त तक मुझे इस बात पर यकीन हो गया था कि सृष्टि का निर्माण, व्यवस्थापन और नियंत्रण करने वाली किसी सर्वशक्तिमान परम-सत्ता के अस्तित्व का सिद्धांत एकदम निराधार है।''

-शिव वर्मा

'मैं नास्तिक क्यों हूँ' में भगत सिंह लिखते हैं:

'पहली बात तो मैं यह समझने में पूरी तरह से असफल रहा हूं कि अनुचित गर्व या वृथाभिमान किस प्रकार किसी व्यक्ति के ईश्वर में विश्वास करने के रास्ते में रोड़ा बन सकता है। मैं किसी वास्तव में महान् व्यक्ति की महानता को मान्यता न दूं, यह तभी हो सकता है जब मुझे भी थोड़ा-बहुत ऐसा यश प्राप्त हो गया हो जिसके या तो मैं योग्य नहीं हूं, या मेरे अन्दर वे गुण नहीं हैं जो कि इसके लिए आवश्यक अथवा अनिवार्य हैं। यहां तक तो समझ में आता है। लेकिन यह कैसे हो सकता है कि कोई व्यक्ति जो ईश्वर में विश्वास रखता हो, सहसा अपने व्यक्तिगत अहंकार के कारण उसमें विश्वास करना बन्द कर दे? इन दोनों ही अवस्थाओं में वह सच्चा नास्तिक नहीं बन सकता। पहली अवस्था में तो वह अपने प्रतिद्वन्द्वी के अस्तित्व को नकारता ही नहीं है

और दूसरी अवस्था में भी वह एक ऐसी चेतना के अस्तित्व को मानता है जो पर्दे के पीछे से प्रकृति की सभी गतिविधियों का संचालन करती है। हमारे लिए इस बात का कोई महत्व नहीं कि वह स्वयं को ही परम-आत्मा समझता है या यह समझता है कि वह परम-चेतना उससे परे कुछ अन्य है। मूल बात तो मौजूद है। उसका विश्वास मौजूद है। वह किसी भी तरह एक नास्तिक नहीं है। तो, मैं यह कहना चाहता

था कि न तो मैं पहली श्रेणी में आता हूं और न ही दूसरी में। मैं तो उस सर्वशक्तिमान परम-आत्मा के अस्तित्व से ही इन्कार करता हूं। मैं इससे क्यों इनकार करता हूं, इसे बाद में देखेंगे। यहां तो मैं केवल एक बात स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि यह अहंकार नहीं है जिसने मुझे नास्तिकता के सिद्धांत को ग्रहण करने के लिए प्रेरित किया। मैं न तो एक प्रतिद्वन्द्वी हूं और न हीं कोई अवतार, और न ही स्वयं परम-आत्मा ।

..... मेरा नास्तिकवाद कोई अभी हाल की उत्पत्ति नहीं है। मैंने तो ईश्वर पर विश्वास करना तभी छोड़ दिया था जब मैं एक अप्रसिद्ध नौजवान था और जिसके अस्तित्व के बारे में मेरे उपरोक्त दोस्तों को कुछ पता भी न था। कम-से-कम एक कॉलेज का विद्यार्थी तो ऐसे किसी अनुचित अहंकार को नहीं पाल-पोस सकता जो उसे नास्तिकता की ओर ले जाये.........।''

रागनी 23 शर्तो की

-जीत सिंह

तर्कशील सोसायटी की शर्त गिनाऊं सारी
एक शर्त कोय पूरी कर, बनो लाखों का अधिकारी

देवपुरुष संत सिद्व योगी जिसनै करली भगती हो
ओझे मौलवी फकीर पीर जादूगर शामिल चुगती हो
ज्योतिषी सब स्याणे सुनलो जिसमै कोय शक्ति हो
एक शर्त जे पूरी करदो, इनाम लाख का नगदी हो
खुली चुनौती सोसायटी की स्वीकार करो नर-नारी।

सीलबंद करंसी नोट का नम्बर कोय पढ़निया हो
किसे नोट की ठीक नकल उसी समय करनिया हो
ना जले आग मै आध मिनट तक नंगे पां ठहरनिया हो
मूंह मांगी चीज हवा मै तै, करके पेश धरनिया हो
मंत्र से वस्तु तोड़ मरोड़दे, हल्की हो या भारी।

टैलीपैथी से किसी व्यक्ति के जो भी पढ़ विचार सकै
एक इंच कट्या बढ़ाके कर शक्ति का प्रचार सके
योगशक्ति से उडै हवा मै जो कर गगन विहार सकै
दस मिनट तक नब्ज रोकदे, वो कर स्वीकार सकै
पानी के उपर पैदल चालै, ना क्याहे की असवारी।

एक स्थान पर शरीर छोड़के दूजी जगह दिखाई दे
तीस मिनट तक सांस रोकदे, वो भी आण दुहाई दे
पूनर्जन्म की अदभूत भाषा बोलै हमें सुनाई दे।
आत्मज्ञानी भक्ति शक्ति से करके दिखा कमाई दे
प्रेतआत्मा पेश करै जा जिसकी फोटो तारी....

तालाबंध कमरे से हो बाहर कोय आवनिया
छुपाई गई किसी चीज को शक्ति से टोहके ल्यावनिया
पानी की शराब तेल दारू का खून बनावनिया
तर्कशीलां नै फिक्स टैम मै हो नुकसान पहुचावनिया
किसी वस्तु का वजन बढ़ादे योगी जोगी तपधारी

आग लगे कपड़े कटै इसी घटना का मकान हो
भूत प्रेत दिव्यशक्ति का वहा देनिया प्रमाण हो
मानस का दे बना जानवर जादूगर बलवान हो
किसे साजबाज नै मंत्र तै बंद करनिया इंसान हो
कहै जीतसिंह तर्कशीलां नै तेईस शर्त करी जारी..

तर्कशील सोसायटी की शर्त गिनाऊं सारी
एक शर्त कोय पूरी कर बनो लाखों का अधिकारी

हो सकते हैं 'बलात्कार खत्म

समाज के शब्दकोश से 'बलात्कार' जैसा शब्द हमेशा के लिए गायब हो सकता है -कुछ व्यवहारिक सुझाव दे रहे हैं

-शरद कोकास

पिछले कुछ दिनों से हैदराबाद की घटना पर सोशल मीडिया में विभिन्न तबके के लोगों के, स्त्री पुरुषों के, बुद्धिजीवियों के विभिन्न तरह के विचार पढ़ने को मिल रहे हैं। इनमें कुछ आक्रोश से भरे हैं, कुछ भावनात्मक हैं, कुछ में स्त्रियों के लिए अनेक टिप्स हैं, सुरक्षा और आत्मरक्षा के लिये सुझाव हैं, कानूनी सहायता की बातें हैं, अब तक हो चुकी कार्यवाही की रपट है, तरह तरह के आँकड़े हैं, अरब देशों के कानून की दुहाई है आदि आदि।
मुझे लगता है ऐसी घटनाएं जब भी घटित होती हैं और उन अनेक घटनाओं में से जो घटनाएं सुर्खियों में आ जाती हैं उन पर चर्चा शुरू हो जाती है। फिर कुछ समय बाद सब कुछ सामान्य हो जाता है।
समय ऐसा ही बीतता जायेगा। एक पीढ़ी के बाद दूसरी पीढ़ी आ जायेगी। हम विभिन्न उपाय करते रहेंगे और उम्मीद करते रहेंगे कि समाज मे अब सकारात्मक परिवर्तन होगा ।

जब भी मैं इस दिशा में सोचता हूँ तो मुझे लगता है क्या हम ऐसा कुछ नहीं कर सकते कि भले ही देर लग जाये लेकिन एक या दो पीढ़ी के बाद स्थायी रूप से ऐसा कुछ परिवर्तन हो?

कुछ उपाय मेरे मन में आये हैं और मुझे लगता है कि इन समस्याओं और उनके समाधान को लेकर एक पीढ़ी की यदि अच्छी तरह से ब्रेन ट्रेनिंग की जाए तो सम्भव है हम समाज के सामूहिक अवचेतन का परिष्कार कर सके।

सामान्यतः एक पीढ़ी हम पन्द्रह वर्ष की मानते हैं । यदि हम इस दिशा में अभी से सक्रिय हो जायें तो क्या इस शिक्षा के माध्यम से पन्द्रह या बीस साल बाद बलात्कार जैसा शब्द समाज के शब्दकोश से गायब हो सकता है?
इस दिशा में सोचते हुए जो विचार मेरे मन मे आये हैं उन्हें आपके सामने रख रहा हूँ। आपकी इनसे असहमति भी हो सकती है किंतु विचार करने में क्या हर्ज है ।

यह सम्भव हो सकता है अगर हम सिर्फ इतना करें कि...

1. हम अपने बेटों को जन्म से ही 'ब्रेन ट्रेनिंग' के माध्यम से यह बताएँ कि उनकी और उनकी बहनों या अन्य लड़कियों की देह में केवल जननांग का अंतर है अन्यथा वे हर बात में बराबर हैं। उन्हें जननांगों के बारे में बचपन से समझायें कि उनका उपयोग क्या है। अन्य प्राणियों की देह और मनुष्य की देह में क्या अंतर है। देह की संरचना बताते हुए बेटों को बतायें कि बेटियों को भी शरीर मे उतना ही कष्ट होता है, उतनी ही बीमारियां होती हैं। जबरन छूने से च्यूंटी काटने से, जोर से पकड़ने से, मारने से शरीर मे उतना ही दर्द होता है। चोट लगने से वैसा ही घाव होता है। अनुभूति के स्तर पर मस्तिष्क की भूमिका के बारे में उन्हें बतायें ।
2. शरीर में हार्मोन्स की भूमिका हम बच्चों को विस्तार से नहीं समझा सकते किंतु छुपाए जाने वाले विषयों पर 'सहज होकर' तो बात कर सकते हैं? हम उन्हें जननांगों के बारे में बताते हुए यह तो बता सकते हैं कि सजीव होने के कारण उनमें कुछ प्राकृतिक क्रियाएं एक सी घटित होती हैं यथा मलमूत्र विसर्जन, पोषण चयापचय, प्रजनन, जन्म और मृत्यु।
3. यह भी बतायें कि बेटों की तरह बेटियों का भी हर बात में बराबरी का हक है पढ़ने लिखने में, खाने पीने में, खेलने कूदने में, घर मे लाई वस्तुओं का उपभोग करने में, प्यार और दुलार पाने में भी। देह और मस्तिष्क के स्तर पर दोनों बराबर है। बच्चों के हर सवाल का जवाब दें।
4. उनसे झूठ नहीं बोलें कि उन्हें अस्पताल से लेकर आये हैं या कोई परी देकर गई है। उन्हें बतायें कि वे मां के पेट से आये हैं। मां के पेट में कैसे आये यह भी बतायें और किस तरह बाहर आये यह भी । इसमें शर्म न करें यह कोई गंदी बात नहीं है । केवल इतनी सी बात समझाने से उनका जीवन बदल सकता है।'

5. जितने काम लड़कियों को सिखाते हैं उतने ही काम लड़कों को सिखाएं मसलन खाना पकाना, बर्तन कपड़े धोना, झाड़ू पोछा करना, घर साफ करना, कपड़े सीना, गाड़ी चलाना इत्यादि।

6. और सबसे महत्वपूर्ण बात कि समझ आते ही उन्हें यौनिकता के बारे में बतायें। उन्हें बतायें कि स्त्री को मासिक धर्म क्यों होता है। स्वप्नदोष क्या होता है, हस्तमैथुन क्या होता है। यह प्राकृतिक आनन्द यदि उन्हें मिलता है तो इसमें कोई बुराई नहीं है। लेकिन जबरन बलात्कार में बुराई है । उन्हें प्रजनन शास्त्र के बारे में बतायें। उन्हें बतायें कि यद्यपि सेक्स मनुष्य के जीवन का महत्वपूर्ण अंग है लेकिन जबरिया सेक्स बलात्कार कहलाता है चाहे वह पत्नी के साथ क्यों न हो। उन्हें बतायें कि यौन प्रताड़ना किसे कहते हैं। उन्हें बतायें कि यौन सुख की अनुभूति स्त्री पुरुष में अलग अलग होती है और शरीर का मन से क्या सम्बन्ध होता है। यह भी कि अपराध किसे कहते हैं।'

माफ कीजियेगा अगर आप इन बातों में गंदगी देख रहे हों तो। यह बातें गंदी नहीं है। यदि उचित माध्यम से उन्हें यह बातें नहीं बताई जाएंगी तो बच्चे पोर्न फिल्म और साहित्य का सहारा लेंगे और 'स्वप्न दोष का इलाज' 'लिंग के टेढ़ेपन का इलाज' 'सफेद पानी का इलाज' जैसे 'गुप्त ज्ञान' को दीवारों पर इश्तेहार के रूप में लिखने वाले आपके बच्चों का शोषण करेंगे। वैसे इनके लिये पुस्तकें भी उपलब्ध हैं। जैसे एकलव्य प्रकाशन भोपाल की 'बिटिया करे सवाल' जिसमे प्रजनन व मासिक धर्म सम्बन्धी जानकारी है।

ध्यान रहे यह बातें यौन शिक्षा या सेक्स एजुकेशन से बिल्कुल अलग हैं हम उन्हें मानसिक तौर पर तैयार करते हुए उन्हें स्त्री का सम्मान करना सिखा रहे हैं।

7. मुझे विश्वास है बेहतर ढंग से जब उनके मां बाप, शिक्षक, प्रशिक्षक आदि द्वारा ही उन्हें यह बातें बताई जाएंगी तो वे अपनी पिछली पीढ़ी से अधिक समझदार होंगे। जब वे अच्छी तरह इन बातों को समझ लें उन्हें यह भी बतायें कि वे उनसे पहले की पीढ़ी के लोगों को यानि अपने पिताओं, चाचाओं, मामाओं, फुफाओं और नाना दादाओं को भी यह बात बतायें क्योंकि 15 साल बाद भी पहले की पीढ़ी तो 30, 45 या 60 साल की रहेगी। हो सकता है यह नई पीढ़ी अपनी पिछली पीढ़ी से कहे कि 'आपने स्त्री का जितना अपमान कर लिया सो कर लिया अब करेंगे तो आपको सरे आम जुतियाया जाएगा।'

इस प्रोग्राम की उस वर्ग में सबसे अधिक जरूरत होगी जिसे हम निम्न तबका कहते हैं

8. हो सकता है आपको यह पंद्रह साल का ब्रेन ट्रेनिंग वाला कार्यक्रम पसंद न आये तो ठीक है । इसे भी जारी रखिये और चाहें तो इन पन्द्रह सालों में बलात्कारियों को सजा देना हो, लम्बे मुकदमे चलाने हो, मोमबत्तियां जलानी हो, धर्म के नाम पर अपराध को उचित ठहराना हो, फेसबुक से लेकर संसद तक जितनी बहस करनी हो, व्यवस्था परिवर्तन के लिए आंदोलन करना हो, स्त्रियों को आत्मरक्षा का प्रशिक्षण देना हो, यानि जो करना हो करते रहें। विरोध भी बदस्तूर जारी रहे क्योंकि अंततः हमारा उद्देश्य एक बेहतर समता मूलक समाज की स्थापना ही है ।

०००

अनमोल वचन

कानून की पवित्रता तभी तक रखी जा सकती है जब तक वह जनता के दिल यानी भावनाओं को प्रकट करता है। जब यह शोषणकारी समूह के हाथों में एक पुर्जा बन जाता है तब अपनी पवित्रता और महत्व खो बैठता है। न्याय प्रदान करने के लिए मूल बात यह है कि हर तरह लाभ या हित का खात्मा होना चाहिए। ज्यों ही कानून सामाजिक आवश्यकताओं को पूरा करना बन्द कर देता है त्यों ही जुल्म और अन्याय को बढ़ाने का हथियार बन जाता है। ऐसे कानूनों को जारी रखना सामूहिक हितों पर विशेष हितों की दम्भपूर्ण जबरदस्ती के सिवाय कुछ नहीं है।

–शहीद भगत सिंह

आश्रम में दो किशोरियों से बाबा ने किया दुष्कर्म

रायपुररानी के छोटा त्रिलोकपुर आश्रम को ताला लगाकर आरोपित बाबा फरार

जागरण संवाददाता, पंचकुलाः रायपुररानी स्थित छोटा त्रिलोकपुर के एक आश्रम में सेवा करने आई दो किशोरियों के साथ आश्रम का संचालक लक्ष्यनंद तीन दिन तक दुष्कर्म करता रहा। पीड़ित लड़कियां जब बाबा के चंगुल से छूट कर घर पहुंची तो एक लड़की ने अपनी मां को पूरी बात बताई। पता चलने पर मां ने किशोरियों को साथ लेकर पुलिस में शिकायत दर्ज कराई। पुलिस ने किशोरियों का मेडिकल करवाकर केस दर्ज कर लिया है। केस दर्ज होने के बाद से बाबा आश्रम को ताला लगाकर फरार हो गया।

आरोपित लक्ष्यनंद (48) पिछले कई सालों से छोटा त्रिलोकपुर में आश्रम चला रहा था। हालांकि रायपुररानी एरिया में इसके ज्यादा अनुयायी नहीं थे, लेकिन हिमाचल एवं पंजाब के लोग इस बाबा तो मानते थे। हिमाचल प्रदेश स्थित बद्दी के दो परिवारों की भी इस बाबा में आस्था थी और वह अक्सर यहां आते रहते थे। दोनों परिवारों की 14 व 15 वर्षीय दो बेटियां छुट्टियों में सेवा करने के उद्देश्य से आश्रम में आई थी। दोनों सेवा करने के लिये जब आश्रम में पहुंची, तो कथित बाबा बने लक्ष्यनंद ने दोनों किशोरियों को धमका कर बारी-बारी से दुष्कर्म किया। पुलिस के मुताबिक किशोरियों का आरोप है कि आरोपित ने तीन दिन तक दोनों से दुष्कर्म किया। बाबा के डर के चलते लड़कियां फोन पर परिवार को कुछ नहीं बता पाई। 28 जनवरी को जब वे अपने घर पहुंची, तो एक पीड़िता ने अपनी मां को पूरी बात बताई। मां ने पता चलने पर पुलिस थाने में केस दर्ज करवाया है।

उत्तर प्रदेश का रहने वाला है आरोपित लक्ष्यनंद

आरोपित लक्ष्य नंद उत्तर प्रदेश के जिला सहारनपुर के गांव बड़गांव का रहने वाला है। पिछले 10 साल से वह यहीं पर रहा रहा था। पांच साल से उसने साईं मंदिर बना राखा था, बाद में आश्रम बना लिया। पुलिस ने जब आश्रम में छापा मारा तो आश्रम पर ताला लटका मिला।

13 वर्षीय बच्चे से कुकर्म का आरोप, साधु पर केस दर्ज

पिहोवाः क्षेत्र के निकवर्ती गांव में एक साधु की ओर से 13 वर्षीय 'नाबालिग बच्चे के साथ कुकर्म करने का मामला सामने आया है। पुलिस ने बच्चे के पिता की शिकायत पर आरोपी साधु के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया है। पुलिस को दी शिकायत में बच्चे के पिता ने कहा कि वह अपने दोस्त के साथ गांव के ही मंदिर (डेरा) में 13 वर्षीय बेटे के साथ गया हुआ था। पूजा के बाद वह अपने दोस्त के साथ अपने घर आ गया था, लेकिन साधु ने उसके बेटे को पानी की पाइप को इकट्ठा करने के बहाने से मंदिर में ही रोक लिया था। आरोपी साधु ने उसके बेटे को कमरे में ले जाकर उससे गलत काम किया। घर आने पर उसके बेटे ने मां को ये बात बताई। उसने इसकी शिकायत पुलिस को दी। पुलिस ने आरोपी साधु के खिलाफ 4 पोस्को एक्ट के तहत मामला दर्ज कर लिया है। उधर, गुमथला गढू चौकी इंचार्ज सेवा सिंह ने बताया कि पुलिस ने आरोपी साधु के खिलाफ मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

(अमर उजाला दिः 29-10-2019)

अंधविश्वास के चलते

पत्नी का अंधविश्वास...पति करता है काला जादू, 2 माह से जंजीरों में जकड़ा

भास्कर संवाददाता । गुरदासपुर

21 वीं सदी में विज्ञान जहां नित्य नए-नए सोपान चढ़ रहा है वहीं भूत-प्रेत, जादू-टोना जैसे अंधविश्वास अभी भी अपनी जड़ें जमाए हुए हैं। ऐसा ही एक मामला गुरदासपुर का प्रकाश में आया है। अंधविश्वास में फंसी पत्नी ने दो महीने से पति को जंजीरों से बांध कर घर में कैद कर दिया। अब पति जंजीरों से मुक्ति पाने के लिए तरस रहा है, लेकिन पत्नी को उस पर रहम नहीं आ रहा। घटना गुरदासपुर के बहरामपुर रोड का है। महिला किसी के भी समझाने से पति को जंजीरों से रिहा करने के लिए तैयार नहीं है।

उसका कहना है कि वह तभी उसे रिहा करेगी, जब उसे कराने वाला लिखकर देगा कि उसका पति फिर से काला जादू नहीं करेगा और घर से भागेगा नहीं। पति को जंजीरों से बांधकर रखने वाली महिला लक्ष्मी ने बताया कि उसकी शादी करीब 30 साल पहले सरवण कुमार पुत्र छज्जू राम के साथ हुई थी। शादी के बाद सब कुछ ठीक चलता रहा। उनकी एक बेटी और एक बेटा है। बेटा काम के सिलसिले में अकसर बाहर रहता है। उसका दावा है कि करीब एक साल पहले उसके पति ने गांव तुंग में किसी बाबा के पास जाना शुरू कर दिया जो काला जादू जानता था। इसके बाद पति ने परिवार पर ही काला जादू करना शुरू कर दिया, जिसके चलते वे सभी बीमार रहने लगे। घर से धागे-ताबीज भी मिलना शुरू हो गए। उसका पति घर के सदस्यों की ओर से सोने के लिए प्रयोग किए जाने वाले सिरहाने भी घर से बाहर फेंक आता था। पहले तो उन्हें इस बारे में कुछ पता नहीं चला। फिर कुछ समय बाद समझ आया कि वह घर के सदस्यों पर ही काला जादू कर रहा है।

पत्नी ने कहा कि परिवार जिस आध्यात्मिक गुरू को मानता है उस पर भी उसके पति ने काला जादू कर डाला था, जिसके चलते वह भी बीमार रहने लगे। उसका दावा है कि पति ने महापुरुष की आत्मा को अपने अंदर समा लिया है जबकि अपनी आत्मा को महापुरुष में डाल दिया है। जब से उसने पति को जंजीरों के साथ बांध है, तब से परिवार के साथ-साथ महापुरुष की सेहत में भी सुधार होने लगा है।

ज्योतिषी के घर हुई लाखों की चोरी, नहीं लगी भनक

10 लाख का सामान पार

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क

रायपुरः शहर के मशहूर ज्योतिषी प्रियशरण त्रिपाठी के अवंति विहार शंकर नगर स्थित घर में लाखों रुपए की चोरी हो गई है। अज्ञात चोर लाखों रुपए का माल लेकर फरार हो गए।

पुलिस के मुताबिक तेलीबांधा थाना क्षेत्र के अवंति विहार स्थित आकांक्षा स्कूल के सामने ज्योतिषी के घर की ग्रिल तोड़कर चोर अंदर घुसे थे। वारदात सुबह करीब 3 से 5 बजे के बीच की बताई जा रही है। क्रांइम ब्रांच और तेली बांधा पुलिस जांच में जुट गई हैं पुलिस के मुताबिक घर के दो कमरों में चोरी की गई है। गृहवासियों को चोरों के घर में घुसने की भनक तक नहीं लगी। चोरों ने बड़े ही शातिराना तरीके से दोनों कमरों की अलमारी में लाखों का माल पार कर दिया।

मशहूर ज्योतिषी के घर चोरी हुइ तो एक लाख वर्ष पीछे व एक लाख वर्ष आगे का बताने वाली ज्योतिष विद्या ठप्प और सीसीटीवी कैमरे (विज्ञान) से खोज शुरू

बीमारियों का चमत्कारिक इलाज के विज्ञापन पर कार्यवाही की मांग को लेकर अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति द्वारा जिलाधीश, रायपुर छत्तीसगढ को पत्र :

माननीय महोदय,

आज रायपुर से प्रकाशित होने वाले समाचार पत्रों में एक विज्ञापन प्रकाशित हुआ है, जिसमें दिल्ली के एक तथाकथित बाबा कुमार स्वामी के द्वारा 2 दिनों 2 व 3 फरवरी को दुख रोग निवारण शिविर महासमागम आयोजित करने का समाचार है। साथ ही इस विज्ञापन में दुनिया भर के राजनेताओं के साथ खिंचाई गयी अनेक फोटो डाली गई हैं। यहां तक तो फिर भी ठीक है कि कोई व्यक्ति अपनी उपलब्धियों को विज्ञापन के रूप में प्रकाशित कर आम लोगों पर अपना रुतबा जमाना, अपना प्रभाव जमाना चाह रहा है। पर साथ ही जब वह व्यक्ति अपनी शक्ति का बखान करते हुए विभिन्न गंभीर बीमारियों के ठीक करने की बात प्रचारित करता है, किडनी की पथरी ठीक करने का, सिर के ऑपरेशन, कोमा मे पड़े मरीज के ठीक करने, हार्ट के ब्लॉकेज ठीक करने, प्रमोशन करने, शादी कराने, पुत्र प्राप्ति करवाने, भयंकर फंगल लोगों से ग्रस्त हुए हजारों लोगो के स्वस्थ होने जैसी ऐसी झूठी सच्ची घटनाएं प्रकाशित करवाता है, जो भ्रामक हैं, और लोगों को किसी भी धार्मिक, आध्यात्मिक कार्यक्रम में स्वेच्छा से आने, भक्ति और अध्यात्म के समागम में सम्मिलित होने की बजाय उनकी शारीरिक बीमारियों को ठीक करने का प्रलोभन देकर लाने के लिए जानबूझ कर डाली गयी है और विश्वास जमाने के लिये राजनेताओं, फिल्म कलाकारों, और यहां तक राजनेताओं, प्रधानमंत्री, की भी फोटो का चालाकी पूर्वक उपयोग कर लिया गया है। जबकि भारत के चमत्कारिक दवा एवं उपचार अधिनियम 1954 के अनुसार 54 बीमारियों के इस प्रकार चमत्कारिक उपचार का दावा करना और उसका प्रचार करना गैरकानूनी है और इस हेतु दंड का प्रावधान है। दिल्ली में प्रति वर्ष हजारों लोग डेंगू, मलेरिया जैसी बीमारियों से प्रदूषण, दुर्घटनाओं से मृत्यु के शिकार हो रहे हैं तब कोई ऐसा बाबा, सामने नहीं आता, देश के विभिन्न अस्पतालों में प्रतिदिन लाखों मरीज उपचार के लिए आते हैं, वहां ऐसे बाबा कदम नहीं धरते। हजारों लोगों की भीड़ जमा कर, मजमा लगाने, और बीमारी ठीक होने की बात नौटंकी के अलावा क्या है। कुछ दिनों पहले सरगुजा में एक कम्बल वाला बाबा भी इसी प्रकार के दावे करता फिर रहा था जिसे सफलतापूर्वक रोका गया, ऐसे शिविरों और समागम के नाम पर चंगाई सभा करने से बहुत अच्छे मेगा स्वास्थ्य शिविर होते हैं जो शासन और सामाजिक संस्थाओं के द्वारा लगाये जाते हैं और देश विदेश के विभिन्न विशेषज्ञों को बुला कर जरूरतमंद मरीजों का उपचार कराया जाता है। जहां एक ओर केंद्र सरकार ने अपने बजट में नए मेडिकल कॉलेज खोलने की घोषणा की है, पांच लाख नए स्वास्थ्य केंद्र खोलने, और मरीजों के उपचार के लिए नेशनल हेल्थ प्रोटेक्शन स्कीम लागू की है, वहीं छत्तीसगढ़ में सबको निशुल्क इलाज की योजना संचालित होने की भी बात है। ऐसे में कोई बाबा अद्भुत शक्ति से दुख, बीमारी निवारण की बात प्रचारित करता है तो वह विश्वसनीय नही लगता। सोचने की बात है यदि इस प्रकार एक साथ हजारों लोगो को बीमारियों से मुक्ति दिलाना संभव होता तो सरकारों को मेडिकल कॉलेज, स्वास्थ्य केंद्र, मेडिकल प्रोटेक्शन स्कीम और स्मार्ट कार्ड जैसी आवश्यकता क्यों पड़ती।

इस कुमार स्वामी के ऐसे कारनामों के खिलाफ उत्तर प्रदेश में पुलिस में रिपोर्ट भी हो चुकी है, और इंटरनेट में भी कुछ वेबसाइट में जानकारियां उपलब्ध हैं। प्रशासन को संज्ञान लेकर कार्यवाही करनी चाहिये ।

डॉ. दिनेश मिश्र,अध्यक्ष, अंध श्रृद्धा निर्मूलन समिति।

अंधविश्वास के कारण हुई बच्चे की हत्या

बालोद जिले अर्जुन्दा थाना के अंतर्गत ग्राम छड़िया में हुई हत्या, के बारे अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति के अध्यक्ष डॉ दिनेश मिश्र ने नरबलि की घटना बताया जो कि अंध विश्वास का परिणाम है।

डॉ दिनेश मिश्र ने बताया कि ग्रामीण अंचल में आज भी अंधविश्वास के कारण ऐसी घटनाएं घटित होती हैं जिसमें लोग तथाकथित तांत्रिक, बैगा, गुनिया की सलाह पर अंधविश्वास कर आपराधिक कृत्य कर बैठते है। ग्राम अलबरस के पास भी ऐसा ही हुआ। पंचराम देशमुख नामक व्यक्ति को एक तांत्रिक धनराज नेताम ने घर में धन संपत्ति की बढ़ौत्तरी के लिए फांसी लगी रस्सी, नारियल, सिक्का लेकर तन्त्र क्रिया व मंत्र जाप करने की बात कही तथा इस उपाय से रुपयों की बारिश होने की बात कही। इस पर अंधविश्वास में पड़ कर पंचराम ने अपने ही रिश्तेदार 15 वर्षीय रुद्रनारायण देशमुख की रस्सी से गला घोंटकर बलि दे दी, और उस रस्सी को तन्त्र क्रिया के लिए उस तथाकथित तांत्रिक को दे दी।

डॉ दिनेश मिश्र के अनुसार तन्त्र-मन्त्र के नाम पर चमत्कार, भूत-प्रेत, जादू-टोना जैसी मान्यताओं का कोई अस्तित्व नही होता।

खोज-खबर

लगातार बिजी रहने की आदत भी एक बीमारी है

हममें से बहुत से ऐसे लोग होंगे जो ऑफिस में घंटों काम में जुटे रहते हैं। जब वे घर में आते हैं तो वहां भी किसी काम में खुद को बिजी कर लेते हैं। अगर वे खाली या रिलेक्स होकर बैठने की कोशिश करते हैं तो उन्हें एंग्जॉयटी होने लगती है। बहुत से लोगों ने इसे महसूस किया होगा।

आखिर क्या है यह?

लगातार व्यस्त रहने मानसिक और भावनात्मक तौर पर थकाने वाला होता ही है, लेकिन सेहत के लिए बहुत खतरनाक भी। जॉन कबाट-जिन्न ने अपनी किताब 'Where you go, There you are' में लिखते हैं कि आप हमेशा व्यस्त रहकर खुद के साथ नाइंसाफी करते हैं। बिजी रहना अक्सर ये जाहिर करता है कि आप खुद दूसरों से अलग होकर अपने में ही जीना चाहते हैं। ये स्थिति भी एक तरह का बहाना ही है।

पिछली शताब्दी की जिन सभी पुस्तकों में इस मुद्दे पर बात की गई है, उनमें एलन वाट्स की 'The Wisdom of Security: A Message for Age of Anxiety' (असुरक्षा का ज्ञान) भी एक बेहतरीन किताब है।

1954 में प्रकाशित किताब के लेखक वाट्स को पता था कि द्वितीय विश्व युद्ध के बाद अमेरिका एक अजीब सी स्थिति की ओर बढ़ रहा है, जहां सामाजिक तौर पर अस्थिरता और तकनीकी तौर पर तेजी है। उस समय बहुत से लोग बिजी रहने का बहाना पेश करने लगे थे। अधिक घंटे काम कर रहे थो। लेकिन वे ऐसा क्यों कर रहे थे, इसका कोई जवाब उनकी पास नहीं था।

वाट्स ने लिखा कि लोग पैसे बनाना और बचाना तो जानते हैं लेकिन उसका इस्तेमाल करना नहीं। वे ज़िंदगी का आनंद लेने में नाकाम रहते हैं। वे सही मायनों में जीवन को समझते ही नहीं। जब आराम करने का समय आता है तो वे ऐसा नहीं कर पाते। एक किस्म की बीमारी है ये.....जॉन कबाट-जिन्न ने अपनी किताबों के माध्यम से लगातार लिखा है कि दरअसल व्यस्तता एक किस्म की बीमारी ही है। ये सहज स्थिति नहीं है?

रीढ़ की पूरी हड्डी के साथ पहला मानव सिर प्रत्यारोपण संभव होगा।

वाशिंगटनः चिकित्सा विज्ञान की दुनिया में आने वाले समय में नया इतिहास रचा जा सकता है। ब्रिटेन के राष्ट्रीय स्वास्थ्य सेवा (एनएचएस) से जुड़े पूर्व न्यूरोसर्जन ब्रूस मैथ्यू (63) ने दावा किया है कि 2030 में पहली बार रीढ़ की पूरी हड्डी के साथ मानव सिर प्रत्योराण संभाव है। न्यूरो सर्जन ब्रूस को 25 साल के कैरियर में करीब 10 हजार ऑपरेशन का अनुभव है। उनका मानना है कि अगर स्पाइनल कॉर्ड के साथ सिर का प्रत्यारोपण हो तो उसके सफल होने की संभावना अधिक है। उनका का मानना है कि रोबोटिक्स और ऑर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के दौर में 200 से अधिक नसों को बड़ी आसानी से जोड़ा जा सकता है जो पहले संभव नहीं था। ब्रूस का मानना है कि तकनीक की मदद से मस्तिष्क और रीढ़ की हड्डी के साथ दूसरे हिस्सों को नए शरीर में प्रयारोपित किया जा सकता है। विज्ञान से जुड़े उपन्यास में लेखक माइकल जे ली ने इसक जिक्र किया है। (एजेंसी।)

चीन इसे सबसे पहले करेगा

बूस का मनना है कि दुनिया भर के विशेषज्ञ इस प्रक्रिया को पूरा करने की तैयारी में लगे हैं। पश्चिमी देशों में जानवरों पर परीक्षण जारी है। हालांकि चीन जल्द ही जीवित मनुष्य पर इस प्रक्रिया को अंजाम देने की तैयारी कर चुका है।

सात संदूकों में भर कर दफ्न कर दो नफरतें
आज इंसां को मोहब्बत की जरूरत है बहुत
-बशीर बद्र

बच्चों का कोना

संतुलन बिंदु पता करना

समझने में आसानी हो इसलिए यहां 'गुरुत्व-केंद्र' की जगह 'संतुलन बिन्दु' शब्द का इस्तेमाल करेंगे। पहले हम संतुलन बिन्दु पता करेंगे और फिर देखेंगे कि वज़न का वितरण बदलने के साथ संतुलन बिन्दु भी बदल जाता है। इसके लिए आपको चाहिए एक चौकोर कार्ड और कुछ पेपर क्लिप्स।।

इस तरह से करें:

⋆ कार्ड पर चार रेखाएं बनाकर उसे आठ हिस्सों में बांट लें। कार्ड को अपनी उंगली पर संतुलित करें। आप देखेंगे कि जहां सभी देखाएं एक-दूसरे को काट रही हैं, वहीं संतुलन बिन्दु रहता है।

⋆ किऐी एक खंड में एक पेपर क्लिप लगाकर कार्ड को संतुलित करें। नया संतुलन बिन्दु खिसक कर, क्लिप वाले खंड में आ जाता है। इसी खंड में दो-तीन क्लिप और लगा दें। आप देखेंगे कि, संतुलन बिन्दु क्लिप की ओर और ज्यादा खिसक जाता है। अब दो अलग-अलग खंडों में क्लिप लगाकर नया संतुलन बिन्दु पता करें।

⋆ गत्ते पर भारत का नक्शा काटकर उसक संतुलन बिन्दु कहां है, यह मालूम करें।

कुछ चर्चा:

⋆ हर वस्तु का अपना एक निश्चित संतुलन बिन्दु रहता है। जब उस वस्तु में कुछ भार जोड़ा जाता है तो संतुलन बिन्दु भार की ओर खिसकता है। जितना ज्यादा भारत जोडेंगे संतुलन बिन्दु उतना ही ज्यादा खिसकेगा।

⋆ आपने गौर किया ही होगा कि संतुलन बिन्दु एक मा? जगह है जहां आधार देने पर कार्ड गिरता नहीं । अन्य किसी भी जगह से उठाएंगे तो कार्ड गिर जाता है।

⋆ संतुलन बिन्दु वस्तु के बाहर भी हो सकता है, जैसे चूड़ी, कोट, हैंगर आदि का।

छड़ी का संतुलन बिन्दु निकालिए

इसके लिए चाहिए एक सीधी छड़ी, पाइप या स्केल।

इस तरह से करें:

⋆ छड़ी के दोनों छोर के नीचे अपनी एक-एक तर्जनी उंगली रख लें। धीरे-धीरे उंगलियों को सरकाते हुए पास लाएं (छड़ी खुद-ब-खुद संतुलित होती रहेगी। जाहं आकर दोनों उंगलिया मिल जाती हैं, वही छड़ी का संतुलन बिन्दु है। इसी छड़ी पर चिन्हित कर लें।

⋆ अब, छड़ी के अलग-अलग बिन्दुओं के नीचे उंगलियां रखकर प्रयोग देहराए। हर बार उंगलियां संतुलन बिन्दु पर ही मिलती हैं।

⋆ आप एक कदम और आगे बढ़ सकते है। तार के हुक की मदद से छड़ी के एक छोर पर एक नट लटका दें। अब एक बार फिर संतुलन बिन्दु निकालें। नया संतुलन बिन्दु, नट की ओर कुछ खिसका हुआ होगा।

⋆ छड़ी के दोनों ओर अलग-अलग संख्या में नट लटकाकर और नटों को इधर-उधर सरका कर संतुललन बिन्दु निकालें। आप देख सकेंगे कि, भार का वितरण बदलने से संतुलन बिन्दु किस तरह प्रभावित होता है।

⋆ गौर करें, संतुलन बिन्दु हमेशा दो उंगलियों के बीच में ही कहीं न कहीं रहता है। अन्यथा छड़ी गिर जाएगी।

तर्कशील हलचल

तर्कशील सेमिनार का आयोजन किया गया

दिनांक 19-1-2020 को पायनियर स्कूल-सफीदों में तर्कशील सोसायटी हरियाणाा की द्विमासिक बैठक एवं सेमिनार का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता सोसायटी के प्रांतीय प्रधान फरियाद सनियाणा ने की तथा नगरपालिका सफीदों के अध्यक्ष श्री सेवा राम जी ने कार्यक्रम में बतौर मुख्य-अतिथि शिरकत की। कार्यक्रम की शुरूआत में चन्द्र सैनी सफीदों ने वहां उपस्थित कार्यकताओं का स्वागत करते हुए बताया कि तर्कशील एवं वैज्ञानिक विचारधारा ही श्रेष्ठ विचारधारा है। राकेश कुमार ढाण्ड ट्रीमैन ने शरीरदान, नेत्रदान, खूनदान का महत्व बताया। साथ ही उन्होंने पर्यावरण को बचाने के लिए अधिक से अधिक वृक्ष लगाने पर भी बल दिया। मा. कर्ण सिंह ने अपने जीवन के अनुाव साझाा करते हुए बताया कि तर्कशील बनने के पश्चात् उनके जीवन में आनन्ददायक तरक्की हुई है। उन्होंने बताया कि वे गांव के चौराहों पर अंधाविश्वासियों द्वारा रखे गये टोना-टोटकों को उठा कर भोले-भाले ग्रामवासियों के मन का डर दूर करने का प्रयत्न भी करते रहते हैं। इसके साथ ही उन्होंने पिछले दिनों एकत्र किये गये टोना-टोटकों के कुछ नमूने भी मंच पर प्रदर्शित किये।

'तर्कशील पथ' के संपादक बलवन्त सिंह ने तर्कशीलन सोसायटी हरियाणा का परिचय, उद्देश्यों एवं सोसायटी द्वारा रखी गई दुनिया भर के सिध्द, गुरू, ज्योतिषी एवं देवपुरुषों के लिए 23 शर्तों की चुनौती के बारे में बताया। साथ ही उन्होंने अंधविश्वासों के पीछे कार्य कर रहे मनोविज्ञान पर भी अपने विचार साझा किये।

डा. महेन्द्र विवेक ने अपनी बात रखते हुए बताया कि धार्मिक आस्था मानव जीवन में आड़े नहीं आनी चाहिए। उन्होंने आगे बताया कि पुजारी वर्ग यूरोप में किसी दौर में स्वर्ग में पहुंचाने के प्रमाण-पत्र बेचा करता था? उन्होंने नागरिकता संशोधन एक्ट एवं एन.आर.सी. पर विश्लेषणात्मक चर्चा करते हुए समझाया कि यह कानून भारतीय संविधान के अनुरूप नहीं है। कार्यक्रम के मुख्यातिथि श्री सेवा राम सैनी ने अपने संबोधन में कहा कि तर्कशील सोसायटी के क्रियाक्लाप एवं उद्देश्य पूरी तरह से समाज के हित में हैं। सोसायटी के विचारों का और अधिक प्रचार एवं प्रसार होना चाहिए।

कृष्ण राजौंद ने पुच्छा देने वालों की पोल खोलते हुए बताया कि किस प्रकार से ओझा लोग भोले-भाले लोगों को पित्तरों के नाम पर गुमराह करते हैं। स्नेकमैन सतीश फफड़ाना ने सांपों के बारे में विस्तार से जानकारी दी तथा सांपों को पकड़ने के दौरान हुए अपने अनुभव भी साझा किये।

फरियाद सनियाणा एवं रामप्रसाद ने चमत्कारों को पर्दाफाश कार्यक्रम प्रस्तुत करते हुए विभिन्न प्रकार के जादू के ट्रिक दिखा कर उनके रहस्यों के बारे में समझाया। इसके साथ ही फरियाद सनियाणा ने दर्शकों से संबोधित होते हुए अपील की कि तर्कशील सोसायटी के विचारों का अधिक से अधिक प्रचार-प्रसार किया जाए।

राज्य कार्यकारिणी के सदस्य ईश्वर सिंह सफीदों ने राज्य भर से आए हुए कार्यकर्त्ताओं एवं प्रतिनिधियों का धन्यवाद किया। मंच का संचालन सुरेश रणवा एवं श्याम लाल सफीदों द्वारा किया गया। कार्यक्रम को सफल बनाने में जसबीर सफीदों, गुरनाम सिंह, ईश्वर सफीदों, चन्द्र सैनी इत्यादि साथियों का विशेष योगदान रहा। इसके साथ-साथ पायनियर स्कूल के प्रबन्धक श्री बराड़ साहिब का कार्यक्रम के आयोजन में मुख्य सहयोग रहा।

सुभाष तितरम द्वारा इस दौरान पुस्तक प्रदर्शनी लगाई गई।

11वां नास्तिक सम्मेलन विजयवाड़ा में सफलतापूर्वक सम्पन्न

-हरचंद भिण्डर : मो. 9417923785

नास्तिक केन्द्र विजयवाड़ा, आंध्रप्रदेश की ओर से आयोजित 11वां विश्व नास्तिक सम्मेलन संपन्न हो गया। तर्कशील सोसायटी पंजाब एवं तर्कशील सोसायटी हरियाणा की ओर से लगभग 45 प्रतिनिधियों ने इसमें भाग लिया। 4 व 5 जनवरी, 2020 को हुए इस सम्मेलन का प्रारम्भ नास्तिक केन्द्र विजयवाड़ा के डॉ. स्मरम द्वारा वहां पहुंचे प्रतिनिधियों के स्वागत भाषण के साथ हुआ। उन्होंने नास्तिक केन्द्र विजयवाड़ा की सरगर्मियों का विहंगावलोकन करते हुए कहा कि नास्तिक केंद्र ने आंध्रप्रदेश में जाति-पाति, अंधविश्वास एवं धर्म के कब्जे से मुक्ति के लिए संघर्ष की शुरूआत करके मानववाद एवं पारस्परिक सोहार्द को बढ़ाया तथा जय इन्सान का उद्घोष किया। इस सम्मेलन की अध्यक्षता जर्मनी से आए डॉ.वोल्कर म्यूलर ने की तथा इस कार्यक्रम के मुख्यातिथि यू.के. से ह्यूमनिस्ट इंटरनेशनल के कार्यकारी अध्यक्ष गैरी मेक्लैंड रहे। सम्मेलन के अध्यक्ष मण्डल में फेडरेशन ऑफ इंडियन रेशनलिस्ट एसोसिएशन (फिरा) के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. नरेन्द्र नायक, महसचिव सुदेश घोडेराव, कोषसचिव हरचंद भिंडर, नार्थ अमेरिकन रेशनलिस्ट सोसायटी ओंटारियो, कनाडा के कन्वीनर बलदेव रहिया, फिंरा के भूतपूर्व महासचिव बलविन्द्र बरनाला, मानवाधिकार कार्यकर्त्ता विद्या भूषण रावत, नई दिल्ली, डॉ. जी.विलियम नास्तिक केन्द्र विजयवाड़ा, डॉ. दानेश्वर साहू, रेशनालिस्ट एसोसिएशन ओडिशा, विज्ञानी एवं लेखक डॉ. चंन्द्र चक्रावर्ती, कीर्ति प्रधान-विश्व शांति मार्च, बंगलोर, डॉ. जी. प्रसाद गांधीवादी विचारधारा प्रचारक, हैदराबाद शामिल रहे।

इस सम्मेलन का मुख्य विषय 'नास्तिकता जीवन के लिए क्यों जरूरी' था। इस विषय पर भिन्न-भिन्न वक्ताओं ने अपने विचार रखे। वोल्कर म्यूलर ने सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि मैं 11वें विश्व नास्तिक सम्मेलन के समय पर नास्तिक केन्द्र के 80 वर्ष पूर्ण होने पर आप सभी को बधाई देता हूं। यद्यपि मैं जर्मनी निवासी हूं तो भी एक वैश्विक नास्तिक गांव में महसूस करता हूं और हम एक दूसरे से बहुत कुछ सीख सकते हैं। उन्होनें आगे कहा कि जर्मनी में राजनीतिक कुलीनवर्ग की असफलता के कारण नस्लवाद, हिंसा एवं दक्षिणपंथी आतंकवाद पैदा हुआ, परंतु अब मानवता के लिए शांति, स्वतन्त्रता, जनतन्त्र एवं नास्तिकता समय की जरूरत है।

मिस्टर गैरी मैक्लैंड कार्यकारी अध्यक्ष ह्यूमनिस्ट इंटरनेशनल यू.के. ने कहा कि ह्यूमनिस्ट इंटरनेशनल को गर्व है कि जो भारतीय मानवतावादी एवं तर्कशील दोस्तों ने मानवतावाद के विश्वव्यापी आंदोलन में हिस्सा डाला है। सारे संसार में एवं भारत में मानवतावादी एवं तर्कशील लहर के लिए बहुत से खतरे धार्मिक कट्टरता के कारण पैदा हो रहे हैं। बढ़ती हुई कट्टरता एवं इसका राजनीतिकरण विश्व के लिए खतरा है। धर्म एवं नस्ल को उकसाकर 'पापूलिस्ट' सरकारों का बनना लोकतन्त्र के लिए बहुत बड़ा खतरा है। उन्होंने आगे कहा कि धर्म लोगों के मानवाधिकारों का हनन करता है तथा यह गैरवैज्ञानिक है। परंतु इतना कुछ होने के बावजूद भी हम आगे बढ़ रहे हैं और हमने खतरों पर विजय प्राप्त की है।

दिल्ली से मानवाधिकारों के कार्यकर्त्ता भूषण रावत ने भारत में दलितों पर बढ़ रहे अत्याचारों के बारे में बोलते हुए कहा कि जाति-पाति पर आधारित मानवाधिकारों का दमन चिंता वाली बात है। उन्होंने आगे कहा कि वर्तमान केंद्रीय सरकार केवल और केवल हिन्दुत्व के शीशे से ही देखती है। भारत के सभी मुसलमानों को आतंकवादी एवं देशद्रोही घोषित कर के वोटों की राजनीति कर रही है। विज्ञानी एवं लेखिका चंदना चक्रवर्ती ने कहा कि जब सरकार ही अंधविश्वासों को बढ़ावा दे और मीडिया इसका प्रचार करे तथा उपग्रह छोड़ते समय भी धार्मिक रस्में करे और नारियलों को फोड़ा जाये तो फिर कैसे कह सकते हैं कि भारत 21वीं सदी में विज्ञान की ओर अग्रसर होगा।

नार्थ अमेरिकन रेशनलिस्ट सोसायटी- ओंटारियो, कनाडा के कन्वीनर बलदेव रहिया ने तर्कशीलता के महत्व के बारे अपनी बात रखते हुए कहा कि आज इसकी जरूरत महसूस हो रही है। मानवाधिकारों की सुरक्षा तर्कशीलता ही कर सकती है। तर्कशील सोसायटी पंजाब के भूतपूर्व राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय विभाग के अध्यक्ष एवं फिरा के राष्ट्रीय महासचिव बलविन्द्र बरनाला ने शहीद भगत सिंह का हवाला देते हुए कहा कि भगत सिंह ने स्वयं के बारे में बताया था कि वह नास्तिक क्यों है। विश्व नास्तिक सम्मेलन के बैनर पर पेरियार एवं गोरा, जो दक्षिण भारत के विख्यात नास्तिक नेता थे, के चित्रों के साथ शहीद भगत सिंह को भी विशेष स्थान देने पर

उन्होंने प्रसन्नता व्यक्त की। इस दौरान तर्कशील सोसायटी की गतिविधियों के बारे में भी बताया गया। सायंकाल के समय तर्कशील सोसायटी पंजाब की पटियाला इकाई की सरगर्म सदस्य मैडम स्नेहदीप ने डा. जगतार की गज़ल 'हर मोड़ पर सलीबें...' गा कर फिर उसका अंग्रेजी में अनुवाद कर के बताया, जिसे अत्यन्त सराहा गया।

सम्मेलन के दूसरे दिन द्राविड़ कड़गम तमिलनाडू के अध्यक्ष डॉ. वीरामणि, जो रेशनलिस्ट फ्रंट तमिलनाडू के संरक्षक भी हैं, ने समापन भाषण में पेरियार की फिलास्फी की व्याख्या करते हुए कहा कि पेरियार एवं गोरा समकालीन थे तथा आंध्रप्रदेश एवं तमिनाडू में दिलेर नास्तिक नेता थे। उन्होंने आगे बताया कि कुछ लोग नवयुवकों को नास्तिक बन जाने के लिए कहते हैं, परंतु मैं इस से सहमत नहीं हूं, क्योंकि बच्चा जन्म के समय से ही नास्तिक होता है। जब वह बड़ा होता है तो मां-बाप एवं शिक्षा-व्यवस्था उसे धार्मिक बनाते हैं। सम्मेलन के समापन के समय कुछ प्रस्ताव भी पारित किये गये तथा उपस्थित प्रतिनिधियों के द्वारा उनका अनुमोदन किया गया। सम्मेलन के अन्त में डॉ. विजयम, जो कि डायमेंशिया रोग से पीड़ित थे, ने भी अपनी उपस्थित दर्ज की तथा विकास गोरा ने उपस्थित प्रतिनिधियों का धन्यवाद करते हुए कहा कि हम सब को इस सम्मेलन से नई ऊर्जा मिली है और इससे हम आगे से और भी उत्साहित हो कर नास्तिकता, तर्कशीलता एवं मानवतावाद के लिए कार्य करते रहेंगे।

यहां पर ही फेडरेशन ऑफ इंडियन रेशनलिस्ट एसोसिएशन की मीटिंग डॉ. नरेन्द्र नायक की अध्यक्षता में आयोजित की गई, जिसमें बड़ी संख्या में संगठनों के प्रतिनिधि सम्मिलित हुए। इनमें डॉ.दानेश्वर साहू, मि. लाल सलाम, मि. एलागिरी सामी, एम.एस.एन.मारूथी, राजा सुरेश, मैडम बसंती आचार्य, राजेश्वर चैलिमेला, ई.टी.राव, एन.वी सुब्बैया, मोहम्मद शकूर, हरियाणा से फरियाद सनियाणा तथा पंजाब से हरचन्द भिंडर, समीत सिंह, बलविन्द्र बरनाला और बलदेव रहिया आदि ने भाग लिया। इसके पंजाब और हरियाणा से भाग लेने वाले साथियों में अजायद जलालाणा, जगसीर जीदा, पुरुषोत्तम बल्ली, जोरा सिंह, बाई अमरजीत बिक्कर आजाद, प्रो॰ पूरण सिंह, सुरिन्द्ररपाल, डॉ. अनिल कुमार, जनकराज , परमजीत सिंह, अवतार सिंह और हरियाणा से आत्मा सिंह रत्तोके, और मनोज कुमार प्रमुख थे। इस समय देश में बढ़ रहे धार्मिक कट्टरवाद और प्रतिक्रियावाद पर विचार मंथन हुआ। राष्ट्रीय महासचिव सुदेश घोडेराव ने अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की। उपस्थित प्रतिनिधियों ने अपने-अपने संगठन की गतिविधियों के बारे में जानकारी दी। तर्कशील सोसायटी पंजाब की गतिविधियों के बारे में सुमीत सिंह ने रिपोर्ट पेश की। इस समय फिरा का आगामी सम्मेलन पंजाब में करवाने के बारे में भी चर्चा की गई।

-हिन्दी अनुवादःबलवंत सिंह लेक्चरार

गांव डोभी (हिसार) में तर्कशील साथियों द्वारा 'चमत्कारों का पर्दाफाश' कार्यक्रम का आयोजन

गत 26 जनवरी को गांव लालपुर ढाणी डोभी जिला हिसार के राजकीय प्राथमिक पाठशाला में तर्कशील सोसायटी हरियाणा के साथियों ने 'चमत्कारों का पर्दाफाश' नाम से एक कार्यक्रम का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में मुख्यातिथि के रूप में डॉ. जय सिंह दाहिमा, वरिष्ठ समाजसेवी सम्मिलित हुए।

कार्यक्रम में फरियाद सनियाना और रामप्रसाद मुगलपुरा व सुरेंद्र छाबा सदलपुर ने प्रोग्राम प्रस्तुत करते हुए समाज में फैले अंधविश्वास, कुरीतियों के ऊपर बहुत गहराई से प्रकाश डाला तथा कथित बाबाओं द्वारा किये जाने वाले चमत्कारों की वास्तविकता पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि कैसे तथाकथित बाबा चमत्कार दिखाने का दावा करके लोगों की आंखों में धूल झोंकते हैं जो कि केवल ट्रिक होते हैं, जो कोई भी व्यक्ति थोड़े से अभ्यास के साथ कर सकता है।

इस कार्यक्रम की सभी उपस्थित लोगों ने सराहना की और तर्कशील विचारधारा को ही सबसे बढ़िया विचारधारा माना और संकल्प लिया कि भविष्य में वे भी इसी विचारधारा को अपनायेंगे और अपने बच्चों और परिवार को भी सिखायेंगे।

कार्यक्रम में श्री दलबीर किरमारा, राज्य प्रधान, हरियाणा रोडवेज संयुक्त कर्मचारी संघ ने विशिष्ट अतिथि के रूप में शिरकत की। अन्य लोगों के अलावा सुनील कुमार नेहरा, युवा समाजसेवी, जय प्रकाश गोदारा, युवा समाज सेवी, पवन खारिया, उपाध्यक्ष, भाजपा, सुखबीर संह डूडी, चेयरमैन, मार्किट कमेटी आदमपर, महेंद्र सिंह, जे.ई. पीडब्ल्यूडी, हिसार व जोगिंदर सिंह पनिहार, युवा समाजसेवी उपस्थित रहे। कार्यक्रम को सफल बनाने में क्रांतिकारी आजाद सिंह हिन्दुस्तानी, अंतराष्ट्रीय अवार्डी एवं युवा समजासेवी की का मुख्य सहयोग रहा।

केस रिपोर्ट

फिर 'देवता' की नाराजगी दूर हो गई

–बलवंत सिंह, लेक्चरार

सतीश का परिवार मूलरूप से उत्तर प्रदेश का रहने वाला था। किसी समय में सतीश के दादा जी रेलवे में चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी के तौर पर भर्ती हो गए औीर उनकी नियुक्ति दिल्ली में हो गई थी। पहले पहल तो वे कई वर्षो तक अकेले रह कर ही नौकरी करते रहे, परंतु बाद में परिवार के रहने के लिए छोटा मोटा निवास-स्थान बना लेने पर उन्होंने अपने परिवार को भी अपने पास दिल्ली में ही बुलवा लिया। जब उनका परिवार दिल्ली में आया तब सतीश अभी छोटा सा बालक ही था। सतीश का पिता दर्जी का काम जनता था, अतः दिल्ली में आकर उसका यह काम भी अच्छा चल निकला। सतीश बचपन से ही अपने पिता के साथा कपडों की सिलाई का काम करने लग गया था। अतः वह अपने पिता के साथ काम करते करते एक कुशल कारीगर बन गया था।

जवान होने पर सतीश का रिश्ता उत्तर प्रदेश की ही एक लड़की शिवानी के साथ तय हो गया। और शीघ्र ही पूर्ण सामाजिक रस्मों के अनुसार दोनों की शादी हो गई। शादी के बाद कुछ महीनों तक तो शिवानी अपने ससुराल में हंसी खुशी से रहती रही। परंतु कुछ समय के पश्चात् शिवानी के व्यवहार में परिवर्तन आना शुरू हो गया। वह हर समय अपने शरीर में दर्द होने की शिकायत करने लग गई। घर वाले उसे दवाई दिलवा कर लाते, परंतु उसे दवाई खाने पर भी आराम न आता। फिर वह कभी पेट दर्द और कभी सिर में दर्द होने की शिकायत करने लग जाती। धीरे-धीरे वह चारपाई पर ही पड़ी रहने लग गई।

घर में धार्मिक माहौल होने के कारण उनका पूरा परिवार ही पूजा-पाठ किया करता था। उन्होंने घर में एक कमरे में छोटा सा मंदिर भी बना रखा था, जिसमें अनेक देवी-देवताओं के चित्र एवं छोटी-छोटी मूर्तियां भी सजा रखी थी। सारा परिवार घर में बने हुए मंदिर में नियमित रूप से पूजा-पाठ करने के साथ-साथ उस इलाके के एक प्रतिष्ठित मंदिर में भी समय-समय पर पूजा अर्चना के लिए जाया करता था। पहले तो शिवानी भी परिवार वालों के साथ नियमित रूप में पूजा-अर्चना में सम्मिलित हुआ करती थी। परंतु अब पिछले कुछ समय से वह पूजा-पाठ करने से आनाकानी करने लग गई थी। घर वालों द्वारा मजबूर करने पर अब जब कभी वह घर में पूजा-पाठ करने लगती तो उसके शरीर में अजीब सी हरकत होने लग जाती और वह सिर घुमा कर खेलना शुरू कर देती। ऐसे में उस पर आई 'बला' को टालने के लिए परम्परागत सोच के अनुसार घर का कोई सदस्य 'हनुमान चालीसा' का पाठ करने लग जाता तो वह एकदम खूंखार सी शक्ल बनाकर अपने शरीर को तोड़ती-मरोड़ती हुई घर से बाहर भाग जाती। अब जब भी उसके घर वाले उसे किसी मंदिर में माथा टेकने के लिए ले जाते तो वह मंदिर के मुख्य दरवाजे पर ही बेसुध होकर गिर पड़ती। फिर उसे किसी गाड़ी में लाद कर ही घर में वापिस लाना पड़ता।

ऐसे में परेशान होकर घर वाले उसे अनेकों ओझाओं के पास झाड़फूंक करवाने के लिए ले गये। किसी भी मंदिर में ले जाने से शिवानी की परेशानी बढ़ जाने की बात सुन कर अधिकतर ओझाओं ने बताया कि उनके देवता उनसे नाराज हो गये हैं। इस कारण से मंदिर जैसी पवित्र जगह पर शिवानी की ऐसी हालत हो जाती है। उन ओझाओं ने उस कथित देवता की नाराजगी दूर करने के नाम पर उनसे कई प्रकार के अनुष्ठान करवाए, जिन पर उनके हजारों रूपये व्यर्थ में गंवाए । परंतु शिवानी की हालत और अधिक खराब होती चली गई। जब अनेकों प्रकार की तांत्रिक क्रियाओं वे अनुष्ठानों द्वारा भी शिवानी को किसी प्रकार का कोई आराम न आया तो उस के परिवार वाले अत्यधिक परेशान हो उठे।

इस दौरान एक परिचित, जो कि तर्कशील सोसायटी द्वारा किये जाने वाले जनहित कार्यों से प्रभावित था, उसने जब शिवानी की ऐसी हालत देखी तो उन्हें रविवार को लगने वाले मनोरोग परामर्श केन्द्र में मेरे पास भेज दिया। जब शिवानी को मेरे पास लाया गया तो उसकी हालत अत्यन्त दयनीय थी। वह अत्यंत कमजोर दिखाई दे रही थी। उसे देखने पर लगता था कि जैसे उसने कई दिनों से खाना भी न खाया हो। वह सूख कर कर कांटा हुई दिखाई दे रही थी।

मैंने जब मनोवैज्ञानिक ढंग से उसे विश्वास में लेकर बातचीत करनी शुरू की तो थोड़ी ही देर में वह मेरे प्रभाव आना शुरू हो गई। उसका विश्वास जीत कर जब मैंने उससे उसकी सारी समस्या बताने के लिए कहा तो एकदम से रोना शुरू कर दिया। मेरे द्वारा थोड़ा सा ढांढस बंधाने पर उसने धीरे-धीरे अपनी समस्या को इस प्रकार से विवरण देकर अपने मन को हल्का करना शुरू किया।

शिवानी का मायका परिवार उत्तर प्रदेश के एक शहर का रहने वाला था। उसका पिता भारतीय सेना से रिटायर एक सैनिक था। परिवार में शिवानी एवं उस का एक छोटा भाई था। उनके पिता ने उनकी पढ़ाई-लिखाई की ओर विशेष ध्यान दिया था। शिवानी ने बी.ए. तक की शिक्षा ग्रहण की थी तथा उसका भाई उस समय बी.टेक् कर रहा था। शहर का वातावरण और अपने माता-पिता की लाडली बेटी होने के कारण शिवानी को अपनी सहेलियों के साथ धूमने-फिरने की पूरी आजादी थी।

कई बार कई बच्चे अपने मां-बाप द्वारा दी गई वैचारिक स्वतंत्रता को अनुचित तरीके से भी इस्तेमाल कर लेते हैं। शिवानी के साथ भी ऐसा ही हुआ। उसका कालेज में पढ़ते समय एक सहपाठी के साथ प्रेम-संबंध कायम हो गया था। अपनी पढ़ाई पूर्ण करने के पश्चात् भी उन दोनों के बीच यह प्रेम संबंध कायम ही रहा। प्रायः शिवानी अपनी सहेलियों के पास जाने का बहाना बना कर अपने उस प्रेमी से मिलने चली जाया करती थी। उनका यह प्रेम संबंध मर्यादा की सभी सीमांए लांघ कर आपस में शारीरिक संबंध बना लेने तक पहुंच गया। पहले पहल तो शिवानी अपने प्रेमी के साथ शारीरिक संबंध बना कर आनंद उठाती रही, परंतु जब इसके परिणाम स्वरूप शिवानी को गर्भ ठहर गया ता उसे अपने भविष्य की चिंता सताने लगी। जब शिवानी ने अपने प्रेमी को इसकी जानकारी देकर आपस में शादी कर लेने के लिए कहना शुरू किया तो उसके प्रेमी ने उससे यह कह कर बिल्कुल किनारा कर लिया कि उसके मां-बाप उसका अंतर्जातीय विवाह करने के बिल्कूल खिलाफ हैं। उसके पश्चात् उसने शिवानी से मिलना-जुलना बिल्कुल ही छोड़ दिया, यहां तक कि उसने अपना फोन भी बिल्कुल बंद कर दिया।

अब शिवानी को अपने भविष्य की चिंता सताने लगी। वह दुविधा में थी कि अब वह क्या करे? इसी दुविधा में वह चिंताग्रस्त रहने लगी। उसके चेहरे से सारी रौनक पंख लगा कर उड़ चुकी थी। उसकी मां को शिवानी की ऐसी हालत देख कर किसी अनहोनी का संदेह होने लगा। उसने समझदारी से काम लेते हुए अपनी बेटी से प्यार व दुलार के साथ उसकी समस्या के बारे में पूछना शुरू कर दिया।

अपनी मां द्वारा की गई सहानुभूति पूर्ण बातचीत के कारण शिवानी ने हिम्मत कर अपने प्रेम संबंधों की सारी कहानी अपनी मां को बता दी और साथ ही गर्भ ठहर जाने और उस प्रेमी द्वारा मुंह फेर लेने की सारी बात भी उसे बता दी। सारी बात सुनकर उसकी मां के पैरों के नीचे से जमीन खिसक गई। वह परेशान तो बहुत हुई, परंतु उसने सावधानी से काम लेते हुए अपने पति को भी इस अनहोनी के बारे में अवगत करवा दिया। साथ ही उसने परिवार की इज़्ज़त-आबरू कायम रखने के लिए गुपचुप तरीके से शिवानी का गर्भपात करवाने के लिए अपने पति को सहमत कर लिया। गर्भपात करवाने के पश्चात् उन्होंने शिवानी पर घर से बाहर जाने की पाबंदियां लगा दीं और साथ ही शिवानी के लिए योग्य वर की तलाश तेज कर दी। उन्होंने अपने रिश्तेदारों से भी शिवानी के लिए कोई लड़का ढूंढने के लिए निवेदन करना शुरू करा दिया। कुछ ही दिनों में एक रिश्तेदार द्वारा उन्हें सतीश के बारे में जानकारी मिली। सतीश का काम धंधा और

उसकी शक्ल-सूरत तथा उसकी पारिवारिक पृष्ठभूमि देख कर उन्हें यह रिश्ता पसंद आ गया।

अपने सिर का भार हल्का करने के उद्देश्य से शिवानी के माता-पिता ने सतीश के साथ उसका रिश्ता तय करने के पश्चात् जल्दी ही उनकी शादी का दिन निश्चित करवा लिया। शादी के कुछ महीनों बाद तक तो सारा मामला ठीक चलता रहा परंतु कुछ महीनों के पश्चात् शिवानी को अनेक प्रकार की समस्याओं ने घेर लिया। वह लगातार परेशान रहने लग गई। जब डाक्टरों ने दवाइयों से आराम नहीं आया तो वे उएसे लेकर आसपास के ओझाओं के पास ले कर जाने लग गये।

ओझाओं द्वारा शिवानी पर किसी ओपरे-पराए का चक्कर बता देने पर वह और अधिक परेशान रहने लग गई। जब ओझाओं के सभी प्रयत्न असफल सिद्ध हो गये तो अन्त में थक-हार कर वे उसे तर्कशीलों के पास लेकर गए। तर्कशीलों द्वारा मनोवैज्ञानिक ढंग से शिवानी की मानसिक परेशानियों का हल कर देने से वह बिल्कुल ठीक रहने लग गई।

(नोट : यह एक सत्य घटना है, परिस्थितिवश पात्रों के नाम बदल दिये गये हैं।)

अंधविश्वास की बेड़ियों में सिसक रही प्रगति

पिछले महीने मालदा के गाजोल में बीमार बच्चों को डॉक्टर की बजाय उनका झाड़-फूंक करना, दो बच्चों की मौत का कारण बना. एक दूसरी घटना में दक्षिण 24 परगना के जीवनतला में भी पानी में डूबने वाले बच्चे को झाड़-फूंक के जरिये स्वस्थ करने की कोशिश असफल रही. हालिया कुछ घटनाओं पर नजर डालें तो पता चलता है कि अंधविश्वास, केवल विकास से दूर ग्रामीण इलाकों की कहानी नहीं, बल्कि कई बार यह पढ़े-लिखे लोगों को भी अपनी जकड़ में ले लेता है.

स्कूलों में कई बार परेशानी का सबब नहीं है भूत की अफवाहः

वर्ष 2017 में बांकुड़ा जिले के कोतुलपुर स्थित मिर्जापुर हाइस्कूल में वर्ष 2017 के अगस्त महीने में अजीबोगरीब घटनाएं हुई. स्कूल की छात्राओं में यह विश्वास बैठ गया कि स्कूल के शौचालय में भूत है. भूत देखने का दावा करते हुए 20 छात्राएं बेहोश हो गयी थीं. उन्हें अस्पताल में भर्ती कराना पड़ा था. बाद में पता चला कि एक ओझा ने अपना उल्लू सीधा करने के लिए यह अफवाह फैलायी थी. स्कूल प्रबंधन की ओर से थाने में शिकायत दर्ज करायी गयी. ओझा को गिरफ्तार किया गया.

वर्ष 2019, पुरुलिया जिले के बाघमुंडी स्थित धनूडी हाइस्कूल में वर्ष 2019 में जुलाई महीने में स्कूल की कुछ छात्राओं में 'देवी' आने की अफवाह फैल गयी. स्कूल की चार-पांच छात्राओं को अजीबोगरीब हरकतें करते देखा गया. बाद में उनकी चिकित्सा पुरुलिया जिला अस्पताल में भी की गयी. हालांकि एक बार फिर यह पाया गया कि जानबूझकर यह अफवाह फैलायी गयी थी.

वर्ष 2019, हुगली के सिंगूर के हरिपाल स्थित एक स्कूल में भूतिया शक्तियों से निपटने के लिए बकायदा यज्ञ का आयोजन किया जाना था. बताया जाता है कि इसके लिए स्थानीय एक तांत्रिक से भी 50 हजार रुपये में यज्ञ कराने के लिए स्कूल ने बात कर ली थी. हालांकि विज्ञान मंच के हस्तक्षेप से ऐसा न हो सका.

मंडे मेगा स्टोरी

क्या कहता है कानूनः

ड्रग्स एंड मैजिक रेमीडीज (ऑब्जेक्शनल एडवर्टिजमेंट) एक्ट 1954 तथा द ड्रग्स एंड क स्मेटिक्स एक्ट, 1940 (अमेंडमेंट्स 2009) के मुताबिक अलौकिक उपायों से चिकित्सा करने का दावा करना तथा उसका विज्ञापन देना अवैध और दंडनीय है.

जानकारों के मुताबिक अफवाह फैलाने वालों के खिलाफ सख्त सजा का प्रावधान नहीं है. इसलिए इस पर अंकुश लगाना मुश्किल है. इसके अलावा ग्रामीण इलाकों में चिकित्सा परिसेवा बेहतर न होने की वजह से लोगों को ओझा-तांत्रिकों की शरण में जाते देखा जाता है. इस दिशा में लगातार जागरूकता फैलाने की जरूरत महसूस की जाती है.

क्या कहते हैं विशेषज्ञः

भारतीय विज्ञान व युक्तिवादी समिति के अध्यक्ष प्रबीर घोष कहते हैं कि अधिकांश मामलों में भूत-प्रेत होने की अफवाह जानबूझकर फैलायी जाती है. देखते ही देखते यह 'मास हिस्टीरिया' का रूप ले लेता है. लोग इस हिस्टीरिया से संक्रमित होने लगते हैं व इस पर यकीन करने लगते हैं. उनकी समिति ने कई बार स्कूलों में जाकर विद्यार्थियों की काउंसिलिंग की है.

-रिपोर्टः सन्तोष कुमार, भारतीय विज्ञान व युक्तिवादी समिति, कोलकाता।

नशे की लत

-आर.पी.गांधी

प्राचीन काल से ही मनुष्य नशों का प्रयोग करते आया है। वेदों में इसका उल्लेख सोम रस के नाम से हुआ है। हमारे प्राचीन ग्रन्थों में जहां काल्पनिक स्वर्ग का वर्णन मिलता है। उसमें अप्सरा और सोम रस की बात पढने को मिलती है। इस्लाम में हवीश के अन्दर जन्नत का जिक्र है जहां पर हूरें रहती हैं, शराब की नहरें बहती हैं और पानी की नहरें बहती हैं। मुनष्य को औरत और शराब का लालच दिया गया है। पुरातन समय में स्त्री को भोग वस्तु ही माना जाता रहा है। जबकि कुरान में शराब पीना मना है। कुछ ऐसा भी मानते हैं कि देवतागण भांग का ही नशा करते थे जो आसानी से हर जगह उपलब्ध हो जाती है। नशा चाहे किसी भी प्रकार का क्यों न हो मानव शरीर और दिमाग पर बुरा असर छोड़ता है। सोचने की शक्ति कमजोर पडती है। यादास्त में कमी आती है। जिगर, हृदय, गुर्दे पर इसके बुरे असर पड़ते है। सबसे बडी बात तो यह है कि नशेड़ी व्यक्ति की समाज में इज्ज़त कम हो जाती है। जब कोई परिवार अपनी लड़की के लिए वर की तलाश करता है तो उसकी पहली खोजबीन यह होती है कि लड़का कहीं नशा तो नहीं करता। कारण नशेड़ी आदमी को अपने पर नियंत्रण नहीं होता। कई बार वह अपने शौक को पूरा करने के लिए घर के बर्तन तक बेच डालते है। जिससे परिवार का भविष्य धूमिल हो जाता है और विनाश की ओर अग्रसर होता है। किसी राष्ट्र को तबाह करने के लिए विरोधी देश नशे की समगलिंग करते है। अफगानिस्तान की रोटी-रोजी का मुख्य व्यवसाय अफीम की खेती ही है। इन दिनों बाजार में अनेक प्रकार के नशे उपलब्ध है। अफीम, पोस्त, समैक, एल.एस.डी इत्यादि। एल.एस.डी. आप्रेशन में दर्द को कम करने के लिए प्रयोग की जाती थी। बाद में नशेड़ियों ने इसे नशे के तौर पर इस्तेमाल करना शुरू कर दिया। ऐसे ही सुल्फा, गांजा जिसे लोग चिल्म में रखकर धुंआं उड़ाते रहते हैं। दुनिया की हर अच्छी बुरी बात से बेपरवाह जिन्दगी गुजारते हैं। नशेड़ी युवक भी इसका इसतेमाल करते हुए देखे जा सकते हैं। लखनऊ में एक चाय की दुकान में चाय पत्ती के स्थान पर पोस्त का चूरा इस्तेमाल किया जाता था जहां पर चाय पीने वालों की भीड़ लगी रहती थी।

नशे में लोगों को डूबते तो देखा है तैरते नहीं देखा। इन सब नशों से बचने का एक ही रास्ता है माता पिता अपने बच्चों पर नजर रखें और खुला पैसा उनको न दें। फालतू पैसा भी बुराईयों को जन्म देता है। कई परिवारों के पास भ्रष्ट तरीकों से कमाया धन होता है। वे ऐसे धन को बेरहमी से खर्च करते हैं और अपने बच्चों को भी पैसे से लाद देते है। परिणाम यह होता है कि मार्गदर्शन के अभाव में बच्चे गलत रास्तों पर चल पड़ते है। जिनमें नशे की लत भी एक है।

यूरोपीय देशों में हिप्पीइज़्म काफी दिनों प्रचलित रहा। इसका मुख्य कारण कमज़ोर गृहस्थी और मां बाप में तलाक। बच्चे मॉ बाप से वंचित होकर लावारिस हो जाते हैं और बुरी आदतों का शिकार हो जाते है। देवानन्द ने इस प्रकार की एक फिल्म भी बनाई थी 'हरे रामा, हरे कृष्णा' इसमें एक गीत फिल्माया गया था 'दम्म मारो दम, न होश रहे न गम, हरे रामा, हरे कृष्णा।' यह गीत नशे की ओर ही संकेत करता है और नशे को गमों की दवाई के रूप में पेश करता है। ऐसे गीतों ने भी नशे की बुराई को बढ़ावा दिया है। शराबी परिवारों में घर का खर्च चलाने में सबसे बडी कठिनाई महिलाओं को आती है। गांव भम्बोली जिला यमुनानगर में मैं महिलाओं की सभा को सम्बोधित कर रहा था तो मैने उनसे एक प्रश्न किया था कि बारी-बारी वे अपनी समस्याएं बताएं। उसमें एक नई नवेली दुल्हन ने उठकर बताया कि मेरा पति एक कट्टे में गेहूँ भरकर ले जा रहा था ताकि उसे बेचकर शराब खरीद सके। जब मैने उसे मना किया तो उसने मुझे थप्पड़ मारे और कहने लगा कि मेरी अपनी कमाई है, मुझे इसे बेचने का अधिकार है। तब महिलाओं को मैंने सुझाव दिया कि उसके पति को बैठकर बात करें कि यदि यही व्यवहार तुम्हारी बहन के साथ हो तो तुम्हें, कैसा लगेगा? शराबी व्यक्ति को सबसे बड़ा नुकसान यह होता है कि वह समाज में अपनी प्रतिष्ठा खो बैठता है। वह लोगों के विश्वास का

पात्र नहीं रहता। उदहारण के लिए मैं दो प्रचलित कहानियां लिख रहा हूँः

एक चूहा शराब के घड़े में गिर गया तो पास से जब एक बिल्ली गुज़री तो चूहा बोला ''मौसी, मुझे इस घड़े से निकाल दो''। बिल्ली बोली, बेटा, निकाल तो दूंगी पर तुझे खाऊंगी। चूहे का उत्तर था, घड़े में डूबकर मरने से तो बेहतर है कि किसी का भोजन बनूं। जब बिल्ली चूहे को निकाल कर खाने लगी तो चूहा बोला, मौसी दो मिनट रुको, मुझे सूख तो जाने दो जब चूहा सूख गया तो भाग गया। बिल्ली ने चूहे से कहा, अरे रुक जाओ, तुमने तो मुझसे वादा किया था। इस पर चूहे का उत्तर था-वादा तो मैंने तब किया था जब शराब मेरे अन्दर गई हुई थी, अब कैसा वायदा? कहने का अर्थ है कि शराबी लोग नशे की हालत में बड़ी-बड़ी बातें करते हैं। जब नशा उतरता है तो अपने को ठगा हुआ सा महसूस करते हैं।

प्राचीन काल में जब राजा, महाराजा होते थे तो राजा लोग जनता का हाल जानने के लिए साधारण पोशाक में घोड़े पर सवार होकर अपने मंत्री के साथ शहर मे ंनिकलते थे। ऐसे ही एक राजा जब अपने मंत्री के साथ शहर में घूम रहा था तो उनको एक शराबी मिला। नशे में धुत शराबी ने राजा से पूछा, ओए यह गधा बेचेगा। राजा ने मंत्री को आदेश दिया कि इसका नाम और पता नोट कर लो। अगले दिन सुबह राजा ने उस व्यक्ति को दरबार में बुलवाया और उसे पूछने लगे कि क्या गधा खरीदोगे? तो वह व्यक्ति हाथ जोड़कर जवाब देने लगा-महाराज वे व्यापारी चले गए जो रात को गधे खरीद रहे थे अब तो मैं एक साधारण व्यक्ति हूँ।

इस कहानी का भाव भी यही है कि नशे की हालत में शराबी कुछ से कुछ बोल जाता है जिसका उसको बाद में पछतावा होता है। इससे वह समाज मे ंअपना विश्वास खो बैठता है।

हरियाणा का पड़ौसी प्रान्त पंजाब जो पूरे देश का खाद्यान्न उपलब्ध कराता है, वहां के युवकों में विदेश में जाने की एक ललक है। लगभग प्रत्येक परिवार का एक व्यक्ति विदेश में गया हुआ है। कई लोग तो अपनी जमीन बेचकर या गिरवी रखकर भी ऐसा करते हैं। वह विदेश में कमाई करके एक मोटी रकम अपने घरों को भेजते हैं। जहां धन की अधिकता होती है वहां आदतें भी बड़ी हैं और नशा खोरी भी उनमें से एक है। परिणाम यह हुआ कि पंजाब लगभग नशे में डूबा हुआ है। इसको लेकर पंजाब सरकार भी चिंन्तित है जब नशा बढ़ता है तो लोगों का नैतिक पतन भी होता है और बुराईयां बढ़ने लगती है। इस बुराई को दूर करने के लिए सरकार को दृढ़ इच्छा शक्ति की आवयकता है।

हमारे देश की वोट राजनीति भी शराब को बढ़ावा देती है चुनाव के दिनों में शराब की पेटियां पकडी जाती हैं और जब्त होती हैं। आए दिन पंजाब और पकिस्तान की सीमा पर समैक और हैरोईन के तस्कर पकड़े जाते हैं। अन्तर्राष्ट्रीय बाजार के भाव के अनुसार इन नशीले पदार्थो का करोड़ों का कारोबार होता है। इसके पीछे विरोधियों के दो उद्‌देश्य होते है मुद्रा कोश में सेंध लगाना और युवाओं का नैतिक पतन कर उनको देश विरोधी कार्यो में लगाना। इसी से काले धन का भी जन्म होता है ।

अगर आपने अपने विरोधी देश को कमजोर करना है तो वहां के युवाओं को नशेड़ी बना दो हमारे पडौसी देश अफगानिस्तान की आय का मुख्य स्त्रोत अफीम की खेती है। यहां से दुनियां भर में ंअफीम का कारोबार होता है। इन दिनों एक नया चलन हर प्रान्त में चल पडा है। शादी हो या जन्म दिन या कोई और खुशी का उत्सव। उस पर धडल्ले से शराब परोसी जाती है और पिलाई जाती है यहां तक कि आधुनिक कहे जाने वाली लड़कियां भी ऐसी पार्टियों में बढ़-चढ़कर भाग लेती हैं। अमीरजादों के जवान बिगड़ैल बच्चे कई बार पुलिस छापों में पकडे जाते हैं। नशे की हालत में अपनी सुध-बुध गंवा अश्लील हरकते करते हुए नज़र आते हैं। इस तरह से मां बाप की कमाई को बरबाद करते हैं। कई बार गांव के अन्दर भी शराब की भट्ठियां पकड़ी जाती हैं। ये सारा नशा युवाओं को तबाह करने का काम करता है।

नशे का वितरण करने के लिए भी अक्सर छोटे बच्चों का इस्तेमाल किया जाता है। कालेजों और विश्वविद्यालयों के अन्दर भी स्मगलर लोग विद्यार्थियों को नशे का आदी बनाते हैं। माँ-बाप अपने बच्चों को शिक्षा ग्रहण करने के लिए बड़े-बड़े शिक्षा केन्द्रों में भेजते हैं। अपनी संतान को अच्छा नागरिक बनाने के लिए अपनी गाढ़ी कमाई खर्च करते हैं मगर वे बुरी संगत मे ंपड़कर गलत आदतों का शिकार हो जाते हैं और समाज को प्रदूषित करने का कारण बनते हैं।

अगर हमने अपने समाज को एक अदार्श समाज बनाना है तो हमें बचपन से ही बच्चों को अपने नियन्त्रण में रखकर अच्छे संस्कार देंने होगे। उनका विद्यार्थी जीवन सादा और मेहनती होना चाहिए फैशन और माडलिंग की तरफ ध्यान न हो। आज का सिनेमा व टी.वी. सीरियल भी नशों को बढावा देते हैं। उनमें धुम्रपान व अन्य नशों का प्रयोग प्रायः दिखाया जाता है जिसे देखकर आधुनिक पीढ़ी भी उसकी नकल कर रही है और आधुनिक होने का दिखावा करती है। कई घरों में खुद बाप अपने मित्रों के साथ बैठकर घर में ही महफिल जमा लेते हैं जिसे देखकर बच्चों के बालमन पर कुप्रभाव पड़ता है और वे भी बड़े होने के बाद वैसा ही करने लगते हैं। अतः यदि हम अपने घर परिवार को सुरक्षित रखना चाहते हैं तो तो घर में बड़े सदस्यों को पहले नशों से दूर रहना होगा।

इसके लिए एक कहानी शिक्षाप्रद है। एक गांव में एक संत आया जिसके बारे में यह माना जाता था कि वह लोगों की गंदी आदतें छुडवा देता है। एक मां जिसके बच्चे को अधिक गुड़ खाने की आदत थी वह संत के पास गई और अपने बच्चे की गुड खाने की आदत बताने लगी और इससे छुटकारा पाने का उपाय पूछा संत ने उत्तर दिया-मां एक सप्ताह के बाद आना। जब मां दोबारा एक सप्ताह के बाद बच्चे को लेकर संत के पास गई तो संत ने बडे प्यार से बच्चे को समझाया। बेटा ज्यादा गुड़ नहीं खाते यह शरीर को कई प्रकार से हानि पहुंचाता है दांत खराब हो जाते हैं। फोड़े फिनसियां निकल आती हैं। यह उपदेश सुनकर बच्चा प्रभावित हुआ और उसने ज्यादा गुड़ न खाने का विश्वास दिलाया। पर मां से न रहा गया, कहने लगी- बाबा अगर यही बात समझानी थी तो सप्ताह पहले जब मैं पहली बार आई थी तो तब ही क्यों न कह दी ? इस पर संत ने उत्तर दिया-तब मैं स्वयं गुड़ खाता था। मुझे इसे छोड़ने में पूरा एक सप्ताह लगा और अब मैं इस योग्य हो सका कि बच्चे को उपदेश दे सकूँ और अपनी कही बात पर अमल करवा सकूँ । माँ संत की बात सुनकर बुहत प्रभावित हुई और एक शिक्षा लेकर लौटी। इसी बात की आज के माँ बाप को अति आवश्यकता है ।

आदत चाहे कोई भी हो बुरी होती है और आसानी से छूटती नहीं है। एक शायर के लफ्जों में- 'धागों के बने रस्से का टूटना मुश्किल, जो पड़ जाए आदत उसका छूटना मुश्किल।' एक कहावत भी है कि कुत्ते की दुम को नौ मास तक एक पाईप में डालकर रखा गया ताकि सीधी हो जाए परंतु जब पाईप से बाहर निकाला गया तो तुरंत टेढ़ी हो गई । यही हाल नशे की लत में फंसे हुए व्यक्तियों का भी है। मेरा अपना भी कई नशेड़ियों से वास्ता पड़ चुका है। रैडक्रास सोसायटी यमुनानगर में नशामुक्ति केन्द्र खोला हुआ था। रैडक्रास सोसायटी का सदस्य होने के नाते सचिव डी.आर. शर्मा ने मुझसे प्रार्थना की कि आप कभी-कभी इस नशा मुक्ति केन्द्र में आकर परामर्श दिया करें और डा. मग्गों की भी डयूटी थी कि नशा करने वालों का दवा दारू से ईलाज करें। रहने, खाने पीने का पूरा प्रबन्ध केन्द्र में ही था। नशा करने वालों के सम्बन्धी उन्हें नशा मुक्ति केन्द्र में भर्ती करा जाते और उनका खर्च जमा करा देते। इस केन्द्र में मैने यह पाया कि नशा करने वाले व्यक्ति एक बार तो केन्द्र के परामर्श से छुटकारा पा लेते हैं परन्तु कुछ दिन के बाद उनके सम्बन्धी उनको फिर ले आते हैं और उनको शिकायत होती कि इन्होंने फिर नशा करना शुरू कर दिया है। यह आदत अधिकतर गरीब व्यक्तियों में देखने को मिली जिनमें दिहाड़ीदार व खेत मजदूर तथा मिलों में काम करने वाले मजदूर ट्रक ड्राईवर आदि शामिल होते हैं। अपने तनाव को दूर करने के लिए ये नशे का सहारा लेते हैं।

नशा करने के लिए ये नशेड़ी कई बार घर के बर्तन तक बेच डालते हैं। जिससे घर में झगड़े बढ़ते है परिवार की शान्ति भंग होती है मगर इन नशाखोरों को अपने परिवार की कोई चिंता नहीं होती। बच्चे पढ़े अथवा न पढ़े। ऐसे लोगों की पत्नियों को परिवार चलाने के लिए घर से बाहर मजदूरी करनी पड़ती है इनको घर की परेशानियों से कुछ लेना देना नहीं होता। ये लोग नशे में धुत्त खुद को भुलाए रहते है। कई बार नशे में धुत्त गली अथवा नाले में पड़े हुए देखे जा सकते हैं।

माँ-बाप का दायित्व बनता है कि इस बुराई से बचाने के लिए बच्चों का ध्यान रखें। उनको उचित शिक्षा दिलाए। स्वयं उनके लिए आदर्श माँ बाप की भूमिका निभाए, कुसंगति से बच्चों को बचाकर रखें। उनको अच्छे संस्कारों से पोषित किया जाए ताकि वे अच्छे बुरे व ठीक गलत में अन्तर कर सकें। अच्छे संस्कारों के आने से वे स्वयं नशों से दूर रहेगे और देश के अच्छे नागरिक प्रमाणित होगे। इससे देश एक समृद्ध और शक्तिशाली देश बनेगा। ★★★

एकाएक फिर हो गया स्वप्न भंग

(टिवाणा और कंवल अपने शब्दों के ज़रिए ज़िंदगी भर सच को बचाने और जिंदगी को खूबसूरत बनाने का स्वप्न देखते रहे, लेकिन अचानक अनंत यात्रा पर निकल गए।)

-अमरीक सिंह

बीते 31 जनवरी और एक फरवरी को पंजाबी साहित्य-संसार की दो ऐसी बड़ी कलमें सदा के लिए थम गईं, जिनकी जड़ें पंजाबी लोकाचार, किसानी और ग्रामीण समाज में बहुत गहरी थीं। जिनकी कृतियों का इंतजार हिंदुस्तान में ही नहीं, बल्कि पाकिस्तान और सुदूर विदेशों में भी शिद्दत के साथ किया जाता था। उन्होंने पंजाबी गल्पधारा को तो नया शिल्प, नया मुहावरा और नए आयाम दिए ही उनका जीवन सफर भी बेहद विलक्षण तथा अलहदा था। एक थे जसवंत सिंह कंवल और दूसरी थीं दलीप कौर टिवाणा। दोनों मालवा के रहने वाले थे, जिसकी मिट्टी ने विश्व स्तर पर पहचान बनाने वाले कई महान पंजाबी कथाकार दिए हैं।

एक फरवरी को जिस्मानी तौर पर सदा के लिए अलविदा कहने वाले जसवंत सिंह कंवल की सांसें पूरे 101 साल चलीं। मोगा जिला के जिस गांव ढूडिके में कंवल का जन्म हुआ, जिस जमीन पर उन्होंने लाखों की तादाद में पढ़ी जाने वाली अपनी लगभग 102 किताबें लिखीं, उसी सरजमीं पर अंतिम सांस ली। 20 साल के उम्र में लिखना शुरू किया औरा लगातार 80 साल उनकी कलम चली। पहला उपन्यास 'सच्च नूं फांसी' (सच को फांसी) 1944 में प्रकाशित हुआ था। इससे पहले उनका एक निबंध-संग्रह 1942 में छपा था। 'सच को फांसी' के बाद वह बतौर उपन्यासकार पहचाने जाने लगे। जसवंत सिंह कंवल को शोहरत का शिखर मिला उनके अब तक के सबसे चर्चित उपन्यास 'लहू दी लो' (लहू की लौ) से। इस उपन्यास का पहला संस्करण मलेशिया से छपवाया गया था। पंजाब का कोई प्रकाशक इसे प्रकाशित करने के तैयार नहीं था, क्योंकि इसमें 1970 में पंजाब में प्रवेश कर चुकी नक्सलवादी लहर की गाथा है। किसी दूसरी भाषा में नक्सलवाद और किसानी पर ऐसी नायाब वृहद कथा रचना शायद नहीं है। इस उपन्यास की तब से अब तक बुशुमार संस्करणों में 5 लाख से ज्यादा प्रतियां छप चुकी हैं, यकीनन पढ़ी इससे भी ज्यादा गई होंगी। पीढ़ी दर पीढ़ी 'लहू दी लौ' पढ़ा जाता रहा और यह सिलसिला बदस्तूर जारी है। इस लिहाज से सबसे ज्यादा पाठक वर्ग रखने वाले लेखकों में जसवंत सिंह कंवल का नाम अग्रिम पंक्ति में है। इस उपन्यास को पाकिस्तानी पंजाब में भी खूब पढ़ा गया। अंग्रेजी और उर्दू में भी इसका अनुवाद हुआ। उनकी 'पाली', 'रात बाकी है', 'पूर्णमासी, और 'तोशाली दी हंसो' (जिसके लिए उन्हें ससाहित्य अकादमी सम्मान मिला) के भी कई-कई संस्करण छपे और पढ़े गए हैं। पाकिस्तान में वह सबसे ज्यादा पढ़े जाने वाले लेखकों में शुमार हैं। वह ग्रामीण जीवन तथा किसानी के 'प्रवक्ता तथा अभिभावक' लेखक थे। उन्हें पंजाब का 'रसूल हमजा तोव' कहा जाता था, जबकि शहीद क्रांतिकारी कवि पाश उन्हें 'अपनी धरती का टॉलस्टॉय' कहते थे। पंजाब की ऐसी कोई लोक-लहर नहीं, जिसमें कंवल न जुड़े हों और रचनात्मक या वैचारिक लेखन न किया हो। अपने गांव के वह दशकों तक निर्विरोध सरपंच बनते रहे और खुद खेतों में काम कराते थे। किसानी उनकी रग-रग और कलम की स्याही में थी।

इस महान लेखक के दैहिक अंत से ठीक एक दिन पहले 31 जनवरी को दलीप कौर टिवाणा को शब्द-संसार ने खो दिया।

85 साल की उम्र में सविद हुई दलीप कौर टिवाणा ने अपनी बेमिसाल कृतियों में पंजाब के ग्रामीण समाज की हाशिए पर रखी गई औरतों को शिद्दत के साथ रचनात्मक स्वर दिए। 50 के करीब

उपन्यासों की इस लेखिका के तीन उपन्यास, 'ऐहो हमारा जीवणा', (यही है हमारा जीवन), 'लंघ गए दरिया' (गुज़र गए दरिया) और 'कथा कहो उर्वशी' कालजयी श्रेणी के हैं। दलीप कौर टिवाणा ने लिखना तब शुरू किया था, जब पंजाब में महिलाएं लेखन क्षेत्र में न के बराबर थीं। अमृता प्रीतम और अजीत कौर दो बड़े नाम थे, लेकिन वे दोनों दिल्ली में रहती थीं और टिवाणा पटियाला में। अमृता जी ने उनका उपन्यास 'ऐहो हमारा जीवणा' पढ़ा तो उसे विश्वस्तरीय रचना बताया। अमृता प्रीतम और दलीप कौर टिवाणा मिलीं तो अमृता जी ने उन्हें अपनी छोटी बहन और बेटी के तौर अपना लिया। यह रिश्ता जीवनपर्यंत निभा।

उनकी आत्मकथा का खण्ड 'नंगे पैरों का सफर' तथा उपन्यासों तथा कहानियों के हिंदी, उर्दू और अंग्रेजी अनुवाद भी जबरदस्त मकबूल हुए। आत्मकथा के आखिरी खण्ड की बाबत टिवाणा जी की हिदायत थी कि इसे उनकी मृत्यु के बाद प्रकाशित करवाया जाए। जसवंत सिंह कंवल की मानिंद इस अप्रतिम लेखिका ने भी अल्प बीमारी के बाद संसार छोड़ा। दोनों का अभी बहुत कुछ अप्रकाशित है। दलीप कौर टिवाणा इस अवधारणा में यकीन रखती थीं कि जो बचाएगा और बचेगा वही सच को रचेगा। जसवंत सिंह कंवल भी इन अवधारणाओं के बहुत करीब थे। दोनों ऐसे वक्त में गए हैं, जब सत्ता की सूली हर शख्स को मौत के तख्त के हवाले कर देने की जुनुनी जिद में है।

-साभारः अमर उजाला

ooo

राष्ट्रीयता वर्तमान युग का कोढ़ है...

....राष्ट्रीयता वर्तमान युग का कोढ़ है, उसी तरह जैसे मध्यकालीन युग का कोढ़ साम्प्रदायिकता थी। नतीजा दोनों का एक है। साम्प्रदायिकता अपने घेरे के अन्दर पूर्ण शान्ति और सुख का राज्य स्थापित कर देना चाहती थी, मगर उस घेरे के बाहर जो संसार था, उसको नोचने-खसोटने में उसे जरा भी मानसिक क्लेश न होता था। राष्ट्रीयता भी अपने परिमित क्षेत्र के अन्दर रामराज्य का आयोजन करती है। उस क्षेत्र के बाहर का संसार उसका शत्रु है। सारा संसार ऐसे ही राष्ट्रों या गिरोहों में बँटा हुआ है, और सभी एक-दूसरे को हिंसात्मक सन्देह की दृष्टि से देखते हैं और जब तक इसका अन्त न होगा, संसार में शान्ति का होना असम्भव है। जागरूक आत्माएँ संसार में अन्तर्राष्ट्रीयता का प्रचार करना चाहती हैं और कर रही हैं, लेकिन राष्ट्रीयता के बन्धन में जकड़ा हुआ संसार उन्हें ड्रीमर या शेखचिल्ली समझकर उनकी उपेक्षा करता है।'

-मुंशी प्रेमचन्द

गुरमीत सिंह अम्बाला .महासचिव, तर्कशील सोसायटी हरियाणा के माता जी श्रीमति बचिन्त कौर का निधन दिनांक 21-2-2020 को 79 वर्ष की आयु में हो गया। तर्कशील सोसायटी हरियाणा उनके निधन पर हार्दिक संवेदना प्रकट करती है।

तर्कशील साथी मुकेश के पिता जी प्रेम चन्द दिनांक 6-2-2020 को 72 वर्ष की आयु में निधन हो गया। तर्कशील सोसायटी हरियाणा उनके निधन पर हार्दिक संवेदना प्रकट करती है।

तर्कशील साथी डॉ. परमानन्द के भाई चन्द्रमणि 42वर्ष का दिनांक 11-2-2020 को हृदय गति रुक जाने के कारण निधन हो गया। तर्कशील सोसायटी हरियाणा उनके निधन पर हार्दिक संवेदना प्रकट करती है।

लेखकों/पाठकों के लिए :

1. रचना की मूल प्रति ही भेजें, फोटो प्रति स्वीकार्य नहीं होगी।
2. अस्वीकृत रचना की वापसी हेतू पांच रूपये का डाक टिकट लगाकर लिफाफा संलग्न करें।
3. रचना बायीं तरफ हाशिया छोड़कर अशुद्धियों रहित साफ-साफ लिखी या टाईप होनी चाहिए
4. रचना सोसायटी के उद्देश्यों के अनुरूप होनी चाहिए।
5. पत्रिका में छपी रचनाओं पर प्रतिक्रिया साधारण पोस्ट कार्ड से भी भेजी जा सकती है।
6. लेख, कहानी, कविता तथा रचनाओं पर प्रतिक्रिया ईमेल tarksheeleditor @gmail.com अथवा वट्सएप नं. 9416036203 भी भेजी जा सकती है।
7. पत्र व्यवहार करते समय लिफाफे पर पूरे पैसों के टिकट लगाकर ही प्रेषित करें। बैरंग पत्र हो जाने की स्थिति में स्वीकार नहीं किया जाएगा।
8. अनुवादित रचना के साथ मूल लेखक का अनापत्ति पत्र भी संलग्न करें।
9. पत्रिका में छपी किसी भी रचना पर लेखक को मानदेय का प्रावधान नहीं है क्योंकि यह पत्रिका पूर्णतः अव्यवसायिक/ अवैतानिक संपादक एवं संपादक मंडल द्वारा अन्धविश्वासों, पाखण्डों, रूढ़ियों के विरूद्ध जागृति लाने हेतु जनहित में प्रकाशित की जाती है।

तर्कशील-पथ के लिए चंदा भेजना हुआ आसान

*तर्क*शील पथ मैगजीन में पेज 2 पर Paytm Code अंकित है जिसे स्कैन करके मैगजीन का सालाना सहयोग या पत्रिका का बकाया चंदा आसानी से भेजा जा सकता है। अगर किसी साथी के पास पेटीएम नहीं है या चलाना नहीं आता, तो किसी भी अन्य जानकार के माध्यम से भिजवाया जा सकता है। एडरैस वट्सअप कर *सकते हैं, ताकि अमूल्य विचारों की पत्रिका आप तक पहुंचती रहे।*

-गुरमीत सिंह

कमेरा तंग होग्या

-रामेश्वर गुप्त

भीख मांगता ना शरमावै, राजा भी कती नंग होग्या
ईसी व्यवस्था चाल पड़ी, आज कमेरा तंग होग्या।

मेरे देश म्हां दाढ़ी तै ज्यादा, मुछां होगी भारी,
एक चौथाई बजट ब्याज म्हं, होग्या जाणा जारी,
कर्ज उठा कै ऐश उड़ा रे, अक्ल राम नै मारी,
गिरवी खाणा पीणा होग्या, गिरवी आज उड़ारी
अलख जगावैं, देशां का भी, मोड्यां आला ढंग होग्या।

करोड़ों टन अनाज देश के, गोदामां म्हं सड़ र्‌या,
मानव संसाधन होया निकम्मा, किते भूख तै लड़ र्‌या।
बिना योजना बाढ़ अर सूखा, काल देश म्हं पड़ र्‌या,
देश का नेता दिल्ली के म्हं, बैठ्या बातां घड़ र्‌या,
भूखा गात कमावण आला, सूख-सूख करंग होग्या।

भ्रष्टाचारी बढ़े हिंद म्हां, आदर्शो का सण हो र्‌या।
हजारों करोड़ रूपैया देखो, चोरों के अर्पण हो र्‌या,
जितना उजला धन देश म्हां, उतना काला धन हो र्‌या,
मुफ्तखोर सैं खुल्ले छूट्टे, झोट्टे जैसा तन हो र्‌या,
ईमानदार तो टैक्स चुकावैं, कफन चोर मलंग होग्या।

कुछ टैक्स चोरां ने लूट लिया, कुछ भ्रष्टाचारी खा गे,
विश्व बैंक और मुद्रा कोष, देश बर्फ म्हां ला गे,
देश दुकान बणा दिया देखो, हम नै चीज बणा गे,
कईयों कफनचोर आड़ै भी, अपणी जुगत भिड़ा गे,
'रामेश्वर' की आंख्यां का ईब, केसू जैसा रंग होग्या।

तर्कशील सोसायटी हरियाणा की अपील

हरियाणा के असंध में शीघ्र ही 'तर्कशील केंद्र' के रूप में एक भवन निर्माण की योजना प्रस्तावित है। जिसके लिए सोसायटी के कार्यकर्ता मेहर सिंह विर्क ने असंध जिला करनाल में एक भूखण्ड प्रदान किया है। अतः सभी साथियों से अपील की जाती है कि इस योजना हेतु बढ़-चढ़ कर आर्थिक सहयोग करें।

-राज्य कार्यकारिणी

स्मृति–शेष

तर्कशील साथी सतीश बहादुर का विदा होना

3 फरवरी 2020 के दिन हमारे एक और तर्कशील साथी तर्कशील सोसायटी हरियाणा, अम्बाला इकाई के प्रधान सतीश बहादुर हमसे विदा हो गये। उन्होंने सवेरे 11 बजे उतर रेलवे, मण्डल चिकित्सालय अम्बाला छावनी में अंतिम सांस ली। साल 2003 में शहीद भगत सिंह शहीदी दिवस के अवसर पर उन्होंने अन्य तर्कशील साथियों के साथ मृतक शरीर मैडीकल खोजों के लिए प्रदान करने की विल भरी थी। उनकी इच्छानुसार उनका मृतक शरीर गवर्नमेंट मैडीकल कालेज, सेक्टर 32 चंडीगढ़ कों चिकित्सीय उपयोग हेतु प्रदान करा दिया गया।

साथी सतीश बहादुर 1990 से तर्कशील सोसायटी हरियाणा, अम्बाला इकाई के प्रधान थे। उनका पूरा जीवन सामाजिक सेवा, कर्मचारी आंदोलन, और तर्कशील आंदोलन की गतिविधियों में सक्रिय रहा। तर्कशील एंव अम्बाला के अन्य प्रगतिशील संगठनों के साथी उनके घर अक्सर मीटिंगें किया करते रहते थे।

उनका जन्म 1 दिसम्बर 1929 को बिठूर उतर प्रदेश में हुआ था। वे अपने पीछे दो लड़कियों एंव दो लड़कों का परिवार छोड़ गए है। उनके एक पुत्र की मृत्यु जुलाई 2019 में हो गई थी एंव उनकी पत्नी की मृत्यु 15 अगस्त 2014 को हो गई थी जिनकी मृत्यु के उपरांत नेत्र प्रदान किए गए थे एंव उनके शव को बहुओं एंव लड़कियों ने कन्धा दिया था।

सतीश बहादुर तर्कशील आंदोलन में जुड़ने से पूर्व रेलवे वर्करज यूनियन में राष्ट्रीय स्तर के महासचिव रहे। उन्होंने रेलवे यूनियन में मुगलसराय में वर्करज का नेतृत्व किया और जार्ज फर्नाडीज के साथ मिल कर 1974 की रेलवे की देशव्यापी हड़ताल में भाग लिया। उस समय जब मुगलसराय में उनकी लोकप्रियता चरम पर थी तो कम्युनिस्ट पार्टी ने उन्हें लोक सभा का चुनाव लड़ने का प्रस्ताव रखा लेकिन कर्मचारियों के हित में काम करने के लक्ष्य पर वे दृढ़ रहे। 1974 की रेलवे हड़ताल में अपनी भागीदारी के कारण नौकरी से निकाल दिए गए, जिन्हें फिर मधु दण्डवते के रेल मंत्री बनने पर उन्हें बहाली मिली लेकिन इस शर्त के साथ कि उन्हें मुगल सराए छोड़ना होगा और मुगलसराय उनके लिए सरकार ने बैन कर दिया। उन्हें ये निर्देश दिए गए कि मुगलसराय में अपने आगमन पर वे पहले जिला प्रशासन से जिले में प्रवेश की अनुमति लेंगे। क्योंकि यहां पर उनकी लोकप्रियता के चलते रेलवे व अन्य विभागों की यूनियनें कहीं लामबन्द न हो जाएं। इन्ही सब कारणों से इस प्रकार 1976 में वे रेलवे की कालका वर्कशाप में मकैनिक पद पर लगाया गया, जहां से 1978 में अम्बाला में स्थान्तरित हुए और 1987 में यहीं से रिटायर हुए लेकिन वे कालका एंव अम्बाला में भी वर्करज़ के लिए लग्न से काम करते रहे।

साथी सतीश बहादुर एक अध्ययनशील व्यक्ति थे। उन्होंने लेनिन, कार्ल मार्क्स, माओ के सहित्य का काफी अध्ययन किया था। डायलेक्टिक्स मैटीरियलिज्म के वे बेहद जानकर थे। महापण्डित राहुल सांस्कृत्यायन का साहित्य उन्हें बेहद प्रेरक लगता था जिनसे वे अत्यंत प्रभावित थे। वोल्गा से गंगा, तुम्हारी क्षय, इस्लाम की रूपरेखा, दिमागी गुलामी उनकी मन पसन्द पुस्तकें थी।

डॉक्टर अब्राहम थामस कव्वुर की बीगोन गोडमैन का जब हिंदी अनुवाद आया तो उसे पढ़ कर वे तर्कशील आंदोलन से जुड़ गए। फिरा, एथिस्ट सेंटर की कांफ्रेंसों में उन्होंने अनेक बार भाग लिया। उन्होंने रूस, नाईजीरिया का दौरा भी किया। नाइजीरिया में वे राइट्स कम्पनी (इंडियन रेलवे) की तरफ से गए थे। रिटायरमेंट के बाद उन्होंने तर्कशील आंदोलन में बेहद सक्रियता से काम किया। वे अपने जीवन मे पी. यू. सी. एल. से भी जुड़े रहे एंव मानव अधिकारों को लेकर जस्टिस वी एन तारकुंडे के साथ काम किया। उनकेसम्पर्क में आने के पश्चात् उन्होंने एम एन राय का साहित्य पढ़ने का अवसर मिला। एम एन राय की विज्ञानपरक समझ ने उन्हें बेहद प्रभावित किया। फलस्वरूप मानव अधिकारों के प्रबल समर्थक बने और पी यू सी एल में भाग लेते रहे।

शोर प्रदूषण को लेकर वे लगातार आर .टी. आई. लगाते रहते थे। अम्बाला में प्रशासन को उन्होंने लगातार ज्ञापन देकर शोर प्रदूषण पर ध्यान आकर्षित किया। अम्बाला में अंधविश्वास विरोधी मुहिम में वे सदा सक्रिय रहे और अंतिम समय तक तर्कशील कार्यो को समर्पित रहे। उनका जीवन पूरी तरह तर्कशील एंव वर्किंग क्लास के लिए समर्पित रहा।उनका जीवन हमारे साथियों के लिये सदैव प्रेरणा का स्रोत बना रहेगा।

–गुरमीत सिंह, महासचिव

तर्कशील सोसायटी हरियाणा (मो.9416036203)

नास्तिक केन्द्र विजयवाड़ा में वर्ल्ड एथिस्ट काफ्रेंस में तर्कशील सोसायटी पंजाब व हरियाणा के साथी

राम नगर उत्तर प्रदेश में तर्कशील सोसायटी पंजाब के साथियों द्वारा तर्कशील कार्यशाला का आयोजन किया गया। पटियाला से हरचन्द भिंडर व रामकुमार ने भाग लिया

If undelivered please return to :

Tarksheel

Tarksheel Bhawan, Tarksheel Chowk,
Sanghera By Pass, BARNALA-148101
Post Box No. 55
Ph. 01679-241466, Cell. 98769 53561
Web : www.tarksheel.org
e-mail : tarkshiloffice@gmail.com

BOOK POST
(Printed Matter)

To ....

....

....

प्रो. बलवंत सिंह, प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी, संपादक मकान न. 1062, आदर्श नगर, पिपली, जिला कुरूक्षेत्र - 136131 (हरियाणा) द्वारा रमणीक प्रिंटरज, नजदीक लक्ष्मी सिनेमा, जिला यमुनानगर - 135001 (हरियाणा) से मुद्रित करके तर्कशील सोसायटी पंजाब व हरियाणा के माध्यम से वितरण हेतु जारी किया।